Vol.23, Issue 1 | Annual Subscription ₹ 480

@NewsRotary
/RotaryNewsIndia

नवंबर 2023

रोटरी समाचार

भारत
www.rotarynewsonline.org

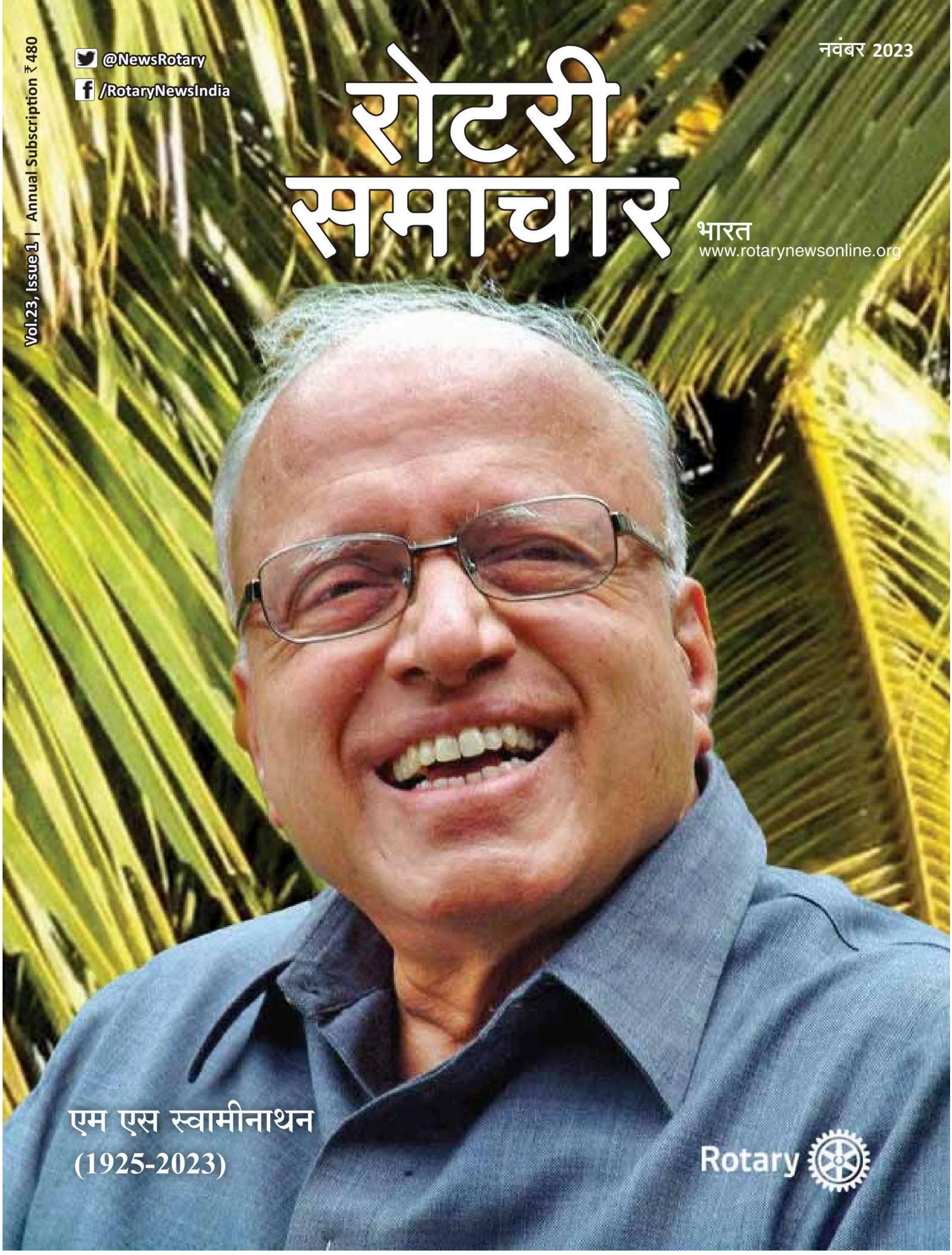

एम एस स्वामीनाथन
(1925-2023)

Rotary

ADVT.
To build and groom young Entrepreneurs
CREATE HOPE in the WORLD
RYLA
Be an Entrepreneur
Certification in Entrepreneurship
Who Can PARTICIPATE IN RYLA?
Rotaractors
Third & Fourth Year UG Students
First & Second Year PG Students
Graduates & Post Graduates
between ages 20 and 28
The Top 2 Performers of Each Batch FLY TO SINGAPORE* (Industrial Visit) Free of Cost.
Rotary
A Comprehensive ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT WORKSHOP in 3500 Minutes
Only 32 Participants Per Batch
A Project by
Rotary Club of Virudhunagar
RI Dist- 3212
On Board 905 Through 29 Editions
Stop searching jobs Start producing jobs
• Formula to Choose the Right Business
• Procuring Investments at Ease
• Productive People Management
• Digital & Organic Marketing Strategies
• Profit Making Techniques
• Showstopper Business Plans
• No. of Participants, Who have Started their Own Enterprises- 155
* Fly to Singapore Winners-58
BUSINESS PLAN | POWER SPEAKERS | CONTINUOUS HANDHOLDING | INVESTORS MEET | LOT MORE SURPRISES
UPCOMING BATCH DATES
Batch 31 : 17th, 18th & 19th NOV, 2023
Batch 32 : 15th, 16th & 17th DEC, 2023
Batch 33 : 19th, 20th & 21st JAN, 2024
INVESTMENT - Rs.2500 Only (Incl. Accommodation / Food / T-Shirt / Certification / E-Book / CREA Programs)
VENUE - Hotel St. Antony's Residency Sipcot Industrial Growth Center Gangaikondan, Tamilnadu
CONTACT FOR REGISTRATION: 94431 66650 / 94433 67248
LEKHA ads/Nov 23/ Rotary/1
PG
IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS
Srinidhi
Building Sustainable Relationship
K.V. Ramaswamy
MEMORIAL TRUST

विषयसूची

12
रोटरी क्लब बेंगलुरु ने पालार नदी का पुनरुद्धार किया

22
स्कॉटलैंड में एक भव्य आयोजन

26
भारत को इस सौम्य, दयालु कृषि वैज्ञानिक की कमी खलेगी

36
रोटरी क्लब मद्रास साउथ ने पूरी की 500 बाल हृदय सर्जरियाँ

38
मैसूर के दो क्लबों ने नेत्रदान पर जोर दिया

42
पानी का अनुमान लगाने वाले रोटरी क्लब बेंगलोर साउथ परेड के रोटेरियन

48
सफलता के लिए अपना रास्ता तैयार करना

52
श्री वनम, चेन्नई का एक हरा-भरा मरुद्वीप

54
पहाड़ों को हरा-भरा करना और जीवन को रोशन करना

56
पेरिस साइक्लिंग कार्यक्रम में रो ई मंडल 3211 की टीम

60
फिनलैंड और आइसलैंड... जहां खुशियां राज करती हैं

68
अपने पालतू जानवर के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करें

72
इस बिग 'ओ' से सावधान रहें

आपके पत्र

दिल को छू लेने वाली कवर स्टोरी

ललिता अनंत शायद गुरुकुल की अवधारणा मखुले आसमान के नीचे और ज़मीन परफ से प्रेरित होकर बच्चों को ज्ञान प्रदान कर रही है। उन्होंने युवा पीढ़ी की मदद करने और गरीब बच्चों को शिक्षित करने के लिए एक बढ़िया वेतन वाली नौकरी छोड़ दी और इस काम में उन्हें उनके पति हातिम का समर्थन प्राप्त है। इस असाधारण स्कूल के उत्कृष्ट कवरेज के लिए धन्यवाद, रशीदा।

वी आर टी दोराईराजा
रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली - मंडल 3000

रोटरी क्लब की एक अनुकरणीय अध्यक्ष ललिता अनंत का खुले आकाश के नीचे चलने वाला स्कूल अनेक असहाय बच्चों को उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद प्रदान करता

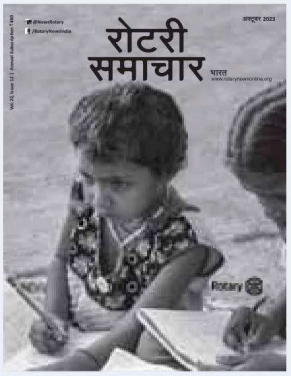

है। अच्छी तनख्वाह वाली नौकरियों में कार्यरत अनेक युवाओं की सफलता की अद्भुत कहानियां हैं। निश्चित रूप से यह एक विश्वविद्यालय से कई अधिक है! ललिता हमारे आदर्श वाक्य *स्वयं से ऊपर सेवा* का प्रतीक है। यह कवरेज उचित एवं विश्वसनीय है।

टॉमी ईपेन, रोटरी क्लब अलेप्पी - मंडल 3211

अपने लेख खुले आसमान के नीचे जहाँ शिक्षा के जरिए जादू होता है में रशीदा भगत समझाती हैं कि कैसे ललिता शर्मा का खुले आकाश के नीचे चलने वाला यह उत्कृष्ट स्कूल वंचित बच्चों की मदद करता है। यह परियोजना दिखाती है कि समर्पित शिक्षक खुले आसमान के नीचे भी अद्भुत काम कर सकते हैं। रोटरी क्लब नीलगिरी बधाई का पात्र हैं।

रो ई अध्यक्ष मेकिनली का संदेश दिलचस्प है।

के एम के मूर्ति
रोटरी क्लब सिकंदराबाद - मंडल 3150

अक्टूबर अंक की कवर फोटो में रोटरी क्लब इंदौर आदर्श की अध्यक्ष द्वारा खुले आकाश के नीचे चलाए जाने वाले एक स्कूल में

एक मॉडल रोटरी परियोजना

₹51 लाख की अटूट प्रतिबद्धता और सेवा परियोजनाओं के साथ रोटरी क्लब नीलगिरी ने नीलगिरी के बेट्टाटी गांव समुदाय पर एक अमिट छाप छोड़ी है। पंचायत यूनियन मिडिल स्कूल इस ग्रामीण समुदाय के युवा मन के लिए उम्मीद की एक किरण बन गया है। बच्चों और समाज के भीतर उन्होंने परिवर्तन की जो ज्वाला प्रज्वलित की है वो इस बात का प्रतीक है कि कैसे रोटरी क्लब स्थायी परिवर्तन ला सकते हैं। प्रधानाध्यापिका राधा कृष्णराज और उनकी टीम उच्च प्रशंसा की पात्र है।

बिपिन सेठी
रोटरी क्लब अहमदगढ़ - मंडल 3090

मेरा एक सपना है शीर्षक वाले सितंबर संपादकीय को पढ़कर में द्रवित हो गया। यह आश्चर्यजनक है कि कैसे एक स्कूल का वातावरण बदलने से बच्चों में महत्वाकांक्षाएं और सपने जागृत करने में मदद मिलती है। रशीदा, मैं आपके लेखन का कायल हूँ, जब भी मैं आपके द्वारा लिखा गया कुछ पढ़ता हूँ तो वो मुझे वास्तव में बहुत दिलचस्प लगता है। वास्तव में, पूरी *रोटरी न्यूज़* को पढ़ना ही शानदार है और मैं अपने गैर-रोटेरियन मित्रों से भी इसकी सिफारिश करता रहता हूँ।

नीना सोंधी
रोटरी क्लब जालंधर साउथ - मंडल 3070

शिक्षा ही कुंजी है

रो ई निदेशक अनिरुद्ध रॉयचौधरी का संदेश आकर्षक और प्रभावशाली है (सितंबर अंक)। जब वह कहते हैं कि 775 मिलियन लोग अर्थात वैश्विक जनसंख्या का 17 प्रतिशत निरक्षर है तो हम रोटरी जैसे संगठनों की मदद की सख्त आवश्यकता को समझ पाते हैं। रोटरी क्लबों को शिक्षा प्रदान करने और एक विकसित समाज का निर्माण करने के लिए एक उचित कार्य योजना तैयार करनी चाहिए।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब बैंगलोर जे पी नगर - मंडल 3191

रो ई अध्यक्ष गॉर्डन मेकिनली ने उचित रूप से कहा है कि कार्यवाही करने वाले लोगों के रूप में रोटेरियनों को युद्ध से बचने के लिए दुनिया में उम्मीद जगानी होगी। उन्होंने करतारपुर साहिब गुरुद्वारे में पाकिस्तान और भारत के रोटेरियनों की एक मुलाकात का उदाहरण दिया।

एस मुनियांडी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट
मंडल 3000

आपके पत्र

पढ़ने वाले एक बच्चे की तस्वीर दिल को छू लेने वाली है और यह कहानी प्रेरणादायक है। संपादक का संदेश यह बात बहुत अच्छी तरह से वर्णित करता है कि कैसे एक व्यक्ति के जुनून और दृढ़ता ने अनेक युवाओं के लिए प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया। रो ई अध्यक्ष गॉर्डन मेकिनली, रो ई निदेशक राजू सुब्रमण्यन और न्यासी अध्यक्ष बैरी रेसिन के संदेश प्रेरणादायक हैं। अन्य सभी लेख पठनीय हैं और रोटेरियनों के अच्छे काम को दर्शाते हैं। कुल मिलाकर, अक्टूबर पत्रिका एक और उत्कृष्ट संकलन है।

फिलिप मुलप्पोने एम टी
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन
मंडल 3211

महिला कैदियों और रोटरी क्लब बिलासपुर द्वारा किए गए कार्यों के बारे में पढ़ना मेरे लिए बहुत गर्व की बात है। इस परियोजना के सफल संचालन के लिए मैं हमीदा सिद्दीकी को बधाई देता हूँ। इस परियोजना ने वास्तव में वहाँ के कैदियों और बच्चों को कितनी खुशी दी होगी। यह निश्चित रूप से एक अनूठी परियोजना है।

जब मैंने महिला कैदियों की दुर्दशा के बारे में पढ़ा तो मेरा दिल बहुत दुखा। इस लेख को लिखने के लिए धन्यवाद।

साजन सुरेश
रोटरी क्लब कलपेट्टा - मंडल 3204

लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल पर एक उत्कृष्ट लेख

लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल पर लेख बहुत शानदार है। एस आर मधु द्वारा लिखे गए प्रत्येक लेख में एक तरह का नयापन देखना आश्चर्यजनक है। यह मात्र लेखन से कहीं अधिक है; उन्होंने अपनी कलम से इस लेख की 'रचना' की है। शेक्सपियर का यह उद्धरण, 'उम्र न तो मुरझाती है और न ही रीति-रिवाज उसकी अनंत विविधता को पुराना करते हैं' उनके लेखन का उपयुक्त वर्णन है।

संपत कुमार
पूर्व संपादक, द हिंदू बिजनेसलाइन

अक्टूबर अंक में हमारे इंटरेक्ट क्लबों के अच्छे कवरेज के लिए मैं हमारे डीजी घनश्याम कांसल और रो ई मंडल 3090 के सभी 2,500 रोटेरियनों की ओर से आभार व्यक्त करता हूँ और इस लेख के लिए किरण जेहरा को धन्यवाद देता हूँ। योग्यता के आधार पर पूरे भारत में रोटरी कार्यक्रमों को संतुलित रूप से कवरेज देने की आपकी नीति की मैं वास्तव में सराहना करता हूँ।

माणिक राज सिंगला
इंटरेक्ट अध्यक्ष, रो ई मंडल 3090

रोटरी क्लब राजगुरुनगर, रो ई मंडल 3131 की आईपीपी जयश्री को ₹20 लाख की लागत से कोविड महामारी के दौरान अपने पतियों को खोने वाली महिलाओं को 170 सिलाई मशीनें और मसाला मिक्सर वितरित करने के लिए बधाई, जैसा कि लेख *विधवाओं और आदिवासी महिलाओं को मिला सहारा* में बताया गया है। क्लब ने एक ऐसी घाटी में आदिवासियों को सौर लैंप भी प्रदान किए जहाँ सड़क और रोशनी नहीं थी।

एन जगथीसन, रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

रोटरी क्लब दिल्ली नॉर्थ का कॉसमॉस इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल एंड बिहेवियरल साइंसेज (सितंबर अंक) में एक डीप ट्रांसक्रैनियल मैग्नेटिक स्टिमुलेटर स्थापित करना एक सराहनीय कदम है। क्लब के अध्यक्ष राज गोपाल रंगवाला प्रशंसा के हकदार हैं।

अशोक जिंदल
रोटरी क्लब नाभा ग्रेटर
मंडल 3090

जब भी मुझे *रोटरी न्यूज़* प्राप्त होती है, मैं उसके अंतिम पृष्ठ से पढ़ना शुरू करता हूँ। ऐसा टीसीए श्रीनिवास राघवन के एलबीडब्ल्यू कॉलम की वजह से करता हूँ। उनके लेख मजाकिया और प्रासंगिक होते हैं और उन्हें पढ़कर बहुत खुशी मिलती हैं। फिर मैं पत्रिका की शुरुआत में जाता हूँ... रशीदा भगत द्वारा बहुत ही प्रासंगिक और दिलचस्प संपादक के संदेश को पढ़ने के लिए।

गुरु दत्त एन के
रोटरी क्लब डोंबिवली ईस्ट
मंडल 3142

सितंबर अंक की कवर स्टोरी *रोटरी क्लब नीलगिरी ने एक आदर्श सरकारी स्कूल का निर्माण किया* बेट्टाटी में जीर्ण-शीर्ण स्कूल को एक नया रूप देने में क्लब द्वारा की गई पहलों के विभिन्न पहलुओं का अच्छा विवरण दिया गया है। लेख को पढ़कर मुझे बहुत आनंद प्राप्त हुआ।

एस एन षणमुगम
रोटरी क्लब पनरुति
मंडल 2981

कवर पर: कृषि वैज्ञानिक एम एस स्वामीनाथन, जिन्होंने भारत में भुखमरी को दूर करने में मदद की, ने 28 सितंबर 2023 को इस दुनिया को अलविदा कह दिया।

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं *rotarynews@rosaonline.org* या *rushbhagat@gmail.com* पर संपादक को मेल कीजिए। *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए। आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा *rushbhagat@gmail.com* या *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर भेजे जाने चाहिए। WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

शांति की राह पर

इस महीने रोटरी ने मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र में शांति स्थापना का समर्थन करने की दिशा में एक कदम उठाया है। नवंबर में रोटरी और मंडल 2420 इस्तांबुल में बहसेहिर विश्वविद्यालय के साथ साझेदारी में हमारे नवीनतम शांति केंद्र के लिए एक हस्ताक्षर समारोह की मेजबानी कर रहे हैं।

यह समारोह बीएयू के नए केंद्र और शांति को बढ़ावा देने हेतु रोटरी के काम को मान्यता देने वाले कार्यक्रमों की एक श्रृंखला का प्रथम कार्यक्रम है। मई में 2024 रोटरी अंतर्राष्ट्रीय समारोह रोटरी के प्रथम शांति केंद्रों की घोषणा - संयोग से 1999 में सिंगापुर में रोटरी सम्मेलन के दौरान - के 25 साल को चिन्हित करेगा। बीएयू में रोटरी शांति निर्माताओं के पहले समूह की भर्ती भी 2024 में शुरू होगी और चयनित उम्मीदवार 2025 की शुरुआत में अपना कार्यक्रम शुरू करेंगे।

अपनी शुरुआत के बाद से इस शांति केंद्र कार्यक्रम ने अधिक शांतिपूर्ण दुनिया बनाने के लिए 140 से अधिक देशों में काम करने वाले 1,700 से अधिक शांति निर्माताओं को तैयार किया है। यह निश्चित रूप से बहुत बड़ी उपलब्धि है लेकिन रोटरी शांति निर्माता एक कागज़ पर मौजूद आंकड़ों से कई अधिक हैं। उनके कार्यों ने दुनिया में *उम्मीद जगाने* में मदद की है और वे ऐसा करते रहेंगे।

उदाहरण के लिए, जेनिफर मोंटगोमरी और गोरेट कोमुरेम्बे - युगांडा में मेकरेरे विश्वविद्यालय में इस कार्यक्रम के अंतर्गत शांति निर्माता - मैजेंटा गर्ल्स इनिशिएटिव के सह-संस्थापक हैं। यह अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन युगांडा की लड़कियों और युवतियों को हानिकारक लिंग मानदंडों, पीढ़ी दर पीढ़ी गरीबी, लिंग-आधारित हिंसा, तस्करी और आघात से बचने में मदद करने हेतु समर्थन और उपकरण प्रदान करती है।

मेकरेरे में अध्ययन करने वाले एक अन्य शांति निर्माता नदज़ी डिवाइन नजमसी ने सकारात्मक शांति के बारे में सबक सीख लिया है और अब वे इसे कैमरून में उसके स्वयं के छात्रों के साथ साझा कर रहा है। कैमरून में चरमपंथ, ऑनलाइन नफरत फैलाने वाले भाषण और हिंसा को देखने के बाद उन्हें रोटरी पॉजिटिव पीस एक्टिवेटर प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिलचस्पी हो गई। इस कार्यक्रम को पूरा करने के बाद से उन्होंने मध्य अफ्रीका देश के याओंडे इंटरनेशनल बिजनेस स्कूल और अन्य संगठनों में छात्रों के लिए शांति पर सबक दिए हैं।

दुनिया को मेकरेरे में इस कार्यक्रम के स्नातकों और हमारे अन्य शांति निर्माताओं जैसे अधिक लोगों की आवश्यकता है। उसके लिए हम सभी अपने स्थानीय शांति निर्माताओं को रोटरी के बारे में अधिक जानकर इस प्रभावशाली फैलोशिप के लिए आवेदन करने हेतु प्रोत्साहित करके शांति निर्माण को आगे बढ़ा सकते हैं। या आप उन शांति अध्येताओं के साथ काम कर सकते हैं जो पहले ही स्नातक हो चुके हैं। उनके पास शायद एक या दो ऐसी पहल हो सकती हैं जिसे आपकी मदद से फायदा मिलेगा।

उत्तरी अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और एशिया में हमारे शांति केंद्र वित्तीय सहायता पर भी निर्भर करते हैं। बीएयू में यह कार्यक्रम ओटो और फ्रान वाल्टर फाउंडेशन से रोटरी फाउंडेशन को मिले 15.5 मिलियन डॉलर के उदार योगदान की वजह से संभव हो पाया।

यह नया रोटरी शांति केंद्र मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र के भीतर शांति निर्माण पर ध्यान केंद्रित करने वाले अध्येताओं को शांति और विकास अध्ययन के लिए एक साल का पेशेवर विकास प्रमाण पत्र प्रदान करेगा।

गॉर्डन मेकिनली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

संपादक
का संदेश

एम एस स्वामीनाथन की कमी खलेगी...

हरित क्रांति के जनक प्रोफेसर एम एस स्वामीनाथन के निधन की खबर पढ़कर मुझे बहुत दुःख हुआ। सिर्फ वही लोग जिन्होंने भूख का दर्द झेला है और भूखे पेट रातें गुजारी हैं या इससे भी बदतर, अपने छोटे बच्चों को भूखे पेट सुलाने की यातना से गुजरे हैं, वास्तव में वही लोग खाद्य सुरक्षा के मायने समझ पाएंगे। वे नहीं जो अपने रेफ्रिजिरेटरों में खाने-पीने की चीजें ठूंस-ठूंस भर देते हैं, और कुछ समय बाद जिनकी समाप्ति तिथि निकल चुकी होती है, उन्हें निकल बाहर फेंकते हैं।

एक पत्रकार के रूप में, इन 45 वर्षों के दौरान, मैं दो भारतीय वैज्ञानिकों की जबरदस्त मुरीद हो गई। उनकी प्रतिभा, ज्ञान और विशेषज्ञता की ही नहीं, बल्कि विनम्रता, सरलता, दयालुता और शिष्टाचार की भी जो उन्होंने हमेशा निभाई। पहले हैं चमड़ा वैज्ञानिक वाई नायुडुम्मा, जिनकी 1985 में सिख चरमपंथियों द्वारा एयर इंडिया की उड़ान पर बमबारी करके बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। वह केवल 63 वर्ष के थे। आंध्र प्रदेश के गुंटूर के पास एक कृषक परिवार में जन्मे, उन्होंने सीएसआईआर के महानिदेशक और जेएनयू, दिल्ली के कुलपति जैसे प्रतिष्ठित पदों पर कार्य किया था।

दिलचस्प बात यह है कि 80 के दशक की शुरुआत में रोटरी क्लब मद्रास की एक बैठक में उन्हें सम्मानित किया गया था और उसकी रिपोर्टिंग मैंने की थी, जिसने हमें नज़दीक ला दिया था! अगली सुबह, मैं उन महान वैज्ञानिक से एक हस्तलिखित नोट पाकर रोमांचित हो उठी जिसमें *इंडियन एक्सप्रेस* में मेरे लेख की ''उल्लेखनीय रूप से सटीक रिपोर्ट'' की प्रशंसा की गई थी! उसके बाद मैं उनसे उनके सीएलआरआई कार्यालय में कई बार मिली - जब पहली बार उनसे मिली, वो हौले से मुस्कुराते हुए बोले: ''क्या आप जानती हैं कि जिस कुर्सी पर आप बैठी हैं वो और इस कार्यालय का फर्श चमड़े का है जिसे हमने बनाया है?''

उसके बाद तो हम दोस्त बन गए और जब कभी चमड़े पर कुछ लिखने की बात होती तो वह मेरे एकमात्र विश्वकोश थे। एक बार, कॉफ़ी के दौरान, जब मैंने ऐसे महान वैज्ञानिक की सादगी और विनम्रता पर टिप्पणी की, तो उन्होंने आँखों में चमक लाते हुए कहा: ''मैं दिल से अभी भी ग्रामीण ही हूँ; आप लड़के को गाँव से बाहर ले जा सकते हैं, लेकिन गाँव को लड़के से बाहर नहीं कर सकते।'' वह पहली बार था जब मैंने यह विचित्र और प्रसिद्ध पंक्ति सुनी थी। उनकी असामयिक और दुखद मृत्यु एक बहुत बड़ा झटका थी।

इसी तरह, एम एस स्वामीनाथन भी उतने ही मेधावी, मिलनसार और मिलनसार वैज्ञानिक थे, कोई अभिमान नहीं, अत्यंत सरल। इस अंक में प्रस्तुत इस अंक में उन्हें दी गई मेरी श्रद्धांजलि में, पत्रकारों के साथ उनके व्यवहार और उनसे परस्पर बातचीत की चर्चा है। बस एक बात और कहूंगी। वह इतना अधिक ख्याल रखते थे कि चेन्नई में एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन द्वारा आयोजित प्रत्येक सेमिनार या सम्मेलन के बाद, वह व्यक्तिगत रूप से हममें से प्रत्येक के पास आते और यह सुनिश्चित किया करते थे कि हम वहां परोसा हुआ सादा पर स्वादिष्ट भोजन करने के बाद ही जाएं। वह मेरी आदत जानते थे, सम्मेलन ख़त्म होते ही मैं तुरंत निकल लेती थी और वो शुरु में ही मुझे आगाह कर देते: 'भोजन किए बिना मत जाना; भोजन हमेशा समय पर करना चाहिए!'

ऐसी शिष्टता और इतना ख्याल, मिलनसारिता, नम्रता, सादगी और विनम्रता बड़ी मुश्किल से मिलती है। मानती हूँ कि इस देश ने ऐसे कई प्रतिभाशाली वैज्ञानिक देखे हैं, जिन्होंने अपनी महानता को सहजता से धारण किया। मैं उनमें से दो को व्यक्तिगत रूप से जानती थी... और उन दोनों की कमी हमेशा खलेगी।

रशीदा भगत

अपने सम्मेलन को जानें

कुछ सदस्यों का कहना है कि रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के यादगार पल वो होते हैं जो रोटरी कन्वेन्शन की भव्यता को देखकर उत्साह से भरे होते हैं। प्रत्येक देश के झंडे को लेकर परेड किए जाते हैं (कैलगरी में 1996 के सम्मेलन में आइस स्केटर्स द्वारा!), हजारों आपके दोस्त आपके चारों ओर मिलते हैं, और हाउस ऑफ फ्रेंडशिप में चलते समय आप एक दर्जन भाषाएं सुन सकते हैं।

उत्तर कैरोलिना के चार्लोट के रोटरी क्लब के सदस्य, तीन बार के सहभागी जेरी कॉटर का कहना है कि हजारों अन्य लोगों के साथ होने के उत्साहजनक एहसास के लिए कन्वेन्शन में आते हैं, जो स्वयं से ऊपर सेवा का पालन करने का प्रयास कर रहे हैं। वह कहते हैं, ''इसका हिस्सा होने का सुख मिलता है, यह बस आपको अच्छा महसूस कराता है।''

अन्य कई लोग ''सम्मेलन पल'' को याद करते हुए कहते हैं - एक लम्हा जब आप रोटरी की व्यापकता और विश्वव्यापी आंदोलन में अपना स्थान महसूस करते हैं - जब आप एक ऐसे वक्ता को सुनते हैं जो इतना प्रेरणादायक होता है कि कहानियां और विचार उनकी वर्षों की रोटरी सेवा के दौरान उनके साथ जुड़ जाते हैं। यही भावना सिंगापुर में 25-29 मई को होने वाले सम्मेलन की थीम को रेखांकित करती है: विश्व के साथ आशा साझा करना।

शायद सिंगापुर में आपके सम्मेलन का यादगार पल तब होगा जब आप पिछले सम्मेलनों में बने दोस्तों के साथ फिर मिलेंगे या, यदि यह आपका पहला सम्मेलन है, जब आपको एहसास होगा कि हजारों लोग सेवा के लिए समान दृढ़ विश्वास के साथ आपके संभावित मित्र हैं। मेलबर्न में 2023 के सम्मेलन में, मिस्र में रोटरी क्लब ऑफ एल तहरीर की अमल अल-सिसी का कहना है कि उन्होंने उन लोगों का अभिवादन किया जिन्हें उन्होंने केवल ईमेल किया था जैसे कि वे भाई-बहन हों। वह कहती हैं, ''यही कामना है: रोटेरी एक परिवार है।''

अधिक जानें और
convention.rotary.org
पर रजिस्टर करें।

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981	सेनगुट्टुवन जी
RID 2982	राघवन एस
RID 3000	आनंदता जोती आर
RID 3011	जीतेन्द्र गुप्ता
RID 3012	प्रियतोष गुप्ता
RID 3020	सुब्बाराव रावुरी
RID 3030	आशा वेणुगोपाल
RID 3040	रितु ग्रोवर
RID 3053	पवन खंडेलवाल
RID 3055	मेहुल राठौड़
RID 3056	निर्मल जैन कुणावत
RID 3060	निहिर दवे
RID 3070	विपन भसीन
RID 3080	अरुण कुमार मोंगिया
RID 3090	घनश्याम कंसल
RID 3100	अशोक कुमार गुप्ता
RID 3110	विवेक गर्ग
RID 3120	सुनील बंसल
RID 3131	मंजू फड़के
RID 3132	स्वाति हर्कल
RID 3141	अरुण भार्गवा
RID 3142	मिलिंद मार्तंड कुलकर्णी
RID 3150	शंकर रेड्डी बुसिरेड्डी
RID 3160	माणिक एस पवार
RID 3170	नासिर एच बोरसाडवाला
RID 3181	केशव एच आर
RID 3182	गीता बी सी
RID 3191	उदयकुमार के भास्करा
RID 3192	श्रीनिवास मूर्ति वी
RID 3201	विजयकुमार टी आर
RID 3203	डॉ सुंदरराजन एस
RID 3204	डॉ सेतु शिव शंकर
RID 3211	डॉ सुमित्रन जी
RID 3212	मुत्तैय्या पिल्लई आर
RID 3231	भरणीधरन पी
RID 3232	रवि रामन
RID 3240	नीलेश कुमार अग्रवाल
RID 3250	बगारिया एस पी
RID 3261	मनजीत सिंह अरोड़ा
RID 3262	जयश्री मोहंती
RID 3291	हीरा लाल यादव

प्रकाशक एवं मुद्रक **पी टी प्रभाकर**, 15 शिवास्वामी स्ट्रीट, मायलापोर, चेन्नई - 600004, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600014 से मुद्रित एवं रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट, दुगड़ टावरस, 3rd फ्लोर, 34 मार्शलस रोड, एगमोर, चेन्नई - 600008 से प्रकाशित। संपादक: **रशीदा भगत**

प्रकाशित सामग्री में अभिव्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के स्वतंत्र विचार हैं, और आवश्यक नहीं कि वे रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट (आरएनटी) के संपादक या रोटरी इंटरनेशनल के ट्रस्टी के विचारों से मेल खाते हों। संपादकीय या विज्ञापन सामग्री से होने वाली किसी भी क्षति के लिए आरएनटी जिम्मेदार नहीं होगा। लेख और रचनाओं का स्वागत है किन्तु उन्हें संपादित किया जा सकता है। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

अनिरुधा रॉयचौधरी **रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट**	RID 3291
राजु सुब्रमण्यन **रो ई निदेशक**	RID 3141
डॉ भरत पांड्या **टीआरएफ ट्रस्टी उपाध्यक्ष**	RID 3141
राजेंद्र के साबू	RID 3080
कल्याण बेनर्जी	RID 3060
शेखर मेहता	RID 3291
अशोक महाजन	RID 3141
पी टी प्रभाकर	RID 3232
डॉ मनोज डी देसाई	RID 3060
सी भास्कर	RID 3000
कमल संघवी	RID 3250
डॉ महेश कोटबागी	RID 3131
ए एस वेंकटेश	RID 3232
गुलाम ए वाहनवती	RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2023-24)

स्वाति हेर्कल **अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3132
हीरा लाल यादव **सचिव, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3291
मुत्तैय्या पिल्लई आर **कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3212
मिलिंद कुलकर्णी **सलाहकार, गवर्नर्स काउंसिल**	RID 3142

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

चलिए टीआरएफ के लिए काम करें

नवंबर माह आने वाला हैं जो रोटरी फाउंडेशन और इसके गहन वैश्विक प्रभाव के लिए समर्पित है और हम उम्मीद से भरे हुए हैं।

न्यासी अध्यक्ष बैरी रेसिन ने नए रोटरी वर्ष में सिर्फ दो महीने बाद अपनी उपस्थिति के साथ हमारी शोभा बढ़ाकर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनकी यात्रा केवल प्रतीकात्मक नहीं थी; इसने हमारे लक्ष्यों और उन लक्ष्यों पर हमारे सर्वोच्च महत्व को रेखांकित किया।

वार्षिक निधि को अक्सर टीआरएफ की जीवनरेखा के रूप में जाना जाता है, यह वो इंजन है जो हमें प्रेरित करता है। यह हमें अपनी पहुंच का विस्तार करने, उभरती हुई आवश्यकताओं के लिए तेजी से प्रतिक्रिया देने और वित्तीय स्थिरता बनाए रखने हेतु सशक्त बनाता है।

जहाँ भारत कुल योगदान के मामले में लगातार दूसरे स्थान पर बना हुआ है वहीं 25 डॉलर से लेकर 1,000 डॉलर की सीमा के भीतर योगदान करने वाले वार्षिक निधि दानकर्ताओं के प्रतिशत को बढ़ाने की गुंजाइश है। यह न केवल हमारी रैंकिंग को बढ़ाएगा बल्कि हमारी परियोजनाओं के लिए अधिक संसाधन भी प्रदान करेगा।

प्रत्येक सदस्य को निरपवाद रूप से फाउंडेशन के मिशन हेतु योगदान देना चाहिए। वर्तमान में हमारे 30 प्रतिशत क्लब योगदान नहीं कर रहे है और हमें इसी पर अपना सामूहिक ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

इस रोटरी वर्ष के केवल ढाई महीनों के भीतर ही अनेक मंडलों ने फाउंडेशन के लिए 100 प्रतिशत क्लब योगदान देने की उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। इससे पता चलता है कि जब हम एक साझा उद्देश्य के लिए साथ मिलकर काम करते हैं तो हम क्या-क्या हासिल कर सकते हैं।

टीआरएफ के न्यासियों ने इस साल 500 मिलियन डॉलर का एक साहसी लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा अक्षय निधि के लिए आवंटित किया गया है जो संस्थान के भविष्य की आधारशिला है। अब समय आ गया है कि हम 2025 तक 2.025 बिलियन डॉलर तक पहुंचने के लक्ष्य के लिए अक्षय निधि में निहित क्षमता का उपयोग करें।

चूंकि हमने भारत में सीएसआर पहल के माध्यम से कॉर्पोरेट साझेदारी के साथ प्रगति की है तो चलिए हम वैश्विक स्तर पर अपने क्षितिज का विस्तार करें और वैश्विक स्तर पर धर्मार्थ न्यासों एवं संस्थानों के साथ साझेदारी करें जैसा कि बिल एंड मेलिंडा फाउंडेशन द्वारा उदाहरण दिया गया है।

चलिए इस महीने हम नई प्रतिबद्धताएं करें। हम दुनिया भर में अनगिनत जीवन और समुदायों पर स्थायी प्रभाव डालने वाले परिवर्तनकर्ता और पथप्रदर्शक हो सकते हैं।

अनिरुद्धा रॉयचौधरी
रो ई निदेशक, 2023-25

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

हमारे प्रभाव की अहमियत

इस माह रोटरी फाउंडेशन का जश्न मनाने के साथ चलिए हम यह स्वीकार करें कि यह दुनिया के प्रमुख मानवीय संगठनों में से एक है। इस तरह के अनेक धर्मार्थ संस्थान और गैर-लाभकारी संगठन इसी तरह के काम में लिप्त हैं और विशिष्ट मुद्दों से जुड़े हुए है। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि रोटरी अपने सात ध्यानाकर्षण क्षेत्रों के माध्यम से इन सभी मुद्दों का समर्थन करती है।

यदि व्यक्ति स्वच्छ जल, बेहतर स्वास्थ्य और एक चिरस्थायी ग्रह चाहते हैं तो वे हमारे संस्थान के मिशन के साथ हैं। जो लोग समुदायों के लिए शांति, पूर्ण साक्षरता और आर्थिक अवसरों वाली एक दुनिया की कल्पना करते हैं, वे रोटरी के लक्ष्यों में भी विश्वास करते हैं। इसके अतिरिक्त जो लोग माताओं और उनके बच्चों को पोषित होते देखना चाहते हैं, वे हमारे काम के साथ एक सामान्य दृष्टिकोण साझा करते हैं।

यह फाउंडेशन पोलियो उन्मूलन जैसे महान कार्य, रोटरी शांति केंद्रों के माध्यम से शांति निर्माताओं को प्रशिक्षित करने और वैश्विक एवं मंडल अनुदानों के माध्यम से लोगों के जीवन में सुधार लाने सहित विभिन्न पहलों में सक्रिय रूप से शामिल है।

रोटरी और रोटेरेक्ट क्लबों के रूप में 48,000 से अधिक क्षेत्रीय कार्यालयों के साथ हमारी वैश्विक पहुंच है। हमारा दृष्टिकोण अलग है क्योंकि इसमें वैश्विक पहुंच, जिम्मेदार निधि प्रबंधन, कुशल परियोजना निष्पादन और स्थायी समाधानों के लिए प्रतिबद्धता की विशेषताएं मौजूद है।

2022-23 रोटरी वर्ष के दौरान इस फाउंडेशन ने 1,098 वैश्विक अनुदान प्रदान किए जो हमारे काम के पैमाने और प्रभाव को प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण के लिए हमारे मंडल ने मलावी में एक वैश्विक अनुदान परियोजना का समर्थन किया जो बुनियादी शिक्षा और साक्षरता पर केंद्रित था। हमने 4,000 विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध 38 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया, दो शौचालय बनाए और साफ पानी के लिए एक पंप स्थापित किया।

मैं यह कभी नहीं भूल सकता जब मैंने और एस्थर ने स्कूल का दौरा किया तो एक छोटे लड़के ने रोटरी पिन को पहचाना और प्राप्त मदद के लिए अपना आभार व्यक्त किया। दिल को छू लेने वाला यह अनुभव यह दर्शाता है कि मलावी के इस छोटे बच्चे की तरह ही दुनिया भर के अनगिनत लोगों पर रोटरी का कितना गहरा प्रभाव है।

हम मलावी के बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने और रोटरी फाउंडेशन के समर्थन से हजारों लोगों के जीवन को बेहतर बनाने हेतु रोटरी को धन्यवाद देते हैं।

बेरी रेसिन

ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

फाउंडेशन ट्रस्टी उपाध्यक्ष का संदेश

शीर्ष पर बने रहने के लिए कड़ी मेहनत करें

संघर्ष, युद्ध और प्राकृतिक एवं अन्य कारणों से जनित आपदाओं के बीच, रोटरी संस्थान आशा के एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में खड़ा रहता है। पीड़ा को कम करने, घावों को भरने और हमारी दुनिया में शांति एवं सद्भावना की आशा लिए हुए। 1917 में एक छोटी सी शुरुआत से, आज टीआरएफ मानवता की भलाई करने वाली एक अग्रणी संस्था में से एक के रूप में खड़ा है। यह सुसम्मानित, सक्रिय, कुशल और पारदर्शी है। चैरिटी नेविगेटर ने रोटरी संस्थान को लगातार 15वें साल एक बार फिर 4 स्टार रेटिंग दी है। यह अच्छी खबर है। और यह मेरे विश्वास का एक प्रतिबिंब है कि टीआरएफ में दान वास्तव में एक 'प्रभावी दान' होता है।

चाहे वह मुंबई में जीवन रक्षक बाल हृदय सर्जरियाँ हो, धुले में आईसीयू और ऑपरेशन थिएटर की स्थापना हो, बेंगलुरु और दिल्ली में ब्लड बैंक का संचालन हो, पूरे भारत में WASH परियोजनाएं हों या अफ्रीका में VTT और चिकित्सा मिशन हों; विभिन्न कार्यक्रमों और परियोजनाओं के माध्यम से टीआरएफ वास्तव में जीवन में सुधार कर रहा है और समुदायों को बदल रहा है।

वैश्विक अनुदान का प्रभाव दुनिया भर में होता है और मंडल अनुदान हमें स्थानीय जरूरतों को पूरा करने की अनुमति देते है। यह महत्वपूर्ण है कि हम तीनों निधियों का समर्थन करें। आज वार्षिक निधि में दिए गए दान हमें कल वैश्विक अनुदान करने में मदद करते है; अक्षय निधि में दिया गया दान टीआरएफ के लिए एक उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करता है। और पोलियो मुक्त दुनिया के लिए पोलियो फंड में दान भी महत्वपूर्ण है।

रोटरी वर्ष 2022-23 में भारतीय मंडलों ने टीआरएफ में 31 मिलियन डॉलर से अधिक का योगदान दिया। यह वास्तव में उल्लेखनीय है। 2022-23 मंडल गवर्नरों और उनकी टीआरएफ टीमों और क्षेत्रीय नेतृत्व टीमों को इस उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए बधाई जिन्होंने भारत को योगदान में दुनिया का नंबर 2 बनने में सक्षम बनाया।

लेकिन जब आप शीर्ष पर होते हो तो हमें वहां बने रहने के लिए कड़ी मेहनत करनी होती है। इसलिए वर्ष 2023-24 की टीमों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने दें ताकि हम बड़ी, बेहतर और साहसिक परियोजनाएं करने का लक्ष्य हासिल कर सकें और टीआरएफ को समर्थन दे सकें।

जैसा कि हम दुनिया में आशा पैदा करते हैं, जैसे-जैसे हमारे सामने नए अवसर खुलते हैं, आइए हम अपने संस्थान का समर्थन करना जारी रखें। एक साथ हम कर सकते हैं और हम दुनिया को बदलेंगे।

भरत पांड्या

टीआरएफ ट्रस्टी उपाध्यक्ष

Rotarians!

Visiting Chennai for business?

Looking for a compact meeting hall?

Use our air-conditioned Board Room with a seating capacity of 16 persons at the office of the Rotary News Trust.

Tariff:

₹2,500 for 2 hours
₹5,000 for 4 hours
₹1,000 for every additional hour

Phone: 044 42145666
e-mail: rotarynews@rosaonline.org

रोटरी संख्या

रोटरी क्लब	:	37,057
रोटरेक्ट क्लब	:	11,265
इंटरेक्ट क्लब	:	14,594
आरसीसी	:	13,141
रोटरी सदस्य	:	1,185,749
रोटरेक्ट सदस्य	:	168,305
इंटरेक्ट सदस्य	:	335,662

16 अक्टूबर, 2023 तक

सदस्यता सारांश

1 अक्टूबर 2023 तक

रो ई मंडल	रोटरी क्लब	रोटेरियनों की संख्या	महिला रोटेरियन (%)	रोटरेक्ट क्लब	रोटरेक्ट सदस्य	इंटरेक्ट क्लब	आरसीसी
2981	138	6,087	6.28	73	493	34	254
2982	85	3,814	6.45	35	841	89	164
3000	137	6,012	12.08	111	1,740	211	215
3011	137	5,069	29.14	85	2,388	132	37
3012	154	3,834	22.82	76	820	94	61
3020	86	5,068	7.60	48	1,042	117	351
3030	101	5,714	15.91	126	1,946	480	384
3040	112	2,471	14.73	53	831	77	213
3053	74	2,980	16.11	36	593	42	131
3055	80	2,932	11.90	67	1,095	70	376
3056	89	3,889	25.76	51	585	103	201
3060	105	5,054	15.93	68	2,221	58	143
3070	125	3,346	16.17	49	542	51	63
3080	109	4,226	12.38	125	1,707	158	122
3090	114	2,512	6.53	49	617	191	166
3100	114	2,280	11.93	15	138	36	151
3110	146	3,888	11.03	17	110	41	106
3120	88	3,653	16.01	42	531	27	55
3131	143	5,788	26.55	145	2,671	231	146
3132	88	3,648	13.68	40	579	111	186
3141	115	6,133	27.21	154	5,220	163	223
3142	107	3,990	21.53	95	2,172	100	92
3150	110	4,372	12.83	155	1,849	104	130
3160	84	2,744	8.86	32	228	95	82
3170	148	6,642	15.40	120	1,789	176	179
3181	87	3,644	10.62	39	469	81	118
3182	87	3,663	10.26	46	238	106	103
3191	92	3,535	18.27	108	2,780	131	35
3192	82	3,553	20.97	121	2,522	104	40
3201	173	6,738	9.80	136	2,183	96	93
3203	95	5,024	7.60	90	1,221	154	39
3204	75	2,474	7.28	24	226	17	13
3211	159	5,125	8.12	11	178	19	134
3212	127	4,718	11.15	93	3,644	155	153
3231	96	3,477	7.33	39	437	39	417
3232	187	6,595	19.77	128	7,298	148	100
3240	105	3,596	16.80	72	1,135	66	227
3250	109	4,173	21.40	68	952	65	191
3261	105	3,504	22.69	23	242	23	45
3262	113	3,843	15.85	76	735	642	285
3291	143	3,866	25.69			69	734
India Total	**4,624**	**173,674**		**2,941**	**57,008**	**4,906**	**6,958**
3220	70	2,007	16.34	98	4,604	84	77
3271	177	3,030	17.95	192	3,309	332	28
3272	161	2,273	14.78	91	1,272	25	49
3281	337	8,272	17.92	281	1,986	144	213
3282	182	3,633	9.74	203	1,374	30	47
3292	154	5,615	18.49	182	5,348	117	134
S Asia Total	**5,705**	**198,504**	**15.49**	**3,988**	**74,901**	**5,638**	**7,506**

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी क्लब बेंगलुरु ने पालार नदी का पुनरुद्धार और गांवों का रूपांतरण किया

रशीदा भगत

लोकसभा द्वारा महिला कोटा बिल के पारित होने पर वैसे ही काफी राजनीतिक खलबली मची हुई है, बावजूद इसके कि सभी राजनीतिक दलों ने इसका स्वागत किया है, पर जब यह लागू होना शुरू होगा, परिसीमन प्रक्रिया के बारे में कई महत्वपूर्ण सवाल उठेंगे, उन राज्यों को दंडित करते हुए जहां कुल प्रजनन दर में गिरावट दर्ज हुई है, यहां कर्नाटक में मेरी मुलाकात एक मजबूत, ओजस्वी और ऊर्जावान महिला पंचायत नेता से हुई। गहरे गुलाबी रंग की साड़ी पहने, बेंगलुरु से लगभग 65 किमी दूर मस्तेनल्ली ग्राम पंचायत की हंसमुख अध्यक्ष रोजम्मा पूर्ण विश्वास

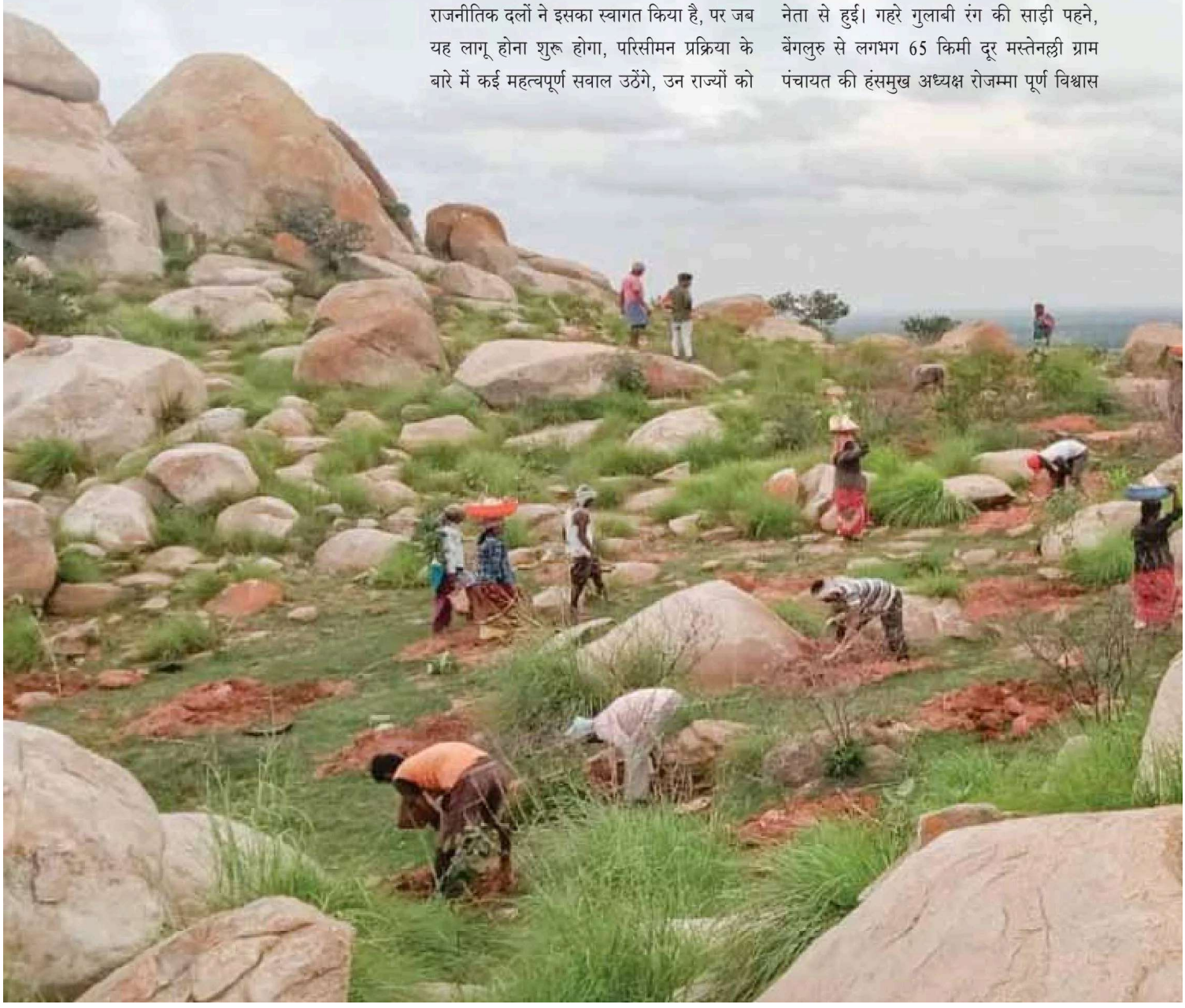

और दृढ़ता के साथ बात करती हैं। अब यहाँ एक ऐसी महिला है जो सौम्य शक्ति रखती है, मैं मन ही मन मुस्कुरा उठती हूँ।

हम लोगों का अच्छा ख़ासा ग्रुप हैं - रोटरी क्लब बैंगलोर के पूर्व अध्यक्ष वी एस रंगा राव, 23 साल से रोटेरियन और एक अग्रणी क्लब के सदस्य रविशंकर डकोजू, जिन्होंने टीआरएफ को ₹100 करोड़ देने का आश्वासन दिया है, वो कुछ मेगा पर्यावरण परियोजनाओं का नेतृत्व करने में व्यस्त हैं, रमाकांत, निदेशक आर्ट ऑफ लिविंग (एओएल) फाउंडेशन और पूर्व उप वन संरक्षक श्रीनिवास राव। लेकिन समूह में अपना अलग स्थान रखती हैं, पर्याप्त अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हुए कन्नड़ में बोलती है और सुनिश्चित करती जाती हैं कि वह जो बोल रही हैं वो मुझे समझ भी आ रहा है या नहीं ।

''मैं रोटरी से बहुत खुश हूँ; रोटरी की वजह से हमें फ़िल्टर्ड पानी मिल रहा है, छोटे और बड़े बच्चे आंगनबाड़ियों से लाभान्वित हो रहे हैं, उन्हें रोटरी क्लब की आंगनवाड़ी विकास परियोजना से बढ़िया पोषण और स्वास्थ्य की देखभाल हो रही है। यहां के ग्रामीण वास्तव में खुश हैं,'' वह मुस्कुराती हैं।

वह बताती हैं कि इस पंचायत के अंतर्गत आने वाले छह गांवों की कुल आबादी 6,000 से अधिक है। ''उनके क्लब ने तीन आंगनवाड़ियों का पुनर्निर्माण किया है, जिनमें से दो पूर्व निर्मित थीं लेकिन क्षतिग्रस्त थीं। कई वर्षों से इन गांवों के प्राथमिक विद्यालय काफी जर्जर हालत में थे...रोटरी ने इन सभी विद्यालयों का पुनर्निर्माण कराया है।''

जैसे जैसे वह उन स्थानों के नाम बताती जाती है जहां स्कूलों को 'स्मार्ट' स्कूलों में परिवर्तित कर दिया गया है, ठीक पालार नदी के उद्गम पर नदी के पारिस्थितिकी तंत्र का सहयोग कर और बहाल करने के लिए चलाये जा रहे इस विशाल परियोजना प्रोजेक्ट के वास्तुकार रंगा राव मुस्कुराते हैं और इस परियोजना का उद्देश्य बताते हैं कि इस क्षेत्र के और यहां के लोगों के ''समग्र विकास की दिशा में परियोजना किस प्रकार कार्य कर रही है।''

इसका विचार कैसे प्रस्फुटित हुआ, वे कहते हैं कि लंबे समय से क्लब बैंगलोर एक टिकाऊ और बड़ी पारिस्थितिक परियोजना करना चाहता था, अंततः हमने पालार नदी पर अपना ध्यान केंद्रित किया, एक अंतरराज्यीय नदी जिसका उद्गम कर्नाटक में है और ये आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु से होकर बहती है। इस परियोजना को 2021-22 में तत्कालीन क्लब अध्यक्ष विंसेंट राज और उनके बोर्ड द्वारा अंतिम रूप दिया गया था।

इस परियोजना पर काम करने वाली मुख्य टीम या पालार एक्शन ग्रुप (रोटरी क्लब बैंगलोर ऑर्चर्ड्स के पूर्व अध्यक्ष और अब रोटरी क्लब बैंगलोर के सदस्य रविशंकर डकोजू, इस में शामिल हैं जो पर्यावरण संरक्षण परियोजनाओं को ले कर

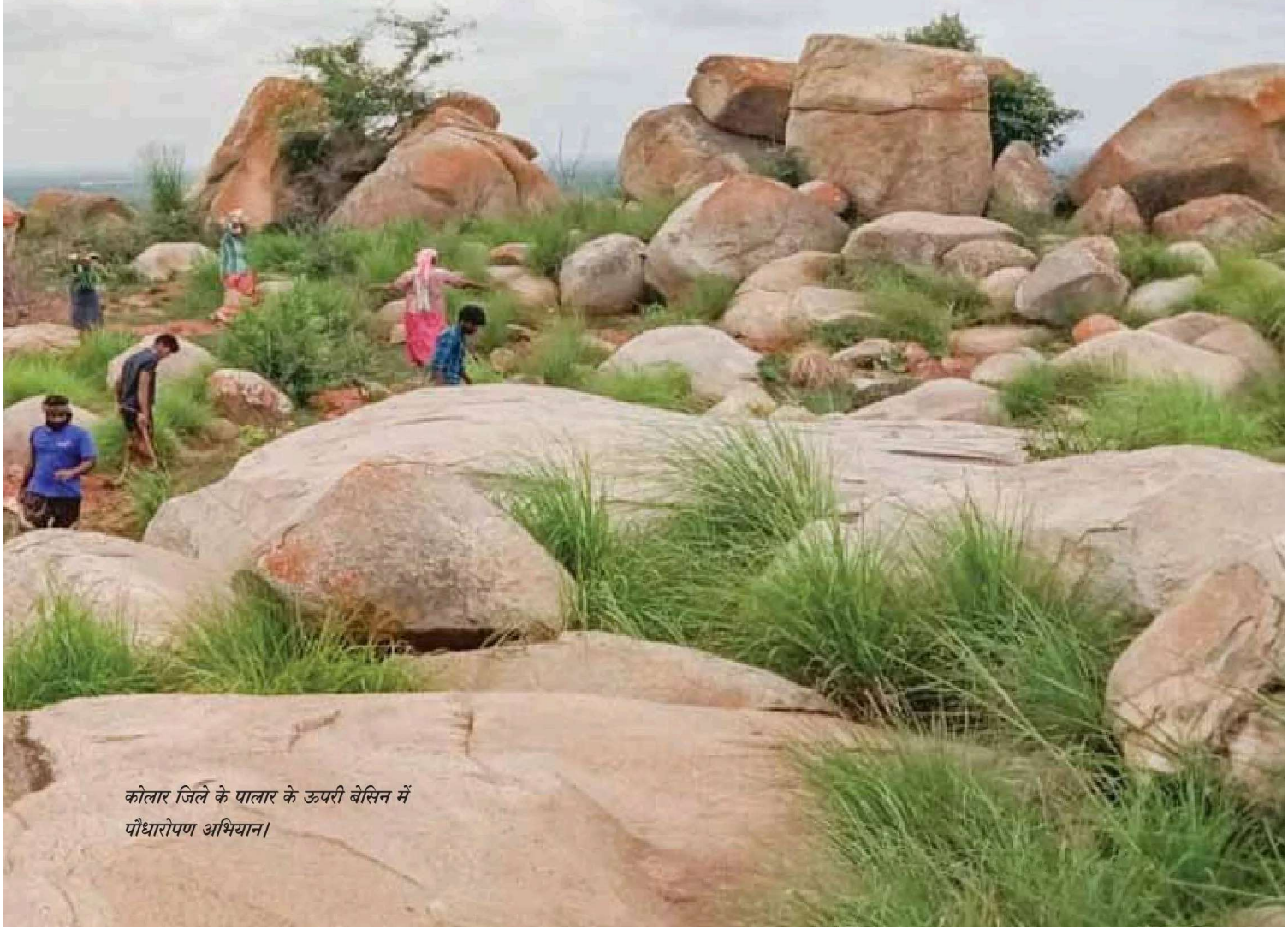

कोलार जिले के पालार के ऊपरी बेसिन में पौधारोपण अभियान।

ग्रामीणों पर जीत... रोटरी अंदाज़ में

पालार नदी बेसिन के सर्वाधिक शुष्क क्षेत्रों में वनीकरण, जल संरक्षण और संवर्धन के आरसीबी के महान उद्देश्य के लिए छह गांवों में स्थानीय लोगों से समर्थन प्राप्त करने में सबसे कठिन चुनौती ये आई ''ग्रामीणों को यह विश्वास दिलाना था कि हम उनके दोस्त हैं। उदाहरण के लिए, जब हमने अपना वनरोपण अभियान शुरू किया, तो हमें लगा कि ग्रामीण थोड़े शंकित थे। ...वे बोले कि एक तो पहले ही बारिश नहीं है, व्यापार नहीं है, इसलिए आय भी नहीं है, लेकिन कम से कम हमारे पास अपने जानवरों को चराने के लिए जमीन तो है। अब पेड़-पौधे लगा रहे हो तो वह भी छिन जाएगी।''

''इसलिए हमें एहसास हुआ कि ये तो वास्तव में समस्या थी, क्योंकि पेड़ों को बड़ा होने में तो 3-5 साल लगेंगे,'' रोटरी क्लब बैंगलोर के सदस्य और इस परियोजना की कोर टीम के सदस्य रविशंकर दकोजू ने बताया।

उधर ग्रामीण अपने मवेशियों के लिए चरागाह भूमि को लेकर भी चिंतित थे (जो बाद में दूसरे स्थान पर उपलब्ध कराई गई थी) इसलिए उन्हें भी साथ लेना पड़ा; ''हम उन्हें अपने साथ बोर्ड पर लाये और उन्हें अपने साथ शामिल करना शुरू कर दिया और वो किया जिसमें हम सबसे अच्छे हैं ... जैसे कि स्कूल, शौचालय ब्लॉक, आंगनवाड़ी, पीएचसी, स्ट्रीट लैंप आदि,'' परियोजना के मुख्य वास्तुकार वीएस रंगा राव कहते हैं।

जैसे ही स्कूलों और आंगनबाड़ियों की मरम्मत या पुनर्निर्माण किया गया, दो स्कूलों का नए सिरे से निर्माण किया गया और एक और शीघ्र ही बनाया जाएगा, सिर्फ ग्रामीण ही नहीं, बल्कि पंचायत और अन्य स्थानीय नेता भी खुश थे और उन्हें भी महसूस हुआ कि पूर्व में आश्वस्त किए गए दीर्घकालिक लाभों के साथ-साथ उन्हें उन्हें अपने बच्चों के लिए बेहतर स्कूल, अच्छी आंगनवाड़ी और छह गांवों में काफी स्वास्थ्य और स्वच्छता का बढ़िया बुनियादी ढांचा मिल रहा था। ''वे अब दीर्घकालिक बहाली के लिए प्रतीक्षा करने के अधिक इच्छुक हैं; वे जानते हैं कि अंततः, वृक्षारोपण और जल स्तर में हो रहे सुधार के प्रयासों के कारण, बारिश आएगी और उनकी पानी सम्बंधित ज़रूरतें पूरी होंगी। हम अच्छी तरह से जानते थे कि ग्रामीणों की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी हुई नहीं कि वहां के निवासियों के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया देना और भविष्य में लगाए जाने वाले हजारों पौधों के विकास में मदद करना आसान हो जाएगा।''

रोटरी ने मारापनल्ली गांव में 500 लीटर क्षमता का एक आरओ वॉटर फिल्टर लगाया है जिससे तीन गांवों को फायदा पहुंचा है। इस इलाके के किसान शहतूत, रागी, आम और सब्जियाँ, मुख्य रूप से टमाटर का उत्पादन करते हैं। स्थानीय लोग दैनिक मजदूरी भी करते हैं।

रोटेरियनों ने कॉर्पोरेट साझेदार भी ढूंढ लिए हैं, और अगले चरण में मुर्गी और मवेशी पालन

मारापनल्ली गांव में रोटरी द्वारा स्थापित आरओ प्लांट के सामने ग्रामीणों के साथ मस्तेनाहल्ली ग्राम पंचायत अध्यक्ष रोजाम्मा (बाएं से दूसरी)।

को बढ़ावा देकर ग्रामीणों की आजीविका बढ़ाने की योजना बना रहे हैं। इन सभी छह गांवोंमें लोगों को हम गाय, भेड़ और मुर्गियां देना चाहते हैं; उन्हें सूखे की स्थिति में बाजरा बोने के लिए प्रशिक्षित कर और उन्हें अपने गांवों में बनाए रखने के लिए युवाओं को कुछ कौशल प्रदान करना चाहते हैं। इस विशाल प्रक्रिया में रेनमैटर फाउंडेशन द्वारा सीएसआर योगदान किया जाएगा। संसाधन तो उपलब्ध हैं लेकिन अभी हम पता लगा रहे हैं कि प्रत्येक गाँव को क्या और कितना देना है ताकि समान रूप से वितरण हो और इन गाँवों की सामाजिक गतिशीलता परेशान न हो। हम सावधानी से कदम रख रहे हैं और विवरण की जिम्मेदारी रोजम्मा और अन्य ग्राम प्रधानों पर छोड़ दी है,'' रंगा राव कहते हैं।

वह कहते हैं कि निदेशक, सामुदायिक सेवाएं, 2021-22, मंजूनाथ अनीकर ने छह गांवों में सभी बुनियादी ढांचे के काम के त्वरित और कुशल निष्पादन में विशेष भूमिका निभाई है। ''मैजिक मंजू, जैसा कि वह लोकप्रिय रूप से जाने जाते हैं, ने परियोजना के सभी पहलुओं पर सावधानीपूर्वक काम किया: सरकारी अनुमति प्राप्त करना, अनुबंधों को अंतिम रूप देना और सभी सिविल कार्य समय पर पूरा करना।''

काफी संजीदा हैं) काफी समय से इस परियोजना पर शोध और विचार-मंथन कर रहे थे, एओएल को एक भागीदार के रूप में चिह्नित किया गया। रंगा राव कहते हैं, एओएल झीलों के पुनरुद्धार और उन्हें पुनर्जीवित करने में कार्यरत है, ''और हम कोलार जिले में पालार के ऊपरी बेसिन में वृहद स्तर पर वनरोपण अभियान की योजना बना रहे थे।''

उन्होंने बताया कि इस परियोजना का उद्देश्य वर्षा जल का संचयन कर मिट्टी की नमी बढ़ाने, पथरीली चट्टानों के नीचे ''वर्षा जल संरक्षण की प्राकृतिक प्रक्रियाओं को पुनर्जीवित करके एक सूखी चट्टानी बंजर भूमि को हरे-भरे वातावरण में परिवर्तित करना है। यह प्रक्रिया एक भूभौतिकीय सर्वेक्षण, ड्रोन सर्वेक्षण, उपग्रह चित्रों के अध्ययन, घटते झरनों के आसपास की उप सतही स्थितियों का आकलन करते हुए और 150 एकड़ क्षेत्र में

30,000 पौधे लगाने और उनके रखरखाव के लिए कार्य योजना तैयार करने के माध्यम से की जायेगी।''

रोटेरियनों, पंचायत अध्यक्ष रोज़म्मा, एओएल के प्रतिनिधियों आदि के साथ, मैं ऊपर उस पहाड़ी की ओर देखती हूँ जहां शक्तिशाली पालार नदी का उद्गम माना जाता है। मैं जानती हूं कि यह एक तुलना अनुचित है, लेकिन गर्जना करती गंगा नदी के उद्गम को देखने के लिए गौमुख और गंगोत्री के दर्शन करने के बाद और गढ़वाल हिमालय में भागीरथी और मंदाकिनी नदियों के तेज रफ़्तार से बहते पानी का जादुई आनंद लेने के बाद, मुझे यह देखकर बड़ी निराशा हुई, सूखा, चट्टानी क्षेत्र जहां थोड़ा बहुत पानी नज़र आ रहा है और वहां मुझे एक 'कल्याणी' (मंदिर से सटा एक छोटा तालाब) दिखाया गया जिसे जाली से ढका गया है और वहां ज्यादा पानी भी नहीं दिखता।

मेरे चेहरे पर उभर आये निराशा और असमंजस के भाव को पढ़ते हुए, एओएल के रिवर रिजुवेनेशन

कभी सबसे समृद्ध रही ये नदी सबसे बड़ी नदियों में से एक थी, लेकिन समय के साथ, यह छोटी होती गई और अंत में विलुप्त हो गई। वास्तव में, हम इंसानों ने ही इसको ख़त्म कर दिया, अपने अव्यवस्थित और बेतरतीब 'विकास' की वजह से, नालों को और जिन मार्गों से नदियाँ बहती हैं, उन को अवरुद्ध कर हम सब कुछ नष्ट कर देते हैं।

रविशंकर ड्कोजू
रोटरी क्लब बेंगलोर के सदस्य

के निदेशक, रमाकांत ने बताया ''30 वर्ष पूर्व एक समय में पालार बहुत बड़ी नदी हुआ करती थी, और यह स्वतंत्र रूप से बहती थी... कुछ-कुछ वैसा ही जैसा आप आज वेल्लोर में देखते हैं। लेकिन निश्चित रूप से, इस पहाड़ी की चोटी पर से तो यह केवल एक छोटी सी धारा के रूप में ही निकलती थी और कई धाराएँ - उनमें से कई जमीन के नीचे बहती हैं - एक साथ मिल कर नदी का रूप ले लेती हैं।'' पानी को रोकने के लिए पहाड़ी के नीचे स्थित कोलारम्मा मंदिर के पास कल्याणी का निर्माण किया गया था जहां से एक झरने के रूप में शुरू हो कर यह नदी कल्याणी से आगे बहती रहती है।

ने विस्तार से बताया कि मूल रूप से ये एक वनरोपण और जल संरक्षण और पुनरुद्धार की विशाल परियोजना है और करीब 150-175 एकड़ के विशाल क्षेत्र में फ़ैली हुई है। ''जब हम आपस में एक विशाल और परिवर्तनकारी पर्यावरण संरक्षण

__बाएं से:__ रोटरी क्लब बैंगलोर के सदस्य रविशंकर ड्कोजू; आर्ट ऑफ लिविंग से श्रीनिवास रेड्डी; पंचायत अध्यक्ष रोज़म्मा; रमाकांत, निदेशक, नदी पुनर्जीवन, एओएल (बाएं से पांचवें); वीएस रंगा राव, पूर्व अध्यक्ष, रोटरी क्लब बैंगलोर (बाएं से छठे) और पूर्व उप वन संरक्षक श्रीनिवास राव (दाएं से दूसरे), कल्याणी के सामने जहां से पालार नदी शुरू होती है।

Rasheeda Bhagat

पालार नदी के बारे में

पालार एक बरसाती नदी है और तीन राज्यों - कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु से होकर निकलती है और इसकी लंबाई 348 किमी है। पूर्वी कर्नाटक में समुद्र तल से 800 मीटर की ऊंचाई पर एक छोटे से झरने में शुरू होकर, पालार कोलार और बंगारुपेट तालुकों से होकर बहती है, अंततः विशाल बेथमंगल टैंक का निर्माण करती है, जो कोलार गोल्ड फील्ड क्षेत्र के लिए पानी के प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करता है। यह तमिलनाडु में बंगाल की खाड़ी में जा कर समाप्त होती है।

पालार बेसिन का कुल क्षेत्रफल 17,633.19 वर्ग किमी है - जिसमें से 3,123 वर्ग किमी कर्नाटक में, 4,267 वर्ग किमी आंध्र प्रदेश में और 10,273.19 वर्ग किमी तमिलनाडु में है।

परियोजना करने के बारे में विचार-मंथन कर रहे थे, तो हमने सोचा कि आज रोटरी 117 साल की हो चली है, हमें भी कुछ बड़ा सोचना चाहिए। और 89 साल पुराना, रोटरी क्लब बैंगलोर भारत का चौथा सबसे बड़ा क्लब है, जिसमें 335 से अधिक सदस्य हैं। हम विशाल और दीर्घकालिक परियोजनाएं शुरू करना चाहते हैं। कभी सबसे समृद्ध रही ये नदी सबसे बड़ी नदियों में से एक थी, लेकिन समय के साथ, यह छोटी होती गई और अंत में विलुप्त हो गई। वास्तव में, हम इंसानों ने ही इसको ख़त्म कर दिया, अपने अव्यवस्थित और बेतरतीब 'विकास' की वजह से, नालों को और जिन मार्गों से नदियाँ बहती हैं, उन को अवरुद्ध कर हम सब कुछ नष्ट कर देते हैं।''

वह क्रोध में कहते हैं, ''हम पेड़ों की कटाई, वनों की कटाई और कई विभिन्न तरीकों से प्रकृति

का दुरुपयोग करते हैं। जैसा कि आपको बताया था, यही नदी वेल्होर तक जाती है जहां यह फल-फूल रही है लेकिन यहां यह मर चुकी है, जिस कारण से यह क्षेत्र सूखा और बंजर हो गया है और यहां के गांव स्वच्छ, पीने योग्य पानी के लिए भी जूझ रहे हैं।''

वनरोपण अभियान पहले ही शुरू हो चुका है और पिछले दो वर्षों में रोटेरियनों ने ''175 एकड़ में लगभग 30,000 पौधे लगाए हैं,जिनका चयन वन विभाग, पंचायत और ग्रामीणों द्वारा किया गया था। और हमने इस कल्याणी का निर्माण भी किया है,'' रंगा राव कहते हैं।

इस क्षेत्र की मुख्य समस्या है, पानी की कमी, लेकिन अगर एओएल-रोटरी की साझेदारी कामयाब रही और ये धीरे-धीरे अपने ऊंचे लक्ष्य और उद्देश्य प्राप्त कर लेती है, तो पानी की कमी की कहानी

इन सभी छह गांवोंमें लोगों को हम गाय, भेड़ और मुर्गियां देना चाहते हैं; उन्हें सूखे की स्थिति में बाजरा बोने के लिए प्रशिक्षित कर और उन्हें अपने गांवों में बनाए रखने के लिए युवाओं को कुछ कौशल प्रदान करना चाहते हैं।

वी एस रंगा राव
पूर्व अध्यक्ष, RCB

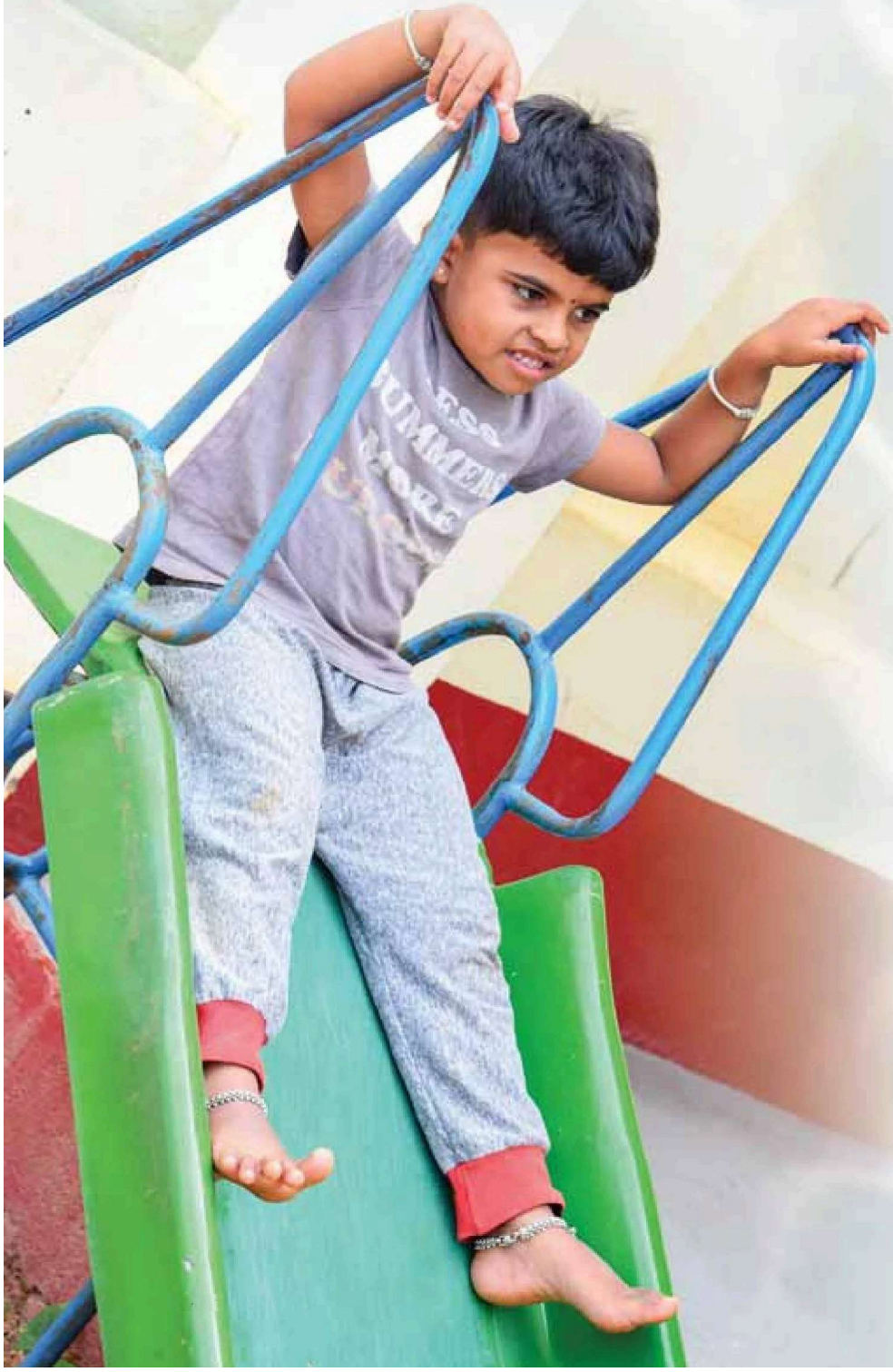

बदल सकती है। और यह सचमुच बदल रही है। मैं रोजम्मा से पूछती हूं कि क्या इस क्षेत्र के लोग इस पहले से खुश हैं। वह कहती हैं, ''हां, अब वे थोड़ा बहुत खुश तो हैं...धीरे-धीरे उन्हें फायदा पहुँच रहा है।''

लेकिन हाँ, अंततः, परिणाम ही महत्त्व रखते हैं। एओएल के श्रीनिवास रेड्डी सफलता का एक किस्सा सुनाते हैं: ''हमारे प्रवेश करने से पूर्व, इस क्षेत्र में कैवारा (मंदिर) गांव में, स्थानीय लोगों के लिए रोज़ाना पानी के 50 टैंकर आ रहे थे। बरसात के मौसम के बाद, हमने भूजल रिचार्ज करने के लिए जो कार्य किया, उसके बाद सभी बोरवेल भर गए और वर्तमान में पानी के टैंकरों की आवश्यकता नहीं पड़ती है।''

एओएल द्वारा किए गए कार्य पर, सेवानिवृत्त वन अधिकारी राव बताते हैं कि चूंकि यह एक पहाड़ी क्षेत्र है और बारिश का पानी पर्याप्त रिसाव के बिना तेजी से बह जाता है, ''हमने गली चेक भी बनाये हैं, स्थानीय उपलब्ध बोल्डर का प्रयोग करते हुए जो चेक-डैम जैसी संरचनाएं हैं और ये पानी का प्रवाह को कम या अवरुद्ध करते हैं। यह कार्य मिट्टी और नमी के संरक्षण से सम्बंधित है ताकि पानी पहाड़ी की चोटी से तेजी से नीचे व्यर्थ न बहे बल्कि मिट्टी में समा जाए। इससे काफी देर तक नमी बनी रहती है।''

लेकिन जब आप भारत के उन गांवों के साथ काम कर रहे हैं जो वास्तव में अपनी आर्थिक रूपसे समृद्ध नहीं हैं, तो इतने बड़े पैमाने पर एक

एक गाँव में रोटरी आंगनवाड़ी में अपने देखभालकर्ता के साथ बच्चे।

परियोजना करते समय बहुत सारी चुनौतियाँ का सामना करना पड़ता है और जहाँ इसका लाभ केवल कुछ वर्षों के बाद ही नज़र आएगा । उदाहरण के तौर पर, इस क्षेत्र की सूखी बंजर भूमि - कुल 400 एकड़ - को *गोमाला* भूमि के रूप में वर्गीकृत किया गया है। राव, जो अब एओएल सलाहकार हैं, मेरी हैरानी का जवाब देते हैं और कहते हैं कि पहले जब गांवों का सर्वेक्षण के दौरान मवेशियों का सर्वेक्षण किया जाता था, तो भूमि का यह विशेष टुकड़ा चरागाह के लिए आरक्षित रखा जाता था। ''यह निर्णय तत्कालीन मवेशियों की आबादी पर आधारित हुआ करता था ; प्रत्येक गाँव, या 2-3 गाँवों के समूह का अपना *गोमाला* क्षेत्र होता है जहाँ मवेशी चर सकते हैं। कृषि वर्गीकरण में, इसे सी एंड डी भूमि या शुष्क भूमि के रूप में जाना जाता है जो कृषि के अनुकूल नहीं है।''

लेकिन शाश्वत कुछ भी नहीं है और यहां भी चीजें बदल गई है। मवेशियों की तादाद कम हो गई है और ''लोगों ने अब घर से ही चारा देना शुरू कर दिया है... इसलिए उनमें से अधिकांश लोग अपने मवेशियों को पहाड़ियों पर नहीं ले जाते... केवल कुछ भेड़ और बकरियां ही चरने के लिए पहाड़ी की चोटी पर जाती हैं। इसलिए, निर्णय किया कि जमीन के इस विशेष भाग का कायाकल्प हम दो वजह से करेंगे। एक तो यह पालार नदी का उद्गम स्थल है और हमें नीचे तीन जीवित धाराएँ मिलीं, इसलिए कुछ क्षेत्र नमी और

समग्र विकास

आरसीबी द्वारा नियोजित समग्र विकास और पालार बेसिन के छह गांवों में किए जा रहे कार्यों में बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएं, पूर्ण टीकाकरण, बच्चों, किशोरों, लड़कियों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं पर विशेष ध्यान देने के साथ सभी के लिए बेहतर पोषण स्थिति आईटी-सक्षम कक्षाओं, ई-पुस्तकालयों और वेब-आधारित शिक्षण के साथ स्कूलों का स्मार्ट स्कूलों में परिवर्तन सम्मिलित है।

प्रौढ़ शिक्षा, ग्रामीण पुस्तकालय, खेल और लोक कला उत्सव, जैविक खेती, बीज बैंक, पशुधन विकास, डेयरी विकास और प्रसंस्करण, सामाजिक वानिकी, वर्षा जल संचयन और घरेलू नल के साथ पाइप जल से आपूर्ति की योजना भी बनाई जा रही है। भविष्य में ग्रामीण बाज़ार और स्वास्थ्य बीमा भी प्रस्तावित हैं।

कोलारम्मा मंदिर में कल्याणी।

संरक्षण के द्वारा, हम पानी के प्रवाह को धीमा करना चाहते थे, हमने जोहड़ की जाँच करके जमीन के तल पर एक कल्याणी का निर्माण कर प्रवाह नियंत्रित किया।''

रमाकांत ने बताया कि एओएल कुछ साल पहले ही शामिल हुआ था, ''चूंकि नदी पुनर्भरण हमारी प्रमुख गतिविधियों में से एक है और हम रिचार्जिंग इंजेक्शन कुओं के माध्यम से पानी प्रवाहित कर रहे हैं (चित्र 17 देखें); हमने इनमें से लगभग 600 लगा भी दिए हैं और कार्य चल रहा है; हम इन्हें अलग-अलग गांवों में नदी की धारा के साथ या नदी के मार्ग के किनारे रख रहे हैं। जोहड़, नाली की जांच और इन पुनर्भरण कुओं के लिए धन्यवाद, जिन्हें गली चेक के तहत बनाया गया है, अब पानी का रिसाव अधिक होता है और भूजल स्तर धीरे-धीरे ऊपर चला गया है।''

वह इन इंजेक्शन कुओं को लगाने की तकनीकी वजह बताते हैं; ''हमने क्षेत्र में भूविज्ञान परीक्षण किया और ये पाया कि यदि आप कठोर चट्टान

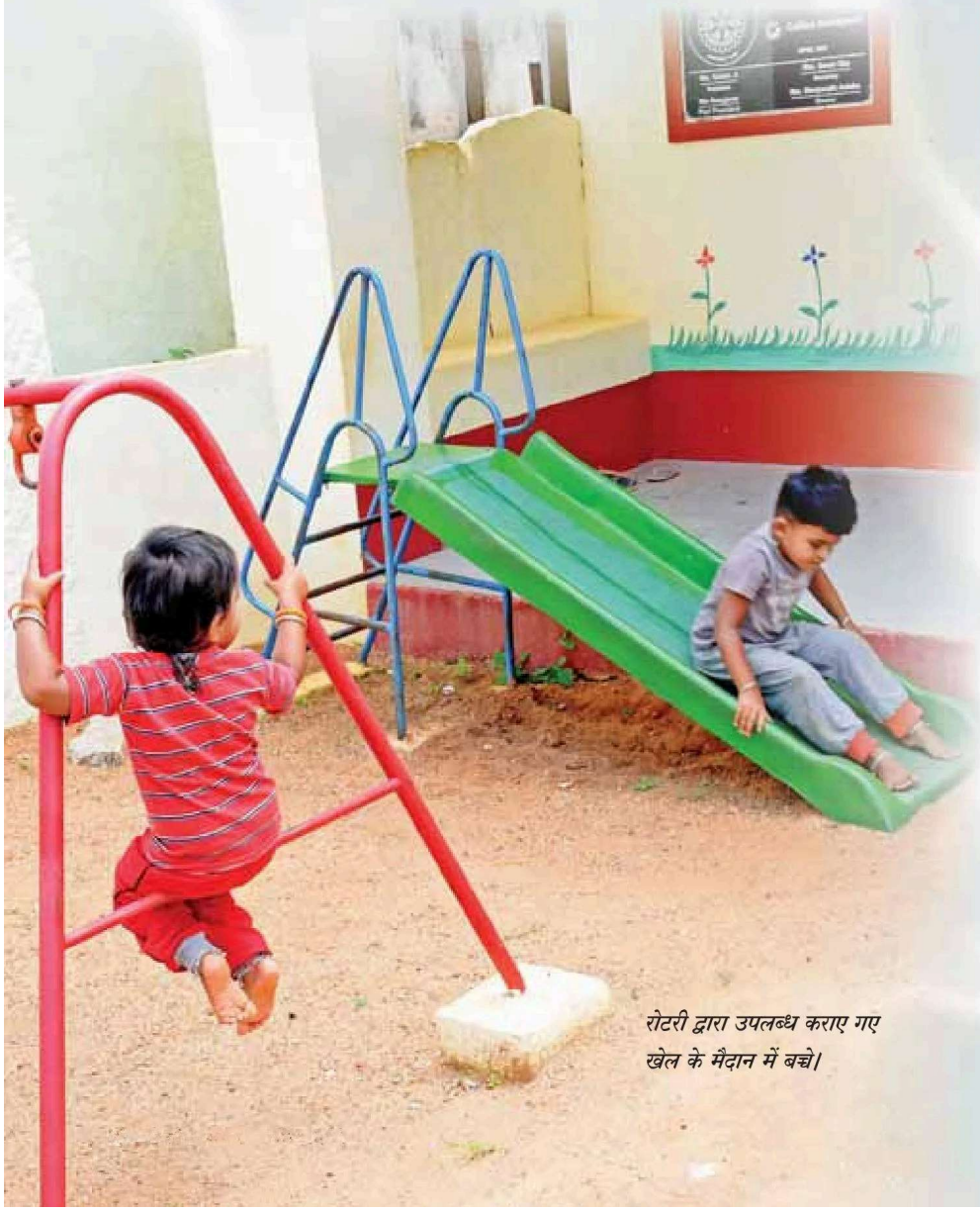

रोटरी द्वारा उपलब्ध कराए गए खेल के मैदान में बच्चे।

के नीचे 15 से 20 फीट तक गहराई तक जा सकते हैं, तो पानी उस कुएं से होकर जाएगा है और वहां एक गीला क्षेत्र बनाता है। पहले, इस क्षेत्र में आपको बोरवेल के लिए पानी लेने के लिए लगभग 1,000 फीट नीचे जाना पड़ता था; 4-5 वर्षों में जल स्तर अब 500 फीट तक आ गया है।''

इस मेगा परियोजना के वित्तपोषण पर, रंगा राव कहते हैं कि जमीनी तैयारी, वनीकरण, रखरखाव, जल पुनर्भरण समाधान और कल्याणी की मरम्मत पर ₹95 लाख खर्च हुए हैं । प्राथमिक विद्यालयों, आंगनबाड़ियों, स्वास्थ्य देखभाल केंद्रों, सार्वजनिक शौचालयों और अन्य सुविधाओं के पुनरुद्धार पर ₹1.1 करोड़ खर्च किए गए। अगले चरण में आजीविका के साधन जैसे भेड़, मवेशी, मुर्गी, सामाजिक वानिकी और स्वरोजगार योजनाओं के लिए ₹1.8 करोड़ पृथक से रखे गए हैं। सीएसआर योगदान ₹2.5 करोड़ है, वहीं क्लब के सदस्यों का योगदान लगभग ₹35 लाख है। कोलिन्स एयरोस्पेस ने सीएसआर फंड के रूप में ₹110 लाख दिए हैं। क्लब सदस्य मोनिका माटीयस ने सीएसआर सोर्सिंग पर कड़ी मेहनत की, दीपक नाकरा और दिलीप पिल्लई ने उदारतापूर्वक योगदान दिया।

इस परियोजना में डकोजू का योगदान उनके टीआरएफ फंड से आता है और ये राशि तीन वर्षों के लिए है प्रत्येक वर्ष $15,000 (₹12.4 लाख)।

यहां पेड़ किस तरह के लगाए जा रहे हैं, इस पर डकोजू कहते हैं, ''हमने यहां मुख्य रूप से देशी पेड़ लगाए गए हैं, क्योंकि शोध से पता चला है कि देशी प्रजातियों को रोपने से जल विज्ञान चक्र को फिर से जीवंत करने और नदी को पानी देने वाले प्राकृतिक झरनों को सक्रिय करने में मदद मिलती है। और निश्चित रूप से, हम सभी जानते हैं कि ऐसे पेड़ पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अच्छे हैं और सभी प्रकार के सूक्ष्म जीवों, कीड़ों, पक्षियों, सरीसृपों आदि को आकर्षित करेंगे। फल देने के अलावा, वे तितलियों और मधुमक्खियों को भी आकर्षित करेंगे।''

रोटरी की वजह से हमें फ़िल्टर्ड पानी मिल रहा है, छोटे और बड़े बच्चे आंगनबाड़ियों से लाभान्वित हो रहे हैं, आंगनवाड़ी विकास परियोजना से बढ़िया पोषण और स्वास्थ्य की देखभाल हो रही है। यहां के ग्रामीण वास्तव में खुश हैं।

रोजाम्मा
पंचायत अध्यक्ष

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

स्कॉटलैंड में एक भव्य आयोजन

टीम रोटरी न्यूज़

अभी हाल ही में, रो ई अध्यक्ष गॉर्डन मेकिनली और उनकी पत्नी हीथर ने अपने गृहनगर में रॉयल एडिनबर्ग मिलियन डॉलर वीकेंड की मेजबानी की थी, संयोग से उसी समय, एडिनबर्ग इंटरनेशनल फेस्टिवल 'द फ्रिंज' भी चल रहा था।

भारत से चार एकेएस सदस्यों - रो ई मंडल 3191 से पीडीजी के पी नागेश और उमा, पीडीजी दीपक गुप्ता और उनकी पत्नी रीना (रो ई मंडल 3012) ने इस ''अभूतपूर्व अनुभव'' में भाग लिया। रोटरी क्लब बैंगलोर (रो ई मंडल 3191) के रविशंकर डकोजू और उनकी पत्नी पाओला भी इस समारोह में शरीक होने के लिए तैयार थे, लेकिन परिवार में अचानक हुई एक त्रासदी के कारण वहां नहीं पहुँच सके।

17 अगस्त की शाम को, होटल वाल्डोर्फ एस्टोरिया कैलेडोनियन ने रोटरी दुनिया भर से पधारे एकेएस सदस्यों के स्वागत और रात्रिभोज के लिए पूरी तैयारी कर रखी थे । पारंपरिक स्कॉटिश बैगपाइप की मनमोहक धुनों के साथ शाम की शुरुआत हुई, जिसने एक यादगार माहौल तैयार हो गया। रो ई मंडल 1020 के पीडीजी अलास्डेयर सीले के नेतृत्व में स्थानीय रोटरी क्लब ऑफ ब्रैड्स ने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया। एक खूबसूरती से सजाए गए डाइनिंग हॉल में जैसे ही हमने प्रवेश किया, वातावरण में तैरती स्वादिष्ट

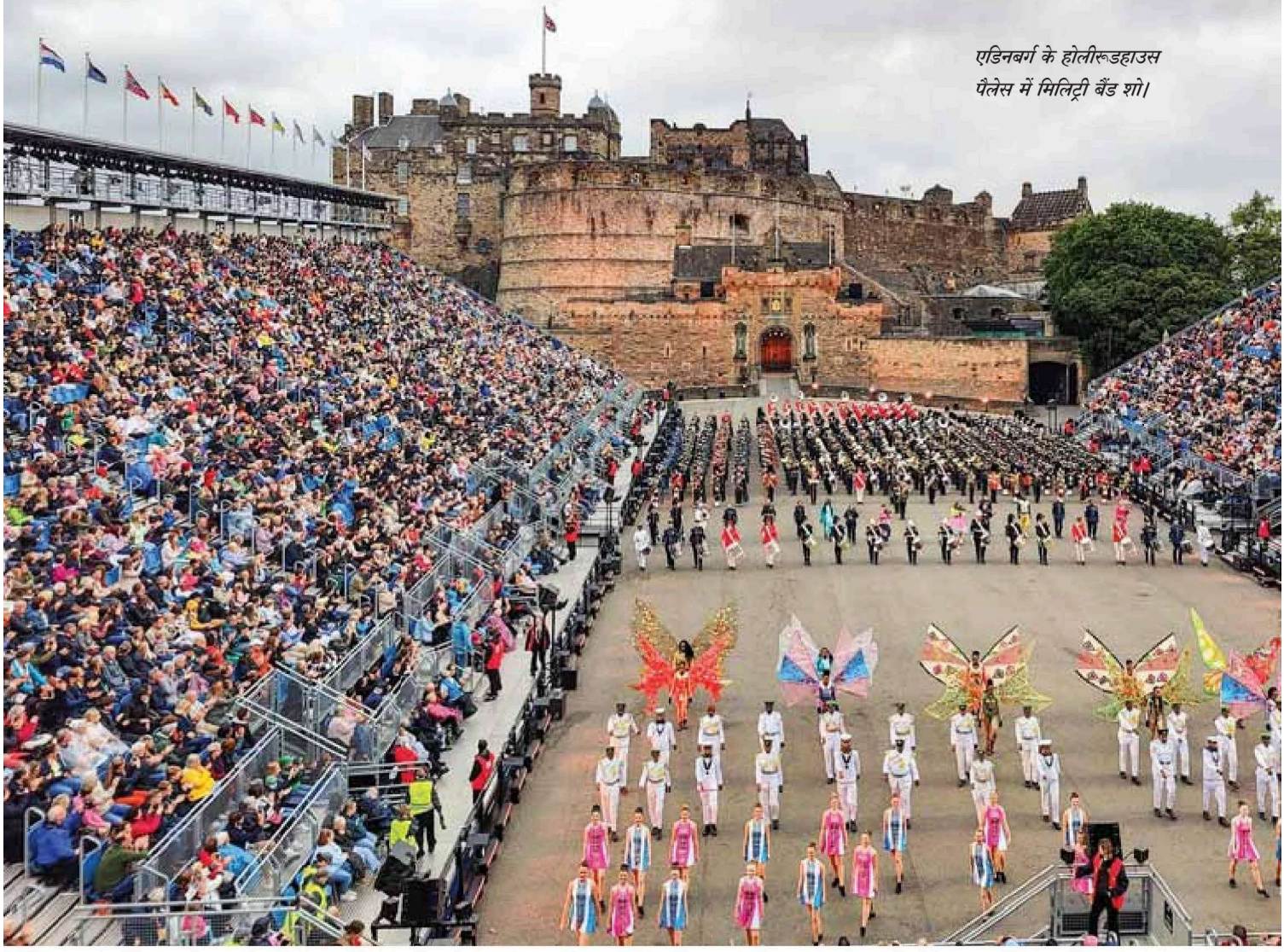

एडिनबर्ग के होलीरूडहाउस पैलेस में मिलिट्री बैंड शो।

रो ई अध्यक्ष गॉर्डन मेकिनली (बाएं से) पीडीजी दीपक गुप्ता, रीना, उमा और पीडीजी केपी नागेश के साथ।

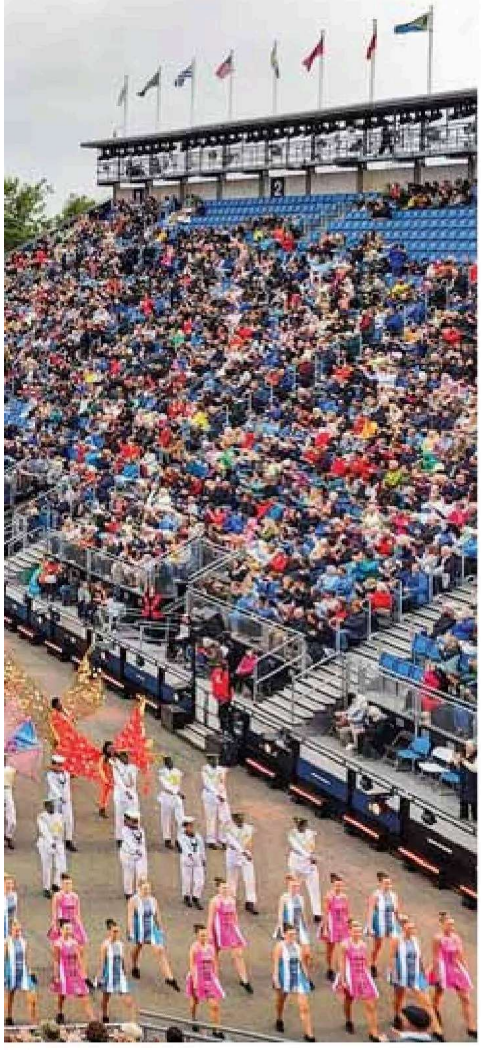

> टीआरएफ द्वारा किये जा रहे जबरदस्त प्रयासों और समाज पर इससे पड़ने वाले असर और सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी दी। उन्होंने प्रमुख दान दाताओं के प्रति हार्दिक आभार जताया।

व्यंजनों की अनूठी सुगंध आमंत्रण दे रही थी, पीडीजी नागेश बताते हैं।

रात्रिभोज के समय अध्यक्ष मेकिनली ने टीआरएफ द्वारा किये जा रहे जबरदस्त प्रयासों और समाज पर इससे पड़ने वाले असर और सकारात्मक प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी दी। उन्होंने प्रमुख दान दाताओं के प्रति हार्दिक आभार जताया, जिनके निरंतर सहयोग ने रोटरी के दुनिया में भलाई करने के लक्ष्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ट्रस्टी अध्यक्ष बैरी रसिन ने भी उनकी इन भावनाओं का अनुकरण किया और नियमित रूप से दान देने वाले समुदाय का और अधिक विस्तार करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला क्योंकि केवल समर्पण और सामूहिक प्रयास संगठन को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचने में सहायक हो सकता है।

एक शानदार नाश्ता करने के बाद ये समूह प्रतिष्ठित रॉयल यॉट ब्रिटानिया की यात्रा के लिए तैयार था। पानी में तैरता ये महल राजघरानों, विश्व नेताओं और गणमान्य व्यक्तियों के आतिथ्य का साक्षी रहा है, जिससे यह वास्तव में एक अद्वितीय और ऐतिहासिक स्थल बन गया है। ''आरामदायक बस यात्रा के दौरान हमें एडिनबर्ग शहर के मनमोहक दृश्यों को निहारने का अवसर

रॉयल यॉट ब्रिटानिया में टीआरएफ ट्रस्टी चेयर बेरी रसिन और एस्तेर (बाएं), और रो ई अध्यक्ष मेकिनली (दाएं से तीसरे) के साथ ए के एस सदस्य।

रो ई अध्यक्ष मोकिनली, हेतर, टीआरएफ ट्रस्टी चेयर रसिन और एस्थर के साथ रीना गुप्ता, उमा, पीडीजी नागेश और दुनिया भर से आए एकेएस सदस्य।

मिला। होलीरूड हाउस के पैलेस में, हम इसकी गैलरी, महल के बगीचों और शाही डाइनिंग हॉल देखते हुए, इसकी भव्यता में डूब गए। अपराह्न में, एक वीआईपी दीर्घा में बैठ कर अद्भुत मिलिट्री बैंड शो का आनंद लिया, भव्यता और राष्ट्रीय गौरव का आयोजन। एक वायु सेना अधिकारी के रूप में, इस कार्यक्रम के दौरान सम्मानित रक्षा नेताओं के साथ जुड़ने से मुझे गर्व और सौहार्द की गहरी अनुभूति हुई। यह वो क्षण था जहां सीमाओं से परे समान मूल्यों और सेवा के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया गया था, जिसने स्मृति को और अधिक सार्थक बना दिया,'' नागेश ने कहा, जो स्वयं एक सेवानिवृत्त फ्लाइट लेफ्टिनेंट हैं।

एडिनबर्ग कैसल में आयोजित भव्य रात्रिभोज में, उदार दान दाताओं ने स्कॉटलैंड के विशिष्ट सरस व्यंजनों का आनंद लेते हुए

इस कार्यक्रम के दौरान सम्मानित रक्षा नेताओं के साथ जुड़ने से मुझे गर्व और सौहार्द की गहरी अनुभूति हुई। यह वो क्षण था जहां सीमाओं से परे समान मूल्यों और सेवा के प्रति प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया गया था, जिसने स्मृति को और अधिक सार्थक बना दिया।

के पी नागेश
AKS सदस्य और
RID 3191 के पीडिजी

उस सौहार्द का उत्सव मनाया जिसे रोटरी आत्मसात करती है। अगले दिन रविवार था और उन्होंने रो ई अध्यक्ष और ट्रस्टी चेयर के साथ तसल्ली से नाश्ता किया, ''जब वे वहां मौजूद मेहमानों से मिलने के लिए हर टेबल पर जा रहे थे तो उनके आचरण में गर्मजोशी और सहजता साफ़ दिख रही थी। यह रोटरी के सेवा और फेलोशिप के मुख्य मूल्यों का प्रतिबिंब था, जो वहां मौजूद हम सब पर एक अमिट छाप छोड़ गया,'' उन्होंने बताया।

चारों भारतीय अपने साथ रोटरी के शीर्ष नेताओं के साथ बिताये गए मधुर पलों और ''रोटरी इंटरनेशनल को परिभाषित करने वाली उदारता, एकता और शालीनता की बेहतरीन यादों को संजोये स्वदेश लौटे। यह आयोजन रोटरी की चिरस्थायी भावना, उत्साह और परोपकार के सामर्थ्य का एक सशक्त प्रमाण था।'' ■

ADVT.

samarpan
BACK TO LIFE

Healing Minds Changing Lives

"Set up by The **Abheraj Baldota Foundation in 2022**, Samarpan is India's International class Substance Abuse and Mental Health residential program. Led by Internationally recognised clinicians, and staffed with dedicated professionals, the luxury facility set in the rolling hills of Mulshi, Pune caters for **23 clients** at any one time. Our evidence based program offers clients the foundation to rebuild their lives from Substance Abuse, Gambling and other mental health disorders in an empathic and dignified manner"

Licensed by:

MSMHA Evidence Based Program • Gorski-CENAPS accredited • Individualised Treatment • Ethical Practices • 100% Confidentiality • Family Program • Qualified & Experienced Staff
World Class Facilities

For more information contact:
www.samarpanrecovery.com | admissions@samarpan.in | +91 81809 19090
Hosted By: Samarpan Rehab, 441 Song of Life Road, Mulshi, Maharashtra

भारत को इस सौम्य, दयालु कृषि वैज्ञानिक की कमी खलेगी

रशीदा भगत

एम एस स्वामीनाथन को मैं हमेशा एक बेहद दयालु, सौम्य, विनम्र और मिलनसार सज्जन पुरुष के रूप में याद रहेंगे। पहले *इंडियन एक्सप्रेस* और फिर *हिंदू बिज़नेस* लाइन में पत्रकार रहते मैंने उनके कामकाज, दृष्टिकोण और मिशन पर रिपोर्टिंग शुरू की थी, 1988 में चेन्नई में उनके द्वारा एम एस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन (एमएसएसआरएफ) की स्थापना से कई वर्ष पहले। फाउंडेशन की स्थापना प्रथम विश्व खाद्य पुरस्कार से प्राप्त राशि से की गई थी, जिसके वो पहले विजेता थे। सच तो ये है कि वो पहले शख्स थे जिन्होंने मेरे अंदर कृषि और खेती बाड़ी से जुड़ी सभी चीजों के बारे में जिज्ञासा जगाई थी।

1980, 90 और उसके बाद के दशक में, इस प्रतिभाशाली कृषि वैज्ञानिक के आमंत्रण पर उनकी बैठकों, कार्यक्रमों और प्रेस कॉन्फ्रेंस में करीब आधा दर्जन पत्रकार हमेशा मौजूद रहते थे, अद्वितीय क्षमता के धनी, उनमें लोगों को जोड़ने की अद्भुत प्रतिभा थी। चाहे वे राजनेता हों, सरकारी अधिकारी हों, दुनिया भर के शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों का उनका अपना समुदाय हो, और भले वो खेती करने वाले किसान हों। वह एकांत में रहने वाले कोई आइवरी टावर वैज्ञानिक नहीं थे। यदि नोबेल पुरस्कार विजेता नॉर्मन बोरलॉग द्वारा भारत को

प्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक एम एस स्वामीनाथन।

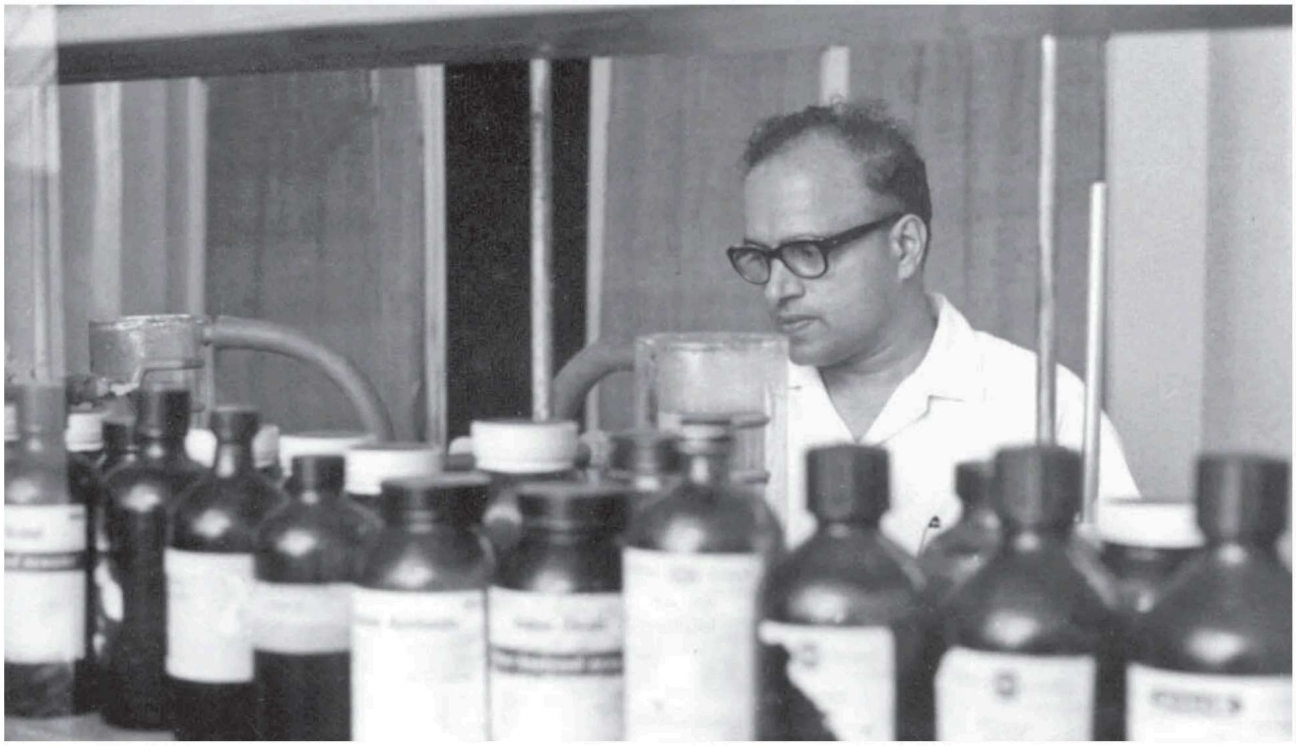

मेक्सिको द्वारा दिए गए लगभग 100 किलोग्राम बौने किस्म के गेहूं के बीज को अगले कुछ दशकों में सौ मिलियन टन से अधिक गेहूं में परिवर्तित कर दिया गया, जिससे भारत में भोजन की कमी समाप्त हो गई थी, तो इसके लिए उस व्यक्ति के करिश्माई संबंधों को धन्यवाद है, जिनका पिछले महीने 98 वर्ष की आयु में निधन हो गया, उनका विभिन्न प्रकार के लोगों के साथ घनिष्ठ संबंध था।

वह जुड़ाव हम पत्रकारों तक फैला हुआ था; हर बार जब मैं चेन्नई के तारामणि में इस फाउंडेशन के परिसर में पहुँच कर मीटिंग हॉल

यदि नोबेल पुरस्कार विजेता नॉर्मन बोरलॉग द्वारा भारत को मेक्सिको द्वारा दिए गए लगभग 100 किलोग्राम बौने किस्म के गेहूं के बीज को अगले कुछ दशकों में सौ मिलियन टन से अधिक गेहूं में परिवर्तित कर दिया गया, जिससे भारत में भोजन की कमी समाप्त हो गई थी, तो इसके लिए उस व्यक्ति के करिश्माई संबंधों को धन्यवाद है।

में प्रवेश करती और वो गर्मजोशी के साथ मुस्कुराते हुए आगे आते, हौले से मेरा हाथ थामते और उस समय वो जिस किसी के साथ भी बातचीत कर रहे होते, उनसे मेरा परिचय कराते थे और अक्सर इनमें दुनिया भर से आये हुए प्रतिष्ठित वैज्ञानिक होते थे। एक बार तो, फरवरी 1996 में, मैंने अपनेआप को उस मसीहा से हाथ मिलाते हुए पाया, जो दुनिया भर में वैश्विक भूख के मुख्य दुश्मन के रूप में जाना जाता था... खुद नॉर्मन बोरलॉग। मौका था एमएसएसआरएफ परिसर में बोरलॉग हॉल के उद्घाटन का। उन्होंने वहां उपस्थित सभी पत्रकारों के साथ भी वही शिष्टाचार और गर्मजोशी दिखाई।

उनकी विनम्रता और उनकी सहज सुलभता ने स्वामीनाथन को पूरे देश में महिला किसानों सहित हजारों किसानों का चहेता बना दिया था। इसलिए उनकी बेटी और डब्ल्यूएचओ की पूर्व मुख्य वैज्ञानिक सौम्या स्वामीनाथन की अपने पिता को समर्पित श्रद्धांजलि पढ़कर कोई आश्चर्य नहीं हुआ, जहां वह याद करती हैं कि कैसे हाल ही में, तमिलनाडु के एक गांव में महिला किसानों के एक समूह ने उनसे कहा था कि ''आपके अप्पा ने हमारी ज़िंदगियाँ बदल दी है।'' उस गांव में 90 फीसदी कृषक महिलाएं हैं। ''कृषि में महिलाओं को सशक्त करना उनका सबसे बड़ा जुनून था और उन्होंने यह सुनिश्चित किया था कि छठे योजना आयोग

उनका मानना था कि जब महिलाएं जानकार बनेंगी, ज्ञान से सशक्त होंगी, तो वे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना फसलों की देखभाल करेंगी।

अपने पिता को श्रद्धांजली देते हुए उनकी बेटी सौम्या स्वामिनाथन ने लिखा।

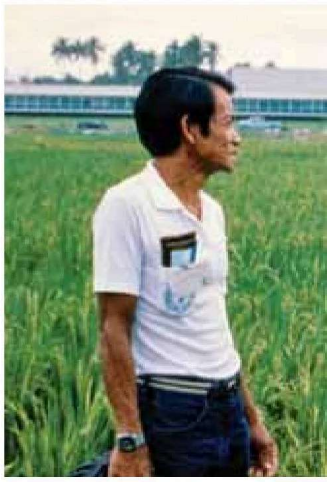

ऊपर बाईं ओर से दक्षिणावर्त: 1983 में पोप जॉन पॉल द्वितीय के साथ; डॉ एम एस स्वामीनाथन (दाएं) फिलीपींस में अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में एक चावल के खेत में चीनी कृषि विज्ञानी युआन लोंगपिंग के साथ; अपनी पत्नी मीना और बेटियों सौम्या, मधुरा और नित्या के साथ; डेस मोइनेस में आयोवा स्टेट कैपिटल में आयोजित 2013 के पुरस्कार समारोह में विश्व खाद्य पुरस्कार प्राप्तकर्ता डॉ स्वामीनाथन (बाएं); डॉ स्वामीनाथन 2014 विश्व खाद्य पुरस्कार ग्लोबल यूथ इंस्टीट्यूट में भाग लेने वाले छात्रों से घिरे हुए।

में पर्यावरण के साथ लिंग को भी एक अध्याय के रूप में शामिल किया जाए। उनका मानना था कि जब महिलाएं जानकार बनेंगी, ज्ञान से सशक्त होंगी, तो वे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना फसलों की देखभाल करेंगी,'' उन्होंने लिखा।

''पहली बार चावल की खेती करने वाली महिलाएँ थीं,'' कृषि वैज्ञानिक ने एक बार कहा था, उन्होंने कहा था कि अरुणाचल प्रदेश के एक शहर अलोंग के एक मंदिर में एक महिला का चित्र था, जिसे स्थानीय लोग मानते थे कि उसीने अपने यहाँ चावल की खेती की से परिचय कराया था।

तो वो क्या चीज है जिसने स्वामीनाथन को भीड़ से अलग कर उन्हें इतना विशिष्ट इंसान बना दिया? आइए शुरुआत में चलते हैं। एक सर्जन के बेटे, उनकी शिक्षा भारत और बाद में कैम्ब्रिज में हुई, जहां उन्होंने 1952 में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। अगले दो दशकों के दौरान उन्होंने कई शोध और प्रशासनिक पदों पर काम किया। उन पदों पर काम करते हुए, उन्होंने मैक्सिकन अर्धबौने गेहूं के पौधों को भारतीय खेतों में शामिल कर, आधुनिक कृषि पद्धतियों की स्वीकार्यता के प्रसार में सहायता की।

और दिलचस्प बात ये है कि कृषि विज्ञान में डिग्री धारक और साइटोजेनेटिक्स में स्नातकोत्तर ने सिविल सेवा परीक्षा भी दी, लेकिन भारतीय पुलिस सेवा में शामिल नहीं होने का फैसला किया (अगर ऐसा किया होता, तो वह निश्चित रूप से अभी तक के सबसे सज्जन और सबसे मानवीय पुलिसकर्मियों में से एक होते!) और इसके बजाय उन्होंने नीदरलैंड में आनुवंशिकी में यूनेस्को फ़ेलोशिप लेने का निर्णय किया। कैम्ब्रिज से दर्शनशास्त्र में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त करने के बाद, वह विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय में पोस्टडॉक्टरल शोध के लिए अमेरिका चले गए, जहां 1953 में उनकी मुलाकात प्रसिद्ध नॉर्मन बोरलॉग से हुई, जहाँ बोरलॉग ने गेहूं की कुछ बीमारियों की रोकथाम पर भाषण दिया था। यहां से शुरू हुआ जुड़ाव उस दोस्ती का जिसने भारत में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने का इतिहास रच दिया।

भारतीय कृषि की सबसे रोचक कहानियों में से एक यह है कि उन्होंने कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए पौधों के आनुवंशिकी का उपयोग किस प्रकार किया। 1965 तक, हमारी जनसंख्या 500 मिलियन से अधिक थी, भारत में बमुश्किल 12 मिलियन टन गेहूं का उत्पादन होता था। हम जहाज से मुंह तक 'शिप टू माउथ' जीवन जीने के लिए बदनाम थे, जैसा कि पश्चिमी दुनिया में अमेरिका से आयातित गेहूं पर हमारी भारी निर्भरता का जिक्र करते हुए घमंड पूर्वक कहा जाता था। भारत की पहचान भीख मांगने का कटोरा से की जाती थी और यह ये कह कर खिल्ली उड़ाई जाती थी कि

''यदि हमने इस भीख के कटोरे में अनाज नहीं डाला, तो लाखों लोग मर जायेंगे।''

निश्चित रूप से स्वामीनाथन की प्रतिभा और दूरदर्शिता की बदौलत हम एक लंबा सफर तय कर चुके हैं, और साथ ही उन्हें भारत सरकार से मिले सहयोग की वजह से, जिसका नेतृत्व उस समय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री कर रहे थे और सी सुब्रमण्यम कृषि मंत्री थे।

1970 के दशक के बाद के दशकों में, हमारा वार्षिक गेहूं उत्पादन लगभग 10 गुना बढ़कर 112.18 मिलियन टन प्रति वर्ष (2022-23) हो गया है, जो गत वर्ष से 4.4 मिलियन टन अधिक है।

स्वामीनाथन का अनुपम उपहार, और उनकी अपार सफलता और लोकप्रियता का कारण यह था कि वह अपनी अनुसंधान और आनुवंशिक विज्ञान की कुर्सी छोड़, कमरे से बाहर निकल कर भारत के चावल और गेहूं के खेतों में पहुँच गए जहां उन्होंने किसानों को नई तकनीकें प्रयोग करने के लिए राजी किया।

डॉ स्वामीनाथन की पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

1959 तक बोरलॉग को जापान के एक बौने जीन का उपयोग करके मेक्सिको में गेहूं की अधिक उपज देने वाली किस्मों को उगाने में प्रभावशाली परिणाम मिले थे। इस किस्म के पौधे पर अधिक अनाज उगाया जा सकता था और ऐसे उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि हुई। एशिया में तीक्ष्ण दृष्टि वाले केवल एक वैज्ञानिक, स्वामीनाथन ने इस अद्भुत घटना को देखा, और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान में अपने वरिष्ठों को लिखा, जहां वह तब काम कर रहे थे, उन्होंने सुझाव दिया कि वे बोरलॉग को भारत आने के लिए आमंत्रित करें।

उन दिनों, खाद्यान्न की कमी से जूझ रही भारत सरकार लगातार इस से निपटने के तरीकों की तलाश में थी। बोरलॉग मार्च 63 में भारत आये और बाद में उन्होंने बौनी और अर्धबौनी किस्मों के 100 किलोग्राम बीज भेजे और पंजाब के किसानों को इस किस्म की बुवाई करने के लिए राजी किया। लेकिन ये गेहूँ मैक्सिकन गेहूँ की तरह लाल था, इसलिए भारतीय वैज्ञानिकों ने स्थानीय किस्मों के साथ इसका संकरण कराया और आज जो सुनहरा गेहूँ हमारी रोटियों, पराठों और पूरियों में जाता है, उसी संकरण का परिणाम है!

स्वामीनाथन का अनुपम उपहार, और उनकी अपार सफलता और लोकप्रियता का कारण यह था कि वह अपनी अनुसंधान और आनुवंशिक विज्ञान की कुर्सी छोड़, कमरे से बाहर निकल कर भारत के चावल और गेहूं के खेतों में पहुँच गए जहां उन्होंने किसानों को नई तकनीकें प्रयोग करने के लिए राजी किया। किसानों से उन्होंने उनकी भाषा में बात की, न कि वैज्ञानिक शब्दावली का प्रयोग करते हुए। उन्होंने किसानों को बोरलॉग के बीज ही नहीं दिए, बल्कि उन्हें रासायनिक खाद

और कीटनाशकों की आपूर्ति, कृषि ऋण और विपणन में भी सहायता दी गई। और इन कार्यों में उनकी मदद केंद्रीय कृषि मंत्री सुब्रमण्यम ने की थी।

वास्तव में हरित क्रांति 1966 में शुरू हुई, और 1968 तक बौनी किस्म से गेहूं की भरपूर पैदावार हुई और आने वाले दशकों में, भारत खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। अनाज उत्पादन में उस समय अप्रत्याशित वृद्धि हुई जब चहुँ ओर भारत भुखमरी का सामना कर रहा था और इस क्रांति ने पंजाब और हरियाणा को गेहूं और चावल के ब्रेड बास्केट में बदल दिया, विशेष रूप से कम आय वाले किसानों की मदद करते हुए। इसने देश को बड़े पैमाने पर आसन्न अकाल से जूझने और विदेशी सहायता पर अत्यधिक निर्भरता से बचाया। उनकी प्रमुख उपलब्धियों में अधिक उपज वाली बासमती किस्मों को विकसित करना, विभिन्न फसलों के लिए उत्परिवर्तन की तकनीक का उपयोग करना और खाद्य उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए आनुवंशिकी का अनुप्रयोग शामिल है। उनके कार्य के लिए, *टाइम* पत्रिका द्वारा

अमेरिकी कृषि विज्ञानी और नोबेल पुरस्कार विजेता नॉर्मन बोरलॉग (बाएं से तीसरे) और पूर्व केंद्रीय कृषि मंत्री सी सुब्रमण्यम (बाएं) के साथ डॉ स्वामीनाथन (दाएं से दूसरे)।

डॉ स्वामीनाथन गेहूं का निरीक्षण करते हुए।

20वीं सदी के 20 सबसे प्रभावशाली एशियाई लोगों में से एक, स्वामीनाथन को नामित किया गया था।

कालान्तर में उन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद में महानिदेशक सहित विभिन्न कृषि अनुसंधान संस्थानों में कई महत्वपूर्ण प्रशासनिक पदों को सुशोभित किया। 1989 में उन्हें पद्म विभूषण मिला और वह राज्यसभा सांसद भी रहे।

लेकिन प्रोफेसर स्वामीनाथन ने हरित क्रांति लाने के अलावा और भी बहुत कुछ किया। किसी भी युग की सरकारें - चाहे वह केंद्र में हो या राज्य में, गहरे संकट की अवधि के दौरान समाधान और सहायता दोनों के लिए उनकी बुद्धिमत्ता, मिलनसार और समावेशी स्वभाव और उनके तेज दिमाग पर बहुत अधिक निर्भर थीं। जैसे 2005 में आई सुनामी, जिसने भारत के तटीय क्षेत्रों को तहस नहस कर दिया था।

डॉ स्वामीनाथन भारत में गेहूं के एक खेत में नॉर्मन बोरलॉग के साथ चर्चा करते हुए।

राष्ट्रीय तटीय पुनर्वास नीति विकसित करने में प्रमुख योगदानकर्ता रहे चड्ढछ्ऋ ने पिछले कुछ दशकों में वैज्ञानिक, तकनीकी, आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से तटीय प्रणाली प्रबंधन को मजबूत करने पर गहन शोध और विस्तार से कार्य किया है। उन्होंने किसी भी प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान किया; उदाहरण के लिए, सुनामी की तबाही के बाद, उन्होंने सरकार को सुझाव दिया कि वह सबसे पहले तटीय क्षेत्र में रहने वाले उन लोगों के मनोवैज्ञानिक पुनर्वास पर अपना ध्यान दे, जिनके घर और आजीविका सुनामी से नष्ट हो गए थे। उसके तुरंत बाद ही आजीविका के उपकरण जैसे मछुआरों को नावें, कैटामरैन बेड़ा आदि दिए गए।

उनके निधन से भारत ने एक वैश्विक स्तर पर सम्मानित कृषि वैज्ञानिक खो दिया है, किसानों ने एक दयालु और उनका ख्याल रखने वाला मित्र खो दिया है, सरकार ने एक समझदार, संतुलित और बुद्धिमान सलाहकार खो दिया है। लेकिन सबसे ज्यादा नुकसान गरीब और हाशिये पर बैठे किसानों को हुआ है और निश्चित रूप से छोटी महिला किसानों का, जिन के भीतर इस सौम्य और हमेशा मुस्कुराते व्यक्ति ने उनके भीतर खुद की फसलें उगाने का विश्वास जगाया और आशा का संचार किया... और मामूली खेतिहर मजदूर से खुद के खेत का मालिक बनाया, चाहे वो कितना ही छोटा हो!

एक विज्ञान प्रदर्शनी में।

चित्र सौजन्य : एम एस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सिलाई मशीनें

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई मंडल 2982 के वार्षिक नारे *Each One Lift One* को बढ़ावा देते हुए डीजी एस राघवन ने पूरे मंडल में महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु 1,000 सिलाई मशीनें वितरित करने की एक महत्वाकांक्षी परियोजना शुरू की है।

जुलाई में होसुर में उनकी स्थापना के दौरान एक अखिल महिला आरसीसी (रोटरी कम्युनिटी कॉर्प्स) के सदस्यों को 100 सिलाई मशीनें प्रदान की गई। इस अलंकरण समारोह में पीडीजी एम मुरुगानंदम, रो ई मंडल 3000 मुख्य अतिथि थे। अगस्त में नामक्कल में क्लब प्रशासन पर आयोजित एक मंडल सेमीनार में इस राजस्व मंडल के विभिन्न क्षेत्रों द्वारा समर्थित 20 अखिल महिला आरसीसीयों को 200 मशीनों का एक और सेट वितरित किया गया। पीडीजी सैम बाबू, रो ई मंडल 3000, ने लाभार्थियों को सिलाई मशीन सौंपी।

शेष 700 मशीनें सलेम (400), कल्लाकुरिची (200) में वितरित की जाएंगी और शेष 100 मशीनें फिर से होसुर की महिलाओं को दी जाएंगी। अपने उद्देश्य को समझाते हुए राघवन ने कहा, ''इस विशाल परियोजना के माध्यम से 1,000 महिलाएं सशक्त होंगी और कुल मिलाकर औसतन 4,000 लोग यानी एक परिवार के चार सदस्य आर्थिक संकट से बाहर आएंगे।'' रो ई मंडल 2982 के लगभग 4,000 सदस्यों के साथ प्रत्येक रोटेरियन अप्रत्यक्ष रूप से 4,000 सदस्यों के एक पारिवारिक समूह में एक व्यक्ति की मदद करता है। उन्होंने कहा, प्रत्येक रोटेरियन एक वंचित परिवार में एक व्यक्ति को ऊपर उठाएगा इस प्रकार इस वर्ष के लिए हमारे नारे *Each One Lift One* के हमारे लक्ष्य की प्राप्ति होगी।''

डीजी राघवन का दृष्टिकोण 100 अखिल महिला आरसीसी स्थापित करना और मंडल में योग्य महिलाओं को 1,000 सिलाई मशीनें वितरित करना है ताकि उन्हें स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जा सके। रो ई मंडल 2982 के जीएमएल संपादक रोटेरियन बी नवलादी कार्तिकेयन ने कहा, ''डीजी राघवन के लिए सिलाई मशीन परियोजना वंचित महिलाओं के लिए एक उपहार है जो उन्हें समाज में आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करेगी और सशक्त बनाएगी।''■

बाएं से: डीजी एस राघवन, पीडीजी सी शिवज्ञानसेल्वम, एम मुरुगानंदम और के सुंदरलिंगम होसुर में स्थापना के दौरान सिलाई मशीनों के वितरण में शामिल हुए।

सिलाई मशीन के साथ लाभार्थी।

रोटरी फाउंडेशन को मिला महात्मा पुरस्कार

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी (बाएं से दूसरे) और संजय परमार (दाएं से तीसरे) महात्मा पुरस्कार प्रप्थ करते हुए।

पीआरआईडी सी बास्कर के नेतृत्व में रोटरी फाउंडेशन (इंडिया), आरएफआई ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि के रूप में गांधीवादी, परोपकारी और सामाजिक उद्यमी अमित सचदेवा द्वारा स्थापित प्रतिष्ठित महात्मा पुरस्कार जीता है।

आदित्य बिड़ला समूह इसके प्रायोजकों में से एक है। पुरस्कार समारोह का आयोजन सामाजिक प्रभाव रणनीतियों को तैयार करने वाली कंपनी लाइववीक द्वारा किया जाता है, ताकि उन व्यक्तियों और संगठनों को सम्मान दिया जा सके जो इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की दिशा में काम करने के लिए अपने संसाधनों, विशेषज्ञता और प्रतिभा का लाभ उठाते हैं।

पुरस्कार भारत, यूके और यूएस में प्रतिवर्ष दिए जाते हैं और आरएफआई ने गैर-लाभकारी श्रेणी में 'सामाजिक अच्छाई और प्रभाव' के लिए पुरस्कार के लिए आवेदन किया था। साक्षात्कार के दौरान, जूरी सदस्यों ने भारत में रोटरी की सीएसआर पहल के बारे में पूछताछ की। आरएफआई ने अपने सीएसआर कार्यक्रमों, बीमारी की रोकथाम और उपचार, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक विकास, पर्यावरण, पोलियो उन्मूलन और जल, स्वच्छता और स्वच्छता पर अपने काम के माध्यम से भारत में महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव के लिए पुरस्कार जीता।

यह पुरस्कार रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी, आरआईएसएओ के टीआरएफ प्रमुख और आरएफआई सचिव संजय परमार और सी एस आर कार्यक्रमों की वरिष्ठ समन्वयक भावना वर्मा के साथ प्राप्त किया।■

Rotary
PEOPLE OF ACTION

रोटरी द्वारा कैनेडाई स्कूलों के लिए कला सामग्री

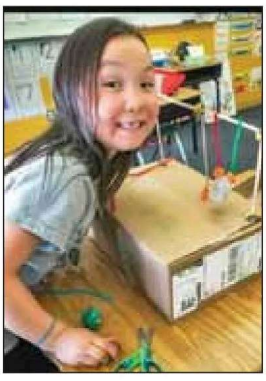

मेट्रो डायनामिक्स रोटरी ई-क्लब, रो ई मंडल 3202 के साथ एक कैनेडियन स्वंसेवी संस्था, आर्ट फॉर एड, ने *प्रोजेक्ट डीआईएएस* (डायनामिक्स इंडिजिनस आर्ट सपोर्ट इनिशिएटिव) के माध्यम से कनाडा के दूरस्थ इलाकों में स्थित दो अधिवासी स्कूलों को कला सामग्री दान की।

प्रोजेक्ट चेयरमैन विद्या थाथमंगलम ने कहा, ''हमने अमेज़ॅन रजिस्ट्री के माध्यम से धन जुटाया और 1,000 डॉलर मूल्य की तेल पेस्टल, क्रेयॉन की डिब्बियाँ, ब्रश और कागजात जैसी कला सामग्री खरीदी।'' पैकेज दो स्कूलों में भेजे गए थे - लीस्क, सस्केचेवान में मिस्टावासिस नेहियावाक हाई स्कूल, और ब्लडवीन, मैनिटोबा में मिस्कूसिपी स्कूल।उन्होंने कहा कि इन कैनेडाई प्रेयरी प्रांतों में युवाओं के बीच अलगाव और आत्महत्या की आशंका होने के कारण, कला उन्हें स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने और खुद को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण जरिया बन जाती है।■

BECOME A DOCTOR IN USA

XAVIER UNIVERSITY ARUBA'S 6 YEAR PROGRAMME TO TRANSFORM YOUR AMERICAN DREAM INTO A REALITY

DOCTOR OF MEDICINE

First 2 years
Start @
KLE, Campus
Karnataka, India

Next 2 years
Continue @
Xavier's Campus
Aruba, Caribbean
island - Netherland

Next 2 years
Complete @
Xavier's affiliated
Teaching Hospitals
USA / Canada

DOCTOR OF VETERINARY MEDICINE

First 2 years
Start @
KLE, Campus
Karnataka, India

Next 3 years
Continue @
Xavier's Campus
Aruba, Caribbean
island- Netherland

Final year
Complete @
Xavier's affiliated
Teaching Hospitals
USA / Canada

Limited Seats

The session starts in January 2024

To apply, Visit: **application.xusom.com**

Contact: Uday @+91 91 0083 0083 +91 98 8528 2712
email: infoindia@xusom.com

XAVIER STUDENTS ARE ELIGIBLE FOR H1/J1 Visa PROGRAMME

ADVT.

बेबी दियाश्री और मां गीता।

रोटरी क्लब मद्रास साउथ ने पूरी की 500 बाल हृदय सर्जरियाँ

एस आर मधु

26 अगस्त, 2023 को रोटरी क्लब मद्रास साउथ, रो ई मंडल 3232 ने एक खास कार्यक्रम में एक दुर्लभ घटना का जश्न मनाया - पिछले छह वर्षों में 18 साल से काम उम्र के बच्चों के हृदय की 500 सर्जरियाँ पूरा होने का। ''अधिकतर बच्चे 13 वर्ष से कम आयु के थे,'' इस परियोजना के जनक और पूर्व अध्यक्ष के सर्वनन कहते है।

कई संस्थानों ने इस परियोजना में भागीदारी की जिसकी लागत अब तक ₹ 3.4 करोड़ है। इनमें मुख्यमंत्री बीमा योजना के माध्यम से तमिलनाडु सरकार; रोटरी फाउंडेशन; रोटरी क्लब पासाडेना, कैलिफोर्निया, यूएसए; रो ई मंडल 3232 और 5300; कॉर्पोरेट्स फोर्ड मोटर कंपनी, CAMS और टैग्रोस इंटरनेशनल (सभी चेन्नई से) और हैव ए हार्ट फाउंडेशन, बेंगलुरू शामिल है। ये सर्जरियाँ चेन्नई के सूर्या अस्पताल में आयोजित की गई।

यह परियोजना टीआरएफ के तीन वैश्विक अनुदानों द्वारा समर्थित की गई। उपलब्ध धन के साथ अगले साल लगभग 130 सर्जरियाँ और आयोजित की जाएंगी। डीजी रवि रमन ने वादा किया कि अगर क्लब इस परियोजना को विस्तारित करना चाहता है तो उसका पूर्ण समर्थन किया जाएगा।

बैठक में कुछ माताओं ने दोषपूर्ण दिल वाले बच्चों के पालन-पोषण में अपने दिल दहला देने वाले अनुभव को साझा किया जिससे अनेक दर्शकों की आंखें नम हो गई। माताओं ने कहा कि इस

2014 में, तत्कालीन सचिव सरवनन को दिल का गंभीर दौरा पड़ा। दो स्टेंट लगाए गए और वह धीरे-धीरे ठीक हो गए लेकिन उन्होंने सोचा कि समाज के अन्य वंचित लोग इस तरह के संकट का सामना कैसे कर सकते हैं।

रोटरी क्लब मद्रास साउथ के पूर्व अध्यक्ष के सरवनन, डॉ प्रशांत शाह के साथ सूर्या अस्पताल में, जहां एक बच्चे का हृदय रोग का इलाज किया जा रहा है।

पीडीजी नटराजन नागोजी और दिवंगत पीडीजी राजा रामकृष्णन के साथ सरवनन अस्पताल वार्ड में एक मां के साथ बातचीत करते हुए।

परियोजना ने उनके पूरे परिवार को एक नया जीवन दिया है।

*बेबी दियाश्री तीन साल की है। उसे जन्मजात हृदय विकार दोष था। उसके पिता एक कुली हैं। उसकी मां गीता ने कहा कि उसके बच्चे को सांस लेने में तकलीफ होती थी और उसका चेहरा नीला पड़ जाता था। उन्होंने बहुत से अस्पतालों के चक्कर लगाए - मगर कोई भी सर्जरी जटिल और महंगी दोनों होती। उन्हें सूर्या अस्पताल के बारे में पता चला जहाँ उनके साथ अच्छा व्यवहार किया गया और उन्हें मदद का आश्वासन दिया गया। 27 जुलाई को एक बेहद जटिल सर्जरी की गई। गीता ने सर्जरी के एक महीने बाद रोटरी कार्यक्रम में कहा कि उसका बच्चा अब सामान्य और तंदरुस्त है।

* बेबी रुथराश्री जो अब 15 महीने की है, एक ड्राइवर की बेटी है, उसको जन्म से ही दिल में एक छोटा सा छेद था जो बढ़ता जा रहा था। यह परिवार कोयंबटूर में रहता है। उसकी मां महालक्ष्मी ने विभिन्न अस्पतालों का दौरा करने की अग्निपरीक्षा दी पर बच्ची के लिए कोई उम्मीद नहीं दिखी। पर जब उसने सूर्या और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के बारे में सुना और उसकी दुनिया बदल गई। अप्रैल 2023 में एक सुधारात्मक सर्जरी होने के बाद वह बच्ची अब स्वस्थ है। जब महालक्ष्मी ने रोटरी कार्यक्रम में बात की तो उसकी बच्ची भी 15 महीने की उम्र के बाकी सामान्य शरारती बच्चों की तरह ही माइक से खेल रही थी।

सरवनन ने रोटरी क्लब पासाडेना के सदस्यों का एक वीडियो चलाया जिसमें वे खुशी से तालियाँ बजा रहे थे जब उन्होंने सुना कि रोटरी क्लब मद्रास साउथ ने इस परियोजना के तहत 500 सर्जरियाँ पूरी कर ली हैं। पासाडेना क्लब ने रोटरी क्लब मद्रास साउथ के साथ अपने सहयोग की सराहना की।

महान परियोजनाओं की अक्सर दुर्लभ उत्पत्ति होती है; जैसा इस परियोजना के साथ है। मार्च 2014 में, तत्कालीन सचिव सरवनन को दिल का गंभीर दौरा पड़ा। दो स्टेंट लगाए गए और वह धीरे-धीरे ठीक हो गए लेकिन उन्होंने सोचा कि समाज के अन्य वंचित लोग इस तरह के संकट का सामना कैसे कर सकते हैं। उन्हें हृदय विकारों से पीड़ित बच्चों के लिए मुख्यमंत्री बीमा योजना के बारे में पता चला। एक के बाद एक सारी चीजें होती चली गई, दानकर्ताओं की पहचान की गई, एक वैश्विक अनुदान साकार हुआ (''बेहद कठिन प्रयासों के बाद'')

और *केयरिंग फ़ॉर लिटिल हार्ट्स* परियोजना वास्तव में साकार हुई।

यह परियोजना कुछ साल पहले कोविड और कुछ कर्मचारी संबंधी समस्याओं की वजह से अवरुद्ध हो गई थी। इन चुनौतियों पर काबू पा लिया गया है। ''चुनौतियां निश्चित रूप से आती है लेकिन हार मान लेना वैकल्पिक होता है,'' ऐसा कहा जाता है। लिटिल हार्ट्स परियोजना इस सच्चाई का उदाहरण है।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार और रोटरी क्लब मद्रास साउथ के सदस्य हैं

महालक्ष्मी अपनी संतान रुथश्री के साथ।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मैसूर के दो क्लबों ने नेत्रदान पर जोर दिया

रशीदा भगत

दृष्टिबाधितों की दुर्दशा के बारे में जागरूकता फैलाने और अंग दान, विशेष रूप से नेत्रदान करने के महत्व पर जोर देने के लिए लगभग 300 लोगों द्वारा एक पदयात्रा की गई लेकिन यह यात्रा थोड़ी अलग थी। रोटरी अवॉइडबल ब्लाइन्डनेस फाउंडेशन के सहयोग से रोटरी क्लब पंचशील मैसूर और रोटरी क्लब मैसूर, रो ई मंडल 3181 द्वारा आयोजित इस पदयात्रा का नेतृत्व दृष्टिबाधितों ने किया और इसे राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़े के दौरान आयोजित किया गया।

रोटेरियनों, रोटरेक्टरों, कॉलेज के विद्यार्थियों और रो ई निदेशक अनिरुद्ध रॉयचौधरी सहित देखने में सक्षम अन्य लोग अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर पीछे चल रहे थे। वे सफेद बेंत धारी दृष्टिबाधितों के नेतृत्व में आगे बढ़ रहे थे। इसका उद्देश्य देखने में सक्षम लोगों को दृष्टिहीन लोगों की कठिनाइयों से अवगत कराना था।

रोटरी क्लब पंचशील मैसूर के अध्यक्ष किरण रॉबर्ट ने कहा कि दोनों क्लबों के सदस्य राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़े (25 अगस्त से 8 सितंबर) के दौरान एक पदयात्रा आयोजित करना चाहते थे, "केवल नेत्रदान के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने और इसे दान करना कितना आसान है, यह बताने के लिए ही नहीं बल्कि नेत्र दान से जुड़ी अनेकों भ्रांतियों को दूर करने के लिए भी।"

भारत में इस समस्या के अत्यधिक विस्तार और कॉर्निया की आपूर्ति की तुलना में इसकी मांग

आंखों पर पट्टी बांधकर मार्च में शामिल कॉलेज के छात्र-छात्राएं।

"Eye donation
makes a difference.
Just Watch."

रोटरी क्लब पंचशील मैसूर के सदस्य (बाएं से) राजाराम, सोमेश और राजेंद्र प्रसाद ब्लाइंड वॉक में भाग लेते हुए।

बहुत अधिक होने का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि आंखों की चोटों के कारण भारत में हर साल अंधेपन के 20,000 से अधिक नए मामले सामने आते हैं। विटामिन ए की कमी, संक्रमण, कुपोषण और कई अन्य चिकित्सा समस्याएं है। ''ये लोग कॉर्नियल प्रत्यारोपण द्वारा अपनी दृष्टि वापस पा सकते हैं और नेत्र दान के बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आंखों की एक जोड़ी अक्सर चार लोगों की दृष्टि वापस लाने में मदद कर सकती है।'' (एक प्रमाणित चिकित्सा खोज में यह पाया गया है कि दान किए गए नेत्र के इष्टतम और कुशल उपयोग से एक अकेले कॉर्नियल ऊतक का उपयोग नियमित अभ्यास के रूप में दो रोगियों की दृष्टि सफलतापूर्वक बहाल करने में किया जा सकता है।)

रॉबर्ट ने कहा कि दुख की बात है कि केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा नेत्रदान के लिए इतने अभियान चलाए जाने के बावजूद भी भारत में नेत्रदान करने की प्रथा वास्तव में प्रचलन में नहीं है। ''उदाहरण के लिए भारत में हर साल 10 मिलियन से अधिक मौतें होती हैं लेकिन हम नेत्रदान के माध्यम से हर साल केवल 50,000 जोड़ी आंखें ही एकत्रित कर पा रहे हैं। इसलिए हमारे क्लब के नेताओं ने इस मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करते हुए हमारे विशाल रोटरी नेटवर्क का उपयोग करना उचित समझा ताकि हमारे जाने के बाद भी हम जो भलाई का काम कर सकते हैं उसके बारे में सार्वजनिक रूप से जागरूकता फैलाई जा सके। आखिरकार हम रोटेरियन समुदाय, अपनेपन और सेवा की एक मजबूत भावना से जुड़े हुए है।''

उन्होंने कहा कि उनका दूसरा उद्देश्य दृष्टि दूत तैयार करना है क्योंकि यह रक्तदान के एकदम विपरीत है जिसमें हम किसी भी जरूरतमंद को कभी भी रक्त दान कर सकते है मगर आँख के मामले में दानकर्ता को केवल अपनी आंखें दान करने की प्रतिज्ञा करनी होती है और उसका दान तो दाता की मृत्यु हो जाने के बाद ही किया जा सकता है।

अक्सर आँखें दान करने की प्रतिज्ञा करने और वास्तव में आँखें दान करने के बीच कई साल बीत जाते हैं ताकि उनका उपयोग उन लोगों को लाभान्वित करने के लिए किया जा सके जिन्हें दृष्टि की सख्त आवश्यकता है। ''किसी अपने को खो देने के दुःख और उनकी मृत्यु के बाद होने वाले आघात में मृतक का परिवार उस प्रतिज्ञा के बारे में भूल जाता हैं। उस समय मृतक के दोस्तों या परिवार के बीच 'दृष्टि दूत' जैसे किसी व्यक्ति को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता होती है कि समय से किसी नेत्र बैंक से संपर्क करके आंखें दान कर दी जाए।''

(आई बैंक्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के पास उपलब्ध साहित्य के अनुसार मृत्यु के 6 घंटे के भीतर आंखों का निकलना जरूरी होता है इसलिए मृत्यु के तुरंत बाद निकटतम नेत्र बैंक को सूचित करना जरूरी होता है। बैंक की एक टीम घर पर आती है और यह मसरल रक्तहीन प्रक्रिया 15-20 मिनट से भी कम समय में खत्म हो जाती है।फ इस प्रक्रिया में मृतक का चेहरा खराब नहीं होता। आँखें निकालने के बाद उनका विश्लेषण किया जाता है, नेत्र बैंक में उसे संसाधित किया जाता है और कॉर्निया को 96 घंटों के भीतर प्रत्यारोपित करना होता है।)

जो लोग अपनी आंखें दान करना चाहते है उन्हें एक नेत्र बैंक में पंजीकृत होना चाहिए और व्यक्ति की मृत्यु के बाद इस बैंक को सूचित किया जाना चाहिए। दाता और प्राप्तकर्ता दोनों को गुमनाम रखा जाता है।

किसी कार्य को करने का जुनून क्या कर सकता है इस बात का उदाहरण देते हुए रॉबर्ट ने कहा कि शिवकाशी के डॉ जे गणेश लायंस क्लब के एक सदस्य हैं, ''उन्होंने 4,400 से अधिक जोड़ी

दृष्टिबाधित लोग मार्च का नेतृत्व करते हुए।

आंखें प्राप्त करने का एक अपराजेय रिकॉर्ड बनाया है, जिससे 16,000 से अधिक नेत्रहीन लोग दोबारा देख सकने में सक्षम हुए।''

दृष्टिदूत बनना बहुत ही सरल है; आपको बस 70396 70396 पर एसएमएस या टेक्स्ट मैसेज में 'Eye' लिखकर भेजना होगा।

अब हम 45 मिनट तक चलने वाली इस 1 किमी पदयात्रा की बात करते है, मैसूर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष कृष्णा होमबाल, जो दृष्टि बाधित हैं, ने इस पदयात्रा का उद्घाटन किया जिसमें लगभग 15-20 पुलिसकर्मियों सहित नेत्रहीन और देखने में सक्षम लोगों ने भाग लिया। इंटरनेशनल फेलोशिप ऑफ मोटरसाइकिल राइडर्स के 25 बाइक सवारों के एक विशेष समूह ने नेत्रहीनों की इस पदयात्रा का नेतृत्व किया।

रॉबर्ट ने आगे कहा कि नेत्रदान पर जागरूकता फैलाने के लिए रोटेरियन सिर्फ इस पदयात्रा तक ही नहीं रुकेंगे। अब हम आंखों को पुनः प्राप्त करने वाले केंद्र विकसित करना चाहते हैं; ''हमने चामराजनगर की डिप्टी कमिश्नर, एक आईएएस अधिकारी शिल्पा नाग से बात की है, जो नेत्रदान को बढ़ावा देने वाली इस परियोजना में बहुत रुचि रखती हैं और उन्होंने कहा कि वह इस मुद्दे का समर्थन करेंगी। लगभग 20,000 की लागत वाली पहली नेत्र पुनर्प्राप्ति इकाई इस क्षेत्र के सार्वजनिक स्वास्थ्य केंद्र में स्थापित की जाएगी। हम इस कार्य के लिए स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित करेंगे जो सरल है; हमने मैसूर के उषा किरण आई हॉस्पिटल के साथ साझेदारी की है, जहाँ के डॉक्टर हमारे स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण देंगे कि मृतक की आंखों को कैसे निकाला जाए।''

रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी ने आंखों पर पट्टी बांधकर चलने के बाद सभा को संबोधित किया। रो ई मंडल 3181 के डीजी एचआर केशव (दाएं से पांचवें) और लता नारायण (दाएं से दूसरी) भी नज़र आ रही हैं।

एक बार इसके सफलतापूर्वक सम्पन्न हो जाने के बाद वे ग्रामीण क्षेत्रों में और अधिक - कम से कम 10 - नेत्र पुनर्प्राप्ति इकाइयों को स्थापित करना चाहते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि रोटेरियनों के इस समूह के पास दीर्घकालिक योजनाएं हैं; और उनका सपना एक नेत्र बैंक स्थापित करने का है। ''हमारा उद्देश्य एक वैश्विक अनुदान परियोजना के माध्यम से चामराजनगर में एक रोटरी नेत्र बैंक तैयार करना है और हमारे क्लब की एक मानद सदस्य, शिल्पा नाग ने हमारी मदद करने का वादा किया है।''

रो ई निदेशक रॉयचौधरी और किरण रॉबर्ट के अलावा रोटरी क्लब मैसूर के निर्वाचित अध्यक्ष प्रवीण, रो ई मंडल 3181 के डीजी, केशव, कोल्हापुर के रो ई मंडल 3170 के डीजी नासिर बोरसदवाला, तमिलनाडु के उदुमलपेट के रो ई मंडल 3203 के डीजी डॉ सुंदर राजन और रो ई मंडल 3191 के डीजी उदयभास्कर, रो ई मंडल 3192 के डीजी श्रीनिवासमूर्ति, शिवकाशी के डॉ गणेश, तुमकुर की एक रोटेरियन लता नारायण, जिन्होंने 2,400 आंखों को पुनः प्राप्त किया है, सभी ने इस पदयात्रा में भाग लिया। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

पानी का अनुमान लगाने वाले रोटरी क्लब बेंगलोर साउथ परेड के रोटेरियन

आनन्द रामचन्द्र

पीने के पानी की खोज हमेशा से एक चुनौती रही है। भारत में दुनिया की आबादी का 18 प्रतिशत हिस्सा रहता है लेकिन यहाँ दुनियाभर के जल संसाधनों का केवल 4 प्रतिशत हिस्सा ही उपलब्ध है जिस वजह से यह दुनिया के सबसे अधिक पानी की कमी वाले देशों में गिना जाता है। हमारे अनियमित मानसून ने हमारी पीने के पानी की जरूरतों को पूरा करने की चुनौती को बढ़ा दिया है। जलवायु परिवर्तन एक अन्य कारक है जिससे हमारे जल संसाधनों पर दबाव बढ़ने की संभावना बढ़ती है।

बेंगलुरु और उसके आसपास के क्षेत्रों में झीलें ऐतिहासिक रूप से पीने के पानी के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करती थीं। परस्पर रूप से जुड़ी इन झीलों को प्राकृतिक परिदृश्य का उपयोग करने हेतु बड़ी ही निपुणता से डिज़ाइन किया गया था जिसके परिणामस्वरूप एक झील के अतिप्रवाह से दूसरी झील अपने आप भर जाती थी जिससे उच्च भूजल स्तर बने रहता था और स्थानीय कुओं में जल की आपूर्ति होती रहती थी। झीलों और उथले कुओं के अलावा भूमिगत जल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। दुर्भाग्य से भूमिगत जल के अत्यधिक निष्कर्षण और अनियंत्रित शहरीकरण के चलते जल के इस स्रोत में कमी आ गई।

इसके अलावा झीलों को मुख्य रूप से जोड़ने वाली प्रणाली *(राजकलुवे)* के अवरुद्ध होने से झील और कुएं दोनों ही गैर-कार्यात्मक हो गए हैं जिसके परिणामस्वरूप उपलब्ध पेयजल आपूर्ति में कमी आ गई।

बेंगलुरु से लगभग 50 किमी दूर बेंगलुरु-हैदराबाद एक्सप्रेसवे के पास स्थित देवनहल्ली एक ऐसा शहर है जो पीने के पानी के लिए अपनी झील और खुले कुओं पर निर्भर था। महामारी के दौरान रोटरी बेंगलोर साउथ परेड, रो ई मंडल 3191 ने देखा कि देवनहल्ली अपने 38,000 निवासियों के साथ गंभीर परिस्थिति का सामना कर रहा है। इसकी झील सूख गई थी, खुले कुएं की प्रणाली गैर कार्यात्मक और बाधित हो चुकी थी और अब यह शहर गहरे नलकूपों से पंप किए गए पानी पर निर्भर हो गया था। ये बोरवेल 800-1000 फीट की गहराई तक पहुंच चुके है और यहाँ से निकाला गया पानी दिखने में तो साफ था मगर इसमें घुलित ठोस पदार्थों के कारण यह दूषित और खारा था जो पीने हेतु अनुपयुक्त था। नतीजतन, इस शहर के निवासियों को पीने और खाना पकाने के सुरक्षित पानी तक पहुंचने के लिए स्थानीय नगर परिषद द्वारा स्थापित सार्वजनिक आर ओ संयंत्रों में लाइन लगानी पड़ी। यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा था जिसका शीघ्र समाधान अत्यावश्यक था।

झील और कुओं का लेआउट।

इस समस्या का समाधान तब उत्पन्न हुआ जब हमें पता चला कि बृहत बैंगलुरु महा नगर पालिके (बीबीएमपी) बेंगलुरु के घरों से 2.1 मिलियन लीटर अपशिष्ट जल का उपचार करके उसे झीलों में पुनर्निर्देशित कर रही है जिसमें देवनहल्ली की सिहीनीर केरे (मीठे पानी की झील) भी शामिल है। इसके अतिरिक्त, देवनहल्ली शहर की नगर परिषद भी इस झील की सफाई पर काम कर रही थी। झील के समीप हमने एक पुराने, गैर-कार्यात्मक खुले कुएं की खोज की जो अवरुद्ध होने की वजह से परेशानी की वजह बन गया था।

हमने इस खुले कुएं की सफाई करके इसे बहाल करने का फैसला किया। इसे साफ करके पत्थरों की दीवार बनाने के बाद कुएं को भरना शुरू किया गया। हमें बहुत खुशी हुई जब कुछ

सिहिनीर केरे, देवनहल्ली में झील।

सिहिनीर केरे झील के बगल में पुराना निष्क्रिय खुला कुआँ।
(दाएं) कायाकल्प प्रक्रिया के बाद पानी से लबालब कुआँ।

ही दिनों के भीतर यह कुआँ पानी से भर गया। इस कुएं के पानी का परीक्षण करने पर पता चला कि यह पीने के लिए एकदम उपयुक्त था हालांकि इसमें कुछ कोलीफॉर्म बैक्टीरिया, थोड़ी गंध और निलंबित ठोस पदार्थों के साथ मलिनकिरण मौजूद था। हमारे इंजीनियरों ने सुझाव दिया कि कुछ अतिरिक्त उपचार के साथ यह पानी पेयजल का एक उत्कृष्ट स्रोत बन सकता है।

यह जानने के बाद कि इस झील को बेंगलुरु से उपचारित अपशिष्ट जल प्राप्त हो रहा है, हमने एक फिल्ट्रैशन प्लांट डिजाइन करने और एक मानक संचालन प्रोटोकॉल विकसित करने के लिए भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) के प्रोफेसरों की मदद ली। उनके निरीक्षण के बाद उन्होंने बताया कि आधा भरा होने पर यह कुआं प्रति दिन 150,000 लीटर (एलपीडी) जल प्रदान कर सकता है और पूरा भरा होने पर और भी अधिक जलापूर्ति कर सकता है। प्रोफेसरों ने दो उथले एक्वीफर फिल्टर बोरवेल खोदने का भी सुझाव दिया जो केवल 85 फीट ही गहरे होंगे। इन दो बोरवेल के बीच हमने 50,000 एलपीडी अतिरिक्त जल प्राप्त किया। इन बोरवेल के पानी का परीक्षण करने पर भी समान परिणाम मिले जिससे यह पता चला कि यह जल स्रोत भी व्यवहार्य है।

अधिकांश आवश्यक मापदंडों को पूरा करने वाले ये जल स्रोत स्वच्छ और पीने के लिए उपयुक्त साबित हुए। शेष मापदंडों को पूरा करने के लिए हम IISc के प्रोफेसरों द्वारा डिज़ाइन की गई एक एज़ूड फिल्ट्रैशन प्रणाली स्थापित कर रहे हैं। यह प्रणाली निलंबित ठोस, कीड़े, बैक्टीरिया और अन्य दूषित पदार्थों को दूर करके यह सुनिश्चित करेगी कि पानी आवश्यक पेयजल मानकों को पूरा करें। इस योजना के साथ अब हम देवनहल्ली को 2 लाख एलपीडी स्वच्छ पेयजल प्रदान करने के लिए तैयार हैं, जो इस शहर की 14 लाख एलपीडी की कुल आवश्यकता को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

यह उपलब्ध संसाधनों को बढ़ाने के लिए पानी की प्रचुर मात्रा है। जब इस प्रस्ताव को देवनहल्ली शहर की नगर परिषद में ले जाया गया तो इसे तुरंत स्वीकार करते हुए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया जिसके अंतर्गत रोटरी बैंगलोर साउथ परेड IISc द्वारा नवीन रूप से डिज़ाइन किए गए जल फिल्ट्रैशन प्रणाली को स्थापित करके इसे दो साल तक चलाएगा और साथ ही डीटीएमसी के तकनीशियन को इसके संचालन मापदंडों पर प्रशिक्षित करेगा। IISc झील, कुओं और फिल्टर से निकलने वाले पानी की गुणवत्ता पर लगातार निगरानी रखेगा और साथ ही यह सुनिश्चित करेगा कि पानी

पीने योग्य हो और दो साल बाद इस पूरी तरह से कार्यात्मक उपचार संयंत्र का स्वामित्व नगर परिषद को हस्तांतरित किया जाएगा। हमने सीएसआर निधियन के माध्यम से इस परियोजना पर ₹60 लाख खर्च किए हैं।

हमें बताया गया कि यह भारत का पहला आईपीआर (इंडरेक्ट पोटबल रीयूस) फिल्ट्रैशन तंत्र है। सीवेज के उपचारित जल को प्राकृतिक फिल्ट्रैशन के माध्यम से कुएं में भेजा जाता है और फिर यह एक नवीन फिल्ट्रैशन संयंत्र से गुजरता है जो एक ऑनलाइन फिल्टर है। इस फिल्ट्रैशन संयंत्र की डिज़ाइन आकर्षक एवं मजबूत है और इसमें कार्बन फिल्ट्रैशन, क्लोरीन मिश्रण, यूवी कीटाणुशोधन शामिल है और यह 130 माइक्रोन तक के सूक्ष्म कणों को हटाने में सक्षम है (1 माइक्रोन एक मिलीमीटर के 1/1000 के बराबर होता है)। यह इसे बहुत कुशल बनाता है और इसे रखने में बहुत कम जगह लगती है। इस इकाई का रखरखाव भी बहुत आसान है और इसका विश्राम काल दो साल में लगभग एक बार होता है, फिल्ट्रैशन की लागत ₹1.15 प्रति किलो लीटर पानी तक कम हो जाती है।

फिल्ट्रैशन इकाई का निर्माण किया गया, पानी को डीटीएमसी वितरण प्रणाली से जोड़ने के लिए आवश्यक पंप और नल की लाइनें बिछाई गई।

बहुत सारे संदेह और आलोचनाओं से निपटने के बाद इस काम की सफलता को देखने

जल उपचार संयंत्र के सामने क्लब के सदस्य।

आज यह झील पानी से लबालब भरी हुई है, कुआं पानी से लबालब भरा हुआ है, यह ट्रीटमेंट प्लांट 2 लाख एलपीडी स्वच्छ और शुद्ध पेयजल प्रदान कर रहा है।

की खुशी हमारे रोटेरियनों के लचीलेपन और आत्मविश्वास के बारे में बहुत कुछ बताती है। यह एक डेजा वू क्षण था। आज यह झील पानी से लबालब भरी हुई है, कुआं पानी से लबालब भरा हुआ है, यह ट्रीटमेंट प्लांट 2 लाख एलपीडी स्वच्छ और शुद्ध पेयजल प्रदान कर रहा है।

इससे पता चलता है कि पारंपरिक खुले कुओं के साथ झील का कायाकल्प बड़ी मात्रा में पीने का पानी प्रदान कर सकता है। इस घरेलू तकनीक को हर शहर और हर गांव में विफलता की न के बराबर संभावना और कम लागत के साथ दोहराया जा सकता है। हमारा यह प्रयास इस अवधारणा का परीक्षण करेगा और इसके परिणाम एवं कार्यप्रणाली अन्य क्षेत्रों में पानी की समस्याओं को हल करने हेतु दोहराए जा सकने वाले टेम्पलेट तैयार करेगी।

5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर आईपीडीजी जितेंद्र अनेजा और कर्नाटक के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री के एच मुनियप्पा ने इस जल उपचार संयंत्र का उद्घाटन किया। स्थानीय अधिकारियों ने रोटरी बैंगलोर साउथ परेड को उनके प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया और भविष्य में इस तरह के सकारात्मक प्रयासों के लिए अपने निरंतर समर्थन की पेशकश की।

अब हम दूसरे चरण में 4 लाख एलपीडी अतिरिक्त जल की आपूर्ति करवाने के लिए काम कर रहे हैं, और दिसंबर के अंत तक इस कार्य के पूरा होने की उम्मीद है।

लेखक रोटरी क्लब बेंगलोर साउथ परेड, रो ई मंडल 3191 के आईपीपी हैं।

Rotary PEOPLE OF ACTION

नए सदस्यों के लिए रोटरी की पाठशाला

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन, रो ई मंडल 3080 ने चंडीगढ़ के पंचकुला में रोटरी हाउस में नए सदस्यों के लिए *रोटरी की पाठशाला* कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यक्रम में 15 क्लबों की भागीदारी के साथ 100 से अधिक पंजीकरण हुए। आयोजन के लिए पूर्व अध्यक्ष बीएल रामसिसरिया एवं अध्यक्ष जीतन भाम्बरी ने सुझाव दिया।

पीआरआईपी राजा साबू ने रोटरी सदस्यों को नैतिकता के महत्व के बारे में बताया, और 2023 वर्गीकरण रोस्टर का अनावरण किया। रामसिसरिया द्वारा लिखित और डीजी अरुण मोंगिया द्वारा प्रायोजित पुस्तक *नो अबाउट रोटरी* सभी प्रतिभागियों को दी गई।

कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. रीता कालरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। बारह संकाय सदस्यों ने संगठन के इतिहास, टीआरएफ और, अनुदान देने, सदस्यता बढ़ाने, प्रेरण प्रक्रियाओं, सदस्यों के परिवारों को शामिल करने, बैठक में उपस्थिति, फेलोशिप, 4-तरफ़ा परीक्षण, रोटरी कोड सहित कई विषयों पर नए सदस्यों को सलाह दी। साथ ही नैतिकता, रोटरी थीम, ब्रांडिंग, और सार्वजनिक छवि, रोटेरियन के विशेषाधिकार और दायित्व, सोशल मीडिया रणनीतियों के साथ-साथ *माई रोटरी* और *रोटरी इंडिया* के बारे में भी बताई गई। इस आयोजन में सेवा के पांच रास्ते, सात फोकस क्षेत्र, संरचित युवा कार्यक्रम और आरएफई और आरएजी जैसे अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम और फेलोशिप

पीआरआईपी राजेंद्र साबू का स्वागत कार्यक्रम अध्यक्ष रीता कालरा ने (बाएं से) बी एल रामसिसरिया, बलराम गुप्ता, डीजी अरुण मोंगिया और क्लब अध्यक्ष जीतन भांबरी (दाएं) की उपस्थिति में किया।

सिंहपुरा स्कूल में शौचालय ब्लॉक का उद्घाटन करने के बाद रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन के सदस्य।

को भी शामिल किया गया। इसके अलावा, भाग लेने वाले क्षेत्रों के सभी एटी और एजी को कार्यक्रम में मान्यता दी गई।

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, क्लब ने चंडीगढ़ के बाहरी इलाके में स्थित सिंघपुरा स्कूल में एक नए शौचालय ब्लॉक का उद्घाटन किया। सीमित सुविधाओं और अपर्याप्त स्वच्छता के बावजूद, इस संस्थान ने 250 छात्रों को सेवा प्रदान की है। क्लब ने कक्षाओं का नवीनीकरण भी किया है और स्कूल को फर्नीचर और शैक्षिक उपकरण प्रदान किए हैं। सिंहपुरा स्कूल के छात्रों ने देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए, और उद्घाटन समारोह में नृत्य प्रस्तुत किया।

रोटरी क्लब सुंदरनगर, रो ई मंडल 3070 के अनुरोध पर क्लब ने बाढ़ प्रभावित मंडी जिले को राहत सामाग्री प्रदान की। प्रभावितों की तत्काल जरूरतों को पूरा करने के लिए 50 तिरपाल और 400 ऊनी कंबल भेजे गए। क्लब के सदस्यों ने इस कार्य में योगदान दिया।

राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन के सहयोग से क्लब ने दिल्ली से चंडीगढ़ तक अंगदान जागरूकता रैली निकाली। रैली में रो ई मंडल 3080, 3011, 3012 और 3100 मंडलों के रोटेरियन और रोटरेक्टर सहित लगभग 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया।■

नासिक में कृषि बाज़ार

रोटरी क्लब नासिक, रो ई मंडल 3030, ने उडोजी शिक्षा संग्रहालय, नासिक में एक कृषि बाजार का उद्घाटन किया।

जैविक बाजार की अवधारणा पांच साल पहले शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य स्थानीय किसानों को उचित मूल्य पर अपनी उपज बेचने में मदद करना और आम जनता को सस्ती, उच्च गुणवत्ता वाली जैविक सब्जियां प्रदान करना था। तब से इस की शुरुआत हुई और यह पूरे साल हर रविवार को सुबह 8.30 बजे से रात 10 बजे तक खुला रहता है।

''यहां सब्जियों और फलों की कीमत बाजार मूल्य से काफी कम रहती है। यहां तक कि जब कुछ सब्जियों की कीमतें आसमान छू रही होती हैं, तब भी ये किसान उचित कीमत पर सब्जियां बेचते हैं। जब कुछ महीने पहले बाजार में टमाटर की कीमत 150.00 प्रति किलोग्राम थी, तो किसानों ने इसे बाजार में केवल 30.00 प्रति किलोग्राम पर बेचा,'' क्लब के सार्वजनिक छवि निदेशक विनायक देवधर ने कहा।

हर सप्ताह कई रोटेरियन और आम जनता इस बाज़ार से लाभान्वित होते हैं।■

Rotary PEOPLE OF ACTION

सफलता के लिए अपना रास्ता तैयार करना

जयश्री

19 साल की उम्र में शादी के बाद से आत्मजा (35) के लिए जीवन यापन करना एक दैनिक संघर्ष था। उसका पति एक शराबी था और वह अपने घर में भोजन की व्यवस्था करने हेतु घरेलू सहायक के रूप में काम करती थी जो ज्यादातर दिनों में पर्याप्त नहीं होता था। ''आज, सिलाई प्रशिक्षण की वजह से मैं एक दिन में कम से कम ₹600 कमा रही हूँ। अब मैं अपनी बेटी को स्थानीय स्कूल में भेज सकती हूँ, वह कहती हैं। दो साल पहले रोटरी क्लब कलकत्ता, रो ई मंडल 3291 द्वारा प्रदान किए गए एक सिलाई पाठ्यक्रम में भाग लेने के बाद आत्मजा एक कुशल दर्जी बन गई है। अब वह साड़ियों की पिको करती हैं, और ब्लाउज, बच्चों के कपड़े और सलवार सूट सिलती हैं।

2021 में, क्लब ने *प्रोजेक्ट गति* शुरू किया - जो वंचित महिलाओं को आजीविका कमाने में मदद करने के लिए एक दीर्घकालिक टिकाऊ परियोजना है। ''हमारा लक्ष्य सुंदरबन से पुरुलिया तक फैले क्षेत्रों में हर साल पांच केंद्र स्थापित करना था। पहले दो वर्षों में हमारे RCCयों के समर्थन से 10 केंद्र स्थापित किए गए थे,'' क्लब के विशेष परियोजनाओं अध्यक्ष अरिंधम रॉयचौधरी कहते हैं।

सिलाई में महिलाओं को प्रशिक्षित करने के लिए यह केंद्र सिलाई मशीनों; और युवतियों को कंप्यूटर शिक्षा प्रदान करने के लिए डेस्कटॉप कंप्यूटरों से सुसज्जित हैं। सिंगर के सहयोग से सिलाई कक्षाएं शुरू की गई जिसने क्लब को रियायती दर पर सिलाई मशीनें प्रदान की। कंप्यूटर कक्षाएं पश्चिम बंगाल राज्य माध्यमिक शिक्षा मंडल के एक पाठ्यक्रम का पालन करती हैं और जॉर्ज टेलीग्राफ संस्थान द्वारा प्रमाणित

रोटरी क्लब कलकत्ता द्वारा स्थापित व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्रों में से एक में रो ई अध्यक्ष गॉर्डन मेकिनली और हेतर। चित्र में रो ई निदेशक अनिरुद्ध रॉयचौधरी और उनकी पत्नी शिप्रा भी शामिल हैं।

हैं। लगभग 300 महिलाओं ने सिलाई पाठ्यक्रम पूर्ण किया है और 165 विद्यार्थियों को उनके कंप्यूटर शिक्षा प्रमाण पत्र मिले हैं, अरिंधम कहते हैं। महिलाओं को अब सरकारी स्कूलों की यूनिफ़ॉर्म सिलने के लिए राज्य सरकार से नियमित काम मिल रहा है। ''उन्हें अब इस कार्य के माध्यम से स्थायी आय प्राप्त हो रही है,'' वह आगे कहते हैं।

एक सदी से दुर्गा पूजा के दौरान पुरुषों और महिलाओं के कपड़े वितरित करना इस क्लब की एक परंपरा रही है। ''इस साल हमने शर्ट, पैंट और ब्लाउज सिलने के लिए सामग्री खरीदी और इस केंद्र में कपड़ों की सिलाई के लिए इन महिलाओं को लगाया है,'' वह कहते हैं।

इस रोटरी वर्ष में इस परियोजना का नाम बदलकर *आत्मनिर्भर* कर दिया गया ताकि आत्म-स्थिरता के इसके लक्ष्य को प्रतिबिंबित किया जा सके। क्लब ने एक फ्रेंचाइजी अवधारणा के माध्यम से ऐसे 10 केंद्र स्थापित करके इसे विस्तारित करने की योजना बनाई है। ''हम अन्य रोटरी क्लबों को उनके RCCयों के माध्यम से हमारे साथ साझेदारी करने हेतु शामिल कर रहे हैं ताकि एक बड़े समुदाय तक पहुंचा जा सकें, रॉयचौधरी कहते हैं। प्रौढ़ साक्षरता कक्षाओं को भी इन केंद्रों में शामिल किया गया है और रोटरी भारत साक्षरता मिशन के समर्थन से प्रत्येक केंद्र में छह महीने की अवधि के दौरान 50 वयस्कों को बुनियादी और वित्तीय साक्षरता भी सिखाई जा रही है।

पीआरआईपी शेखर मेहता और रो ई निदेशक अनिरुद्ध रॉयचौधरी ने 3 सितंबर को खिदिरपोर डॉकयार्ड के पास मेटियाब्रुज में इस साल के पहले केंद्र का उद्घाटन किया। ''यह पूर्वी भारत के सबसे बड़े परिधान निर्माण क्षेत्रों में से एक है इसलिए यहाँ पर प्रशिक्षित होने वाली महिलाओं को स्थानीय उद्योगों से नियमित रूप से काम मिलेगा,'' रॉयचौधरी मुस्कुराते हुए कहते हैं।

गरिया के निहारिका स्कूल में स्थापित कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र में रोटरी क्लब कलकत्ता के अध्यक्ष कनक दत्त और क्लब सदस्य मित्रा।

विकलांगों के लिए गारिया के निहारिका स्कूल में दूसरा केंद्र खोला गया जो इन दिव्यांग बच्चों की माताओं के लिए वरदान साबित होगा। ''जब वे अपने बच्चों को स्कूल से ले जाने का इंतजार करती हैं तो उन्हें एक कौशल सीखने को मिलता है,'' वह कहते हैं। इस केंद्र में स्कूली बच्चों को बुनियादी कंप्यूटर शिक्षा भी प्रदान की जा रही है। हावड़ा के डोमजुर गांव में RCC रानीहाटी नेताजी समाज साथी में दो साल पहले पांच सिलाई मशीनों और तीन कंप्यूटरों के साथ स्थापित केंद्र को अब 30 सिलाई मशीनों और 11 कंप्यूटरों के साथ उन्नत किया गया। इस केंद्र से लगभग 40 महिलाएं सिलाई करके अपने समीप के बाजारों में अपनी रचनाएँ बेचती हैं।

सिलाई कक्षाओं के प्रत्येक बैच के लिए तीस महिलाएं और कंप्यूटर कक्षाओं के लिए 15 विद्यार्थी नामांकित किए जाते हैं; यह केंद्र प्रतिदिन दो शिफ्ट में काम करता है और पाठ्यक्रम अवधि छह महीने की होती है। ''हमारा लक्ष्य अगले पांच वर्षों में 65 केंद्र स्थापित करने का है, वह कहते हैं। प्रत्येक केंद्र को स्थापित करने की लागत 1.8 लाख है और RCC द्वारा पाठ्यक्रम शुल्क के रूप में 250 लिए जाते हैं। प्रत्येक केंद्र पर प्रशासनिक खर्चों को वहन करने के लिए इस राशि का उपयोग किया जाता है।''

जनवरी से क्लब अपने सभी केंद्रों पर महिलाओं के लिए साबुन/शैम्पू बनाना सिखाने की कक्षाएं शुरू करेगा। ''प्रायोजक रोटरी क्लबों द्वारा कच्चा माल प्रदान किया जाएगा और हम उत्पादों के विपणन में महिलाओं की मदद करेंगे,'' वह कहते हैं। क्लब की अगले वर्ष की योजनाओं में 1,000 किशोरियों को सर्वाइकल कैंसर से बचने के लिए टीके लगाना और सीएसआर समर्थन के साथ एक विशाल रोटरी ब्लड बैंक एवं एक कॉर्निया बैंक स्थापित करना शामिल है, जिसमें प्रत्येक की लागत ₹1 करोड़ आएगी। ■

आरआईडी अनिरुद्धा रॉयचौधरी (बाएं से) परियोजना अध्यक्ष अरिंदम रॉयचौधरी, पीआरआईपी शेखर मेहता और कनक दत्त की उपस्थिति में एक छात्र को एक डेस्कटॉप कंप्यूटर प्रस्तुत किया।

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से

2022-23 फाउंडेशन बैनर

विजेता क्लबों की सूची के साथ पात्र क्लबों द्वारा वितरण हेतु पिछले रोटरी वर्ष 2022-23 के लिए फाउंडेशन बैनर और ''एंड पोलियो नाउ'' प्रमाण पत्र जल्द ही 2023-24 के डीजीयों को भेजे जाएंगे।

पीएचएफ मान्यता बिंदुओं का हस्तांतरण

फाउंडेशन मान्यता बिन्दु उन दानकर्ताओं को दिए जाते हैं जो वार्षिक निधि या पोलियोप्लस या एक अनुमोदित वैश्विक अनुदान में योगदान करते हैं। दानकर्ताओं को इन निधियों में योगदान किए गए प्रत्येक डॉलर के लिए एक मान्यता अंक प्राप्त होता है। अक्षय निधि और निर्देशित उपहार में योगदान पात्र नहीं हैं।

दानकर्ता दूसरों को फाउंडेशन मान्यता बिंदु हस्तांतरित कर सकते हैं ताकि वे पॉल हैरिस फेलो या मल्टीपल पीएचएफ के रूप में अर्हता प्राप्त कर सकें।

- एक समय में न्यूनतम 100 फाउंडेशन मान्यता बिंदु हस्तांतरित कर सकते है और दाता को पीएचएफ मान्यता हस्तांतरण अनुरोध फॉर्म को पूरा भरके अपने हस्ताक्षर करने होते है।
- यह बिन्दु किसी व्यक्ति से किसी क्लब या मंडल को हस्तांतरित नहीं किए जा सकते।
- केवल व्यक्तिगत दानकर्ता ही अपने व्यक्तिगत खाते से मान्यता बिन्दु हस्तांतरित करने के लिए अधिकृत है।
- केवल क्लब के अध्यक्ष ही क्लब खाते से मान्यता बिन्दु हस्तांतरित करने के लिए अधिकृत है।
- एक मंडल खाते से केवल डीजी ही मान्यता बिन्दु हस्तांतरित कर सकते हैं।

भरे हुए अनुरोध फॉर्म को पीडीएफ प्रारूप में स्कैन करें और आगे की प्रक्रिया के लिए Manju.Joshi@rotary.org पर मंजू जोशी को ईमेल करें। इसे ऑनलाइन अपडेट और प्रतिबिंबित होने में 5-10 कार्य दिवस का समय लगता हैं।

2023-24 वार्षिक निधि चुनौती

पिछले तीन वर्षों में निरंतर सफलता के चलते ज़ोन 4, 5, 6 और 7 में आरआरएफसीयों ने एक बार फिर रोटरी वर्ष 2023-24 के लिए वार्षिक निधि चुनौती की घोषणा की है। इसका उद्देश्य क्लबों और व्यक्तिगत रोटेरियन दोनों से वार्षिक निधि के लिए समर्थन को बढ़ाना है। इस चुनौती के अंतर्गत मंडल, पॉल हैरिस सोसाइटी के प्रति अपने समर्पण का प्रदर्शन करके सम्मानित 'पॉल हैरिस चैम्पियनशिप अवार्ड' भी अर्जित कर सकते हैं।■

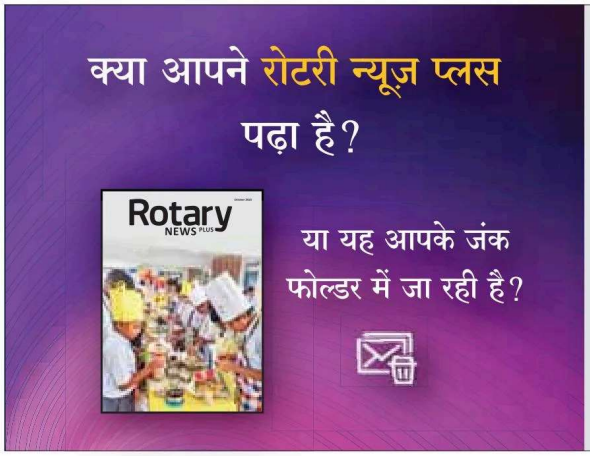

हर महीने हम आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन *रोटरी न्यूज़ प्लस* निकालते हैं। यह महीने के मध्य तक प्रत्येक सदस्यता लेने वाले सदस्य को भेजा जाता है जिनकी ईमेल आईडी हमारे पास है। हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर *रोटरी न्यूज़ प्लस* पढ़ें। हमें शिकायतें मिली हैं कि सभी ग्राहकों को हर महीने *रोटरी न्यूज़ प्लस* का ई-संस्करण नहीं मिल रहा है।

लेकिन, कुल 150,471 ग्राहकों में से हमारे पास केवल 99,439 सदस्यों की ईमेल आईडी हैं।

कृपया अपनी ईमेल आईडी को इस प्रारूप में rotarynews@rosaonline.org पर अपडेट करें: आपका नाम, क्लब, मंडल और ईमेल आईडी।

ADVT.

A FEW SEATS AVAILABLE

ADMISSIONS open 2023-24

IIS (deemed to be UNIVERSITY)

JAIPUR

FORMERLY ICG

UG / PG / Ph.D. & Professional Programmes

3-Level certificate/Diploma/Advanced Diploma alongwith Degree Programmes

Undergraduate Programmes

- B.A. ▪ B.Sc. ▪ B.Com.
- B.A. / B.Sc. / B.Com. Hons.
- B.A. / B.Sc. / B.Com. - Research
- B.A. / B.Sc. / B.Com. Hons. - Research

Specialized Programmes

- **B.Com. Hons.** (Proficiency in Chartered Accounting/Proficiency in Company Secretaryship) Specialized programmes and separate academic calendars for aspirants of CA & CS.
- **B.Com. Hons.** (Applied Accounting and Finance) Accredited by ACCA UK

UG - Professional Programmes

- B.A. (J.M.C.) ▪ B.F.A. ▪ B.C.A.
- B.Sc. Hons. (Forensic Science)
- B.Sc. Hons. (Data Analytics & Artificial Intelligence)
- B.Sc. Hons. (Home Science)
- B.Sc. (Fashion Design)
- B.Sc. Hons. (Multimedia & Animation)
- B.Sc. (Jewellery Design & Technology)
- B.B.A.
- B.B.A. (Aviation & Tourism Management)
- B.Voc. (UGC Approved)

Integrated Programmes

- B.A. B.Ed.* ▪ B.Sc. B.Ed.* *NCTE Approved
- B.Sc. M.Sc. (Nano Science & Technology)

Post Graduate Programmes

- **M.A.** - Economics, English, French, Sociology, Geography, History, Political Science, Mathematics, International Relations, Public Administration Psychology, Statistics
- **M.Sc.** - Biotechnology, Botany, Chemistry, Economics, Environmental Sc., Geography, Information Technology, Mathematics, Microbiology, Physics, Psychology, Statistics, Zoology
- M.Com. ▪ M.F.A. ▪ M.S.W. ▪ M.Sc. Home Sc.
- M.A. / M.Sc. / M.Com Fashion Design, Jewellery Design
- MA Journalism & Mass Communication
- M.B.A. (Semester Based) ▪ M.A/M.Sc in Yogic Sciences

Co-Educational Programmes

@ IISU Block, ISIM Campus, Mahaveer Marg, Mansarovar

- B.C.A. ▪ B.B.A. ▪ B.Lib.Sc.
- M.A.(Digital Media & Communication) ▪ M.C.A.
- M.B.A. (Dual Specialization, Trimester based) MBA/MCA AICTE Approved

Research Programmes

- Ph.D. : Admission through Research Entrance Test.

Short Term Courses

- Cyber Security and Cyber Law (Online)
- Certificate Course in Textile Design

Preparatory classes along with UG / PG Programmes

- Civil Services ▪ NET ▪ USCMA

College of Physiotherapy & Allied Health Sc.

(Co-Educational)
@ Sitapura Campus

- B.P.T. ▪ M.P.T. ▪ Ph.D.

Distinguishing Features

- Extra & Co-Curricular Activities
- Placement Support
- Wi-Fi enabled campus
- Conveyance Facility
- NCC, NSS, Sports
- Hostel Facility

SOME OF OUR DISTINGUISHED ALUMNAE

Padmini Solanki, IAS
Aruna Rajoria, IAS
Yasha Mudgal, IAS
Darshika Rathore Ajinkya, Endpoint, Middle East, UAE
Laxmi Tatiwala, Chartered Accountant
Shweta Sirohi Gupta, Careflight, Sydney, Australia
Beenu Dewal, 8th Rank, RAS 2018
Manvi Soni, International Shooter
Navodita Mathur, Standard Chartered Bank
Priyanka Raghuvanshi, RPS
Fg. Lieutenant Swati Rathore, Indian Air Force
Vasundhara Singh, Dietician, AIIMS, New Delhi
Fg. Off. Shivanshi Pathak, Indian Air Force
Bhawana Garg, RAS
Maj. Komal Rathore, Indian Army
Lt Karnika Singh, Indian Army
Sqn. Ldr. Unnati Sahera, Flying Officer
Shalu Mathur, Royal Bank of Scotland

FOR COUNSELLING AND ANY QUERIES, CONTACT AT:

ARTS & SOCIAL SCIENCES 93588 19994
SCIENCE 93588 19995
COMMERCE & MANAGEMENT 93588 19996
PHYSIOTHERAPY 89493 22320

Gurukul Marg, SFS, Mansarovar, Jaipur-302 020 Rajasthan (India)
+91 141 2400160, 2397906/07
Toll Free No.: 1800 180 7750
admissions@iisuniv.ac.in
www.iisuniv.ac.in

Rotary PEOPLE OF ACTION

श्री वनम, चेन्नई का एक हरा-भरा मरुद्वीप

टीम रोटरी न्यूज़

अपने तीसरे वर्ष में कदम रखते हुए, श्री वनम, जो एक एकड़ जमीन पर फैला हुआ एक पथ वन है और जिसका उद्देश्य चेन्नई टाइडल पार्क में रो ई मंडल 3232 को विशिष्ट दिखाने के लिए 32,320 पौधों का एक विशाल नर्सरी कायम करना है, उसे इस साल जुलाई में नया रूप मिला। चेन्नई निगम के आयुक्त जे राधाकृष्णन ने अपोलो अस्पताल की उपाध्यक्ष प्रीता रेड्डी, निर्वाचित डीजी महावीर बोथरा और रोटरी क्लब चेन्नई मेराकी के गो ग्रीन चेयरपर्सन शिवबाला राजेंद्रन की उपस्थिति में श्री वनम रोटरी के नाम बोर्ड का अनावरण किया। विशाल बंजर जमीन पर फलने-फूलने वाला शहरी जंगल नियमित रूप से

कॉलेज के छात्र हरियाली अभियान में हाथ बंटाते हैं।

चेन्नई निगम के आयुक्त जे राधाकृष्णन (बाएं से तीसरे) परियोजना अध्यक्ष शिवबाला राजेंद्रन (बाएं से दूसरी), अपोलो अस्पताल की उपाध्यक्ष प्रीता रेड्डी और डीजीई महावीर बोथरा (दाएं) की उपस्थिति में परियोजना का उद्घाटन करते हुए।

चलने वालों और पड़ोस में रहने वालों में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ा रहा है।

पीडीजी जे श्रीधर के कार्यकाल के दौरान ही *प्रोजेक्ट श्री वनम* का शुभारंभ हुआ था, जो जुलाई 2021 में चेन्नई निगम और एक स्थानीय गैर सरकारी संगठन कम्यूनी-ट्री के साथ साझेदारी में किया गया था। ''हमारा दृष्टिकोण पेड़ लगाने के माध्यम से पर्यावरण की सुरक्षा, मिट्टी के क्षय को रोकना और प्रदूषण रोकने का है, और वृक्षारोपण के माध्यम से हमने श्री वनम में कई साथियों को आकर्षित किया है। अब तक, हमने इन पौधों को स्व संचालित होने तक के लिए तीन साल के समझौते के साथ 7,000 पौधे लगाए हैं,'' परियोजना अध्यक्ष शिवबाला ने कहा। टाइडल पार्क में निगम के स्वामित्व वाली इस बंजर भूमि को कचरे के ढेर से पड़ी होने के बजाय, एक हरे-भरे शहरी जंगल में बदल दिया गया, जो जैव विविधता से भरपूर है, जो दूर-दूर से छोटे जानवरों, रंगीन तितलियों, कीड़ों और पक्षियों को आकर्षित करता है, जो आनंदित करता है, उन्होंने बताया।

जैसे ही मेहमानों और अधिकारियों को वन पथ के चारों ओर ले जाया गया, ''यह हम सभी के लिए गर्व और आनंद का क्षण था कि कैसे तीन साल पहले लगाए गए पौधे आठ से दस फीट ऊंचे हो गए थे, जिससे एक हरी-भरी छत बन गई थी।'' राधाकृष्णन द्वारा रोटेरियन और नागरिक अधिकारियों की उपस्थिति में प्लांट नर्सरी का उद्घाटन करने के साथ ''श्री वनम की सफलता की कहानी का जश्न मनाया गया। शिवबाला ने कहा, श्री वनम नर्सरी की एक विशेषता यह है कि पौधे पॉलिथीन या प्लास्टिक पाउच के बजाय नारियल के गोले पर उगाए गए, जो पर्यावरण के अनुकूल हैं।''

धनलक्ष्मी श्रीनिवासन कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, अन्नाईवेलानकन्नी ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस और पेट्रीशियन कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस के छात्र नर्सरी के शुरू होने से पहले अपने स्वयंसेवी कार्यों के साथ कार्यक्रम के गुमनाम नायक थे। इस भव्य कार्यक्रम में रोटरी क्लब चेन्नई मेराकी, मद्रास कोनेमारा, अडयार, मद्रास टी नगर, मद्रास नुंगमबक्कम, मेराकी एनेक्स के अध्यक्ष और रोटरैक्टर्स उपस्थित थे। ■

एक कैंसर रोगी से खुशहाल महिला तक

चेहरे पर चिंता और भय का भाव लिए 60 वर्षीय ज्ञानम्बल ने 30 किमी की यात्रा करके रोटरी क्लब रासीपुरम, रो ई मंडल 2982 और स्थानीय इनर व्हील क्लब द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किए गए स्तन कैंसर स्क्रीनिंग शिविर में जाँच के लिए आई। वह अपने स्तन पर एक छोटे, लेकिन ध्यान देने लायक घाव की स्थिति जानना चाहती थी और उपकरणों की मदद से जाँच करने पर वह घाव घातक पाया गया।

स्तन कैंसर स्क्रीनिंग शिविर में ज्ञानम्बल (दाएं)।

दोनों क्लबों ने बीमारी को बेहतर ढंग से समझने और उपचार के बारे में निर्णय लेने के लिए आगे के परीक्षणों से गुजरने में उसकी आर्थिक मदद की। ''हमने उसे सर्जरी के बाद उसके घाव के आकार को कम करने के लिए कीमोथेरेपी कराने की सलाह दी। उन्हें रेडिएशन थेरेपी भी दी गई थी,'' रोटरी क्लब रासीपुरम के पूर्व अध्यक्ष एन पी रामास्वामी ने याद करते हुए कहा।

परामर्श के बाद, क्लबों ने सलेम के सरकारी मोहन कुमारमंगलम अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक से संपर्क किया। डॉक्टर ने उसके मेडिकल रिकॉर्ड को देखने के बाद, ज्ञानम्बल और क्लबों को आश्वासन दिया कि उसका इलाज अस्पताल में किया जा सकता है और सभी खर्च प्रधान मंत्री बीमा योजना के अंतर्गत आएंगे। अस्पताल में इलाज के बाद, वह अब पूरी तरह से ठीक हो गई है, उनकी जेब से एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ। कैंसर से लड़ने के लिए, *प्रोजेक्ट मलर* को धन्यवाद, जो रो ई मंडल 2981 की एक प्रमुख पहल है जो महिलाओं में स्तन कैंसर की जांच करती है।

पिछले साल, इस परियोजना को तत्कालीन रो ई अध्यक्ष जेनिफर जोन्स ने तत्कालीन रो ई मंडल एएस वेंकटेश और महेश कोटबागी और आईपीडीजी पी सरवनन की उपस्थिति में शुरू किया था। इसके बाद, जेनवर्क्स, जो स्क्रीनिंग मशीनें बनाती है, के साथ साझेदारी में लगभग 20 स्तन स्क्रीनिंग शिविर आयोजित किए गए, जिसमें परियोजना अध्यक्ष बाबू कंडासामी ने इसका नेतृत्व किया। रामास्वामी ने कहा, ''वह अन्य राज्यों में भी इसी तरह के शिविर आयोजित करने का प्रयास कर रहे हैं और सीएसआर फंड के माध्यम से स्क्रीनिंग मशीनें लगाने की योजना बना रहे हैं।'' *प्रोजेक्ट मलर* ने ज्ञानम्बल को एक खुशहाल, रोग-मुक्त और एक नया खिलता जीवन दिया है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

पहाड़ों को हरा-भरा करना और जीवन को रोशन करना

जयश्री

रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी द्वारा एक धनगर आदिवासी को सौर प्रकाश प्रणाली और धुआं रहित चूल्हा दिया गया।

रोटरी क्लब पुणे स्पोर्ट्स सिटी, आर रो ई मंडल 3131 में 65 रोटेरियन वाला 28 साल पुराना क्लब, पिछले पांच वर्षों से लगातार पर्यावरण संरक्षण परियोजनाओं में शामिल है। क्लब का प्रयास बानेर हिल्स, जो कि ट्रेकर्स के बीच लोकप्रिय पहाड़ी है, को हरा-भरा और साफ-सुथरा बना रहा है। यह एक चालू परियोजना है और इस वर्ष, जैव विविधता संरक्षण पर केंद्रित एक गैर सरकारी संगठन, वसुंधरा अभियान और एक आईटी बहुराष्ट्रीय कंपनी फिनास्ट्रा के साथ, पहाड़ी की ढलानों पर 100 पौधे लगाए गए थे। क्लब के सदस्य संदेश सावंत ने कहा, वसुंधरा टीम के मार्गदर्शन के साथ, हमने वैज्ञानिक तरीके से पौधे लगाए। इस प्रक्रिया में गड्ढे खोदना और उन्हें खाद से समृद्ध करना शामिल था। पौधों की उत्तरजीविता और विशाल पेड़ों के रूप में विकास सुनिश्चित करने के लिए, पेड़ों के गड्ढों का एक नेटवर्क रणनीतिक रूप से निरंतर समोच्च ट्रेंचिंग के माध्यम से जोड़ा गया था, जिससे पानी के कुशल रिसाव और बंटवारे को सक्षम किया जा सके।

पास के इलाके पाशान में एनसीएल स्कूल के छात्रों और फिनस्ट्रा के कर्मचारियों ने रोटेरियन और वसुंधरा टीम के साथ हरियाली अभियान के लिए स्वेच्छा से भाग लिया। फिनस्ट्रा ने ₹63,000 की परियोजना लागत प्रायोजित की।

एक अन्य पर्यावरण देखभाल पहल में, क्लब ने पुणे के पुरंदर तालुक में सासवड और जेजुरी के घास के मैदानों के बीच बसे जाधववाड़ी और मोरगांव की पहाड़ी बस्तियों में रहने वाली धनगर आबादी को 30 धुआं रहित चूल्हे, सौर पैनल और मशालें उपहार में दीं। धनगर, एक खानाबदोश जनजाति, अपने मवेशियों के लिए चारे की तलाश में इन घास के मैदानों पर निर्भर हैं। जब वे इन भूमियों से यात्रा करते हैं, तो वे अक्सर जंगल में तंबू लगाते हैं। बिजली तक पहुंच न होने के कारण, क्लब द्वारा प्रदान किए गए सौर लैंप अंधेरे को दूर करने में मदद करते हैं, जिससे

क्लब के सदस्य बानेर हिल्स की ढलानों पर पौधे लगाते हुए।

रात्रिचर वन्यजीवों द्वारा उत्पन्न संभावित खतरों से उनकी सुरक्षा सुनिश्चित होती है। ''इसके अलावा, धुआं रहित चूल्हों ने उन्हें ऊबड़-खाबड़ चूल्हे पर खाना पकाने की शैली को बदलने में मदद की है। इससे उनकी दैनिक खाना पकाने की दिनचर्या में आराम और सुरक्षा आई है,'' सावंत ने कहा।

पुणे स्थित गैर सरकारी संगठन, ग्रासलैंड्स ट्रस्ट ने लाभार्थियों की पहचान करने में मदद की और क्लब ने पुणे स्पोर्ट्स सिटी रोटरी ट्रस्ट द्वारा अर्जित ब्याज से ₹95,000 की परियोजना लागत को पूरा किया, जिसे दिवंगत आईपीपी कैनेडी सैमुअल द्वारा शुरू किया गया था।■

परीक्षा की तैयारी के लिए एक ऐप

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3142 के डीजी मिलिंद कुलकर्णी ने कक्षा 10 के छात्रों को उनकी राज्य बोर्ड परीक्षा की तैयारी में मदद करने के लिए *आइडियल स्टडी* नामक एक ऐप की परिकल्पना की है। सॉफ्टवेयर समाधान प्रदाता प्रिज़्म सॉल्यूशंस द्वारा विकसित ऐप, रोटरी क्लबों द्वारा पूरे महाराष्ट्र में छात्रों और शिक्षकों को वितरित किया जायेगा। कस्टम-निर्मित अध्ययन उपकरण में सभी विषयों के लिए विस्तृत वर्कशीट और एमसीक्यू शामिल हैं, और अध्ययन तकनीक और उत्तर प्रदान करता है। महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक उत्पादन और पाठ्यचर्या अनुसंधान बोर्ड, पुणे बालभारती ऐप को लाइसेंस देता है। इसे Google Play Store से डाउनलोड किया जा सकता है और किसी भी डिजिटल माध्यम जैसे कंप्यूटर, मोबाइल फोन या टैब में इंस्टॉल किया जा सकता है।

रोटरी क्लब नवी मुंबई द्वारा दिए गए आइडियल स्टडी ऐप प्राप्त करने के बाद छात्र। ऐप के डेवलपर रोटेरियन अमोल कामत बाएं से दूसरे स्थान पर नज़र आ रहे हैं।

₹1,111 की लागत वाला यह ऐप सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के बीच वितरण के लिए रोटरी क्लबों को ₹65 की रियायती कीमत पर दिया गया है। रोटरी क्लब नवी मुंबई ने ऐप के लगभग 530 कूपन खरीदे हैं, और रोटरी क्लब कल्याण ने रो ई मंडल 3141 के साथ एक संयुक्त रियोजना में इसे वाडा तालुक में 700 छात्रों को वितरित किया है।■

पेरिस साइक्लिंग कार्यक्रम में रो ई मंडल 3211 की टीम

टीना एंटनी

पेरिस-ब्रेस्ट-पेरिस (पीबीपी) पेरिस से ब्रिटनी के ब्रेस्ट तक जाने और लौटकर फिर से पेरिस आने की 1,200 किमी की एक कठिन स्व-समर्थित यात्रा है और यह दुनिया का सबसे प्रसिद्ध और सबसे पुराना शौकिया साइक्लिंग कार्यक्रम है। यह 1891 में शुरू हुआ था और हर चार साल में आयोजित किया जाता है। पीबीपी का सबसे नवीनतम संस्करण 20 अगस्त, 2023 को आयोजित किया गया था। पेरिस के ऑडैक्स क्लब ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया और चुनौती 90 घंटों में 12,000 मीटर की ऊंचाई के साथ 1,219 किमी तय करने की थी। ऑडैक्स के संबद्ध क्लबों के साइकिल चालक जिन्होंने 200, 300, 400 और 600 किमी पूर्ण किए है, इस आयोजन में भाग लेने हेतु चयनित हुए।

इस वर्ष 71 देशों के लगभग 6,800 साइकिल चालकों ने भाग लिया जिनमें रो ई मंडल 3211 के चार रोटेरियन - रोटरी क्लब कोट्टायम सदर्न के जित्तू सेबेस्टियन और मेबिन अब्राहम, रोटरी क्लब पाला के अध्यक्ष डॉ जोस कुरुविला और रोटरी क्लब कोट्टायम नॉर्थ के किरण सी कुरियन - शामिल थे।

पीबीपी के एक शानदार अनुभव के साथ लौटी टीम के बाद जित्तू सेबेस्टियन के साथ बातचीत का एक अंश यहाँ दिया गया है। जित्तू ने समय पर यह दौड़ पूरी की और गर्व से मुझे उनके द्वारा जीता गया वो प्रतिष्ठित पदक दिखाया।

आपने साइक्लिंग को एक खेल के रूप में कैसे अपनाया?

हमारे दोस्तों की टीम ने हमारी फिटनेस और स्वास्थ्य में सुधार लाने हेतु एक एरोबिक व्यायाम के रूप में साइकिल चलाना शुरू किया। जल्द ही हमने लंबी दूरी की धीरज साइक्लिंग शुरू की और दक्षिणी भारत के अनेक साइक्लिंग क्लबों द्वारा आयोजित कई शौकिया साइकिल सवारियों में भाग लिया।

आप रो ई मंडल 3211 से एक टीम के रूप में गए थे, हमें इस प्रीमियर इवेंट में अपने अनुभव के बारे में बताएं?

एक वाक्य में कहें तो यह मेरे जीवन की सवारी थी। मैंने अपनी पिछली किसी भी सवारी में इस तरह की चुनौतियों का सामना नहीं किया। असामान्य जलवायु, उबड़-खाबड़ इलाके, उच्च ऊंचाई जिससे हमें निपटना था और अपरिचित भोजन ने तो हमारी बहुत ही परीक्षा ली। सड़कें एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी तक जा रही थीं। हमें रिपोर्टिंग बिंदुओं पर भोजन के लिए लंबी कतारों में इंतजार करना पड़ा; दिन बहुत गर्म और रातें बेहद ठंडी थी और साइकिल चलाते समय बहुत तेज चलने वाली प्रतिकूल हवाएं थका रही थी और हमारी गति को धीमा कर रही थी।

यह मेरे जीवन की सवारी थी। मैंने अपनी पिछली किसी भी सवारी में इस तरह की चुनौतियों का सामना नहीं किया। असामान्य जलवायु, उबड़-खाबड़ इलाके, उच्च ऊंचाई जिससे हमें निपटना था और अपरिचित भोजन ने तो हमारी बहुत ही परीक्षा ली।

बाएं से: जोस कुरुविला, जित्तू सेबेस्टियन, किरण कुरियन और मेबिन अब्राहम एफिल टॉवर, पेरिस के सामने।

दौड़ पूरी करने के बाद अपने पदक के साथ जित्तू सेबेस्टियन।

लगभग डेढ़ दिन बाद मुझे एहसास हुआ कि मैं रिपोर्टिंग समय से लगभग 90 मिनट पीछे चल रहा था इसलिए मैंने भोजन और नींद दोनों को छोड़ने का फैसला किया। मैंने रास्ते में चिंताशील ग्रामीणों द्वारा प्रदान किए गए शीतल पेय और फल ही ग्रहण किए। लेकिन निद्राहीन रातें और भूख ने मुझे शरीर और आत्मा दोनों से कमजोर बना दिया। मैं परेशान था और फोन कॉल एवं संदेशों को नज़रअंदाज़ करने लगा लेकिन एक तरह से इसने मेरा समय ही बचाया। मेरी अंतरात्मा की आवाज़ ने मुझे आगे बढ़कर दोबारा लड़ने और अपनी हड्डियों की थकान को दूर करके उनमें फिर से जान डालने हेतु प्रेरित किया। भगवान की कृपा से अंतिम 10 घंटों में, मैं अपनी सामान्य गति पर फिर से लौट पाया और लगभग आधे घंटे का समय बचा था जब मैं इस प्रतिष्ठित दौड़ को पूरा कर सका।

अफसोस की बात है कि मेरे साथी सवार किरण कुरियन को भी यह दौड़ पूरी करनी थी मगर वे इसे खत्म करने के कुछ सौ किलोमीटर पहले ही एक दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना का शिकार हो गए और आगे बढ़ने में असमर्थ थे।

आप इस कार्यक्रम में रोटरी का प्रदर्शन कैसे कर पाए?

इस दौड़ के लिए संबद्ध टी-शर्ट पहनना अनिवार्य था लेकिन इस दौड़ से पहले हमें अपनी रोटरी टी-शर्ट पहनने का अवसर मिला बेशक उसपर पीबीपी रेस का लोगो मौजूद था। कई साइकिल चालक चिंतित थे और हमने उन्हें समझाया कि हम दक्षिण भारत के रोटेरियन है।

(लेखक रो ई मंडल 3211 की डीजीएन हैं।)

चिकमंगलूर गांव में मृदा स्वास्थ्य सेमीनार

टीम रोटरी न्यूज़

डीजी बी सी गीता (बाएं से चौथी) पौधे को पानी देकर सेमिनार का उद्घाटन करती हुईं।

रोटरी क्लब चिकमंगलूर कॉफीलैंड, रो ई मंडल 3182 ने मृदा स्वास्थ्य संरक्षण पर जोर देने के लिए चिकमंगलूर के मुगुलावल्ली गांव में किसानों और कॉफी उत्पादकों के लिए एक सेमीनार आयोजित किया जो इस रोटरी वर्ष की मंडल परियोजना है। कार्यक्रम में भाग लेते हुए डीजी बी सी गीता ने मिट्टी की उर्वरता और स्वस्थ कृषि पद्धतियों के महत्व पर जोर दिया।

क्लब अध्यक्ष तनोज कुमार ने कीटनाशकों और खरपतवारनाशकों जैसी कृषि संबंधी चीजों के अवैज्ञानिक उपयोग को रोकने की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला। गांव के रहने वाले क्लब सदस्य जगदीश एम एच और आनंद एम ने कृषि और बागवानी विभागों और किसान संघ सहित किसानों और उनसे जुड़े संगठनों को एक साथ लाने में मदद की। इस आयोजन ने 400 कृषकों और 50 रोटेरियनों को आकर्षित किया।

मुदिगेरे के कॉलेज ऑफ हॉर्टिकल्चर के डीन, नारायण एस मावरकर ने दर्शकों को जैविक खेती, खाद बनाने के तरीकों, वर्मीकम्पोस्टिंग, ग्रीष्मकालीन जुताई, कृषि क्षेत्र की खाद, मिट्टी का पत्तों से ढक जाना, हरी खाद फसलों और जैव उर्वरकों के बारे में जानकारी दी।■

आपके गवर्नर्स

बी सी गीता

शिक्षा प्रबंधन

रोटरी क्लब बालेहोन्नूर, रो ई मंडल 3182

स्थानीय आवश्यकताओं को प्राथमिकता देना

बी सी गीता कहती हैं, ''रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ावा देने और इसे एक घरेलू नाम बनाने के लिए स्थानीय समुदाय को संबोधित करने की ज़रूरत है।'' उनके मंडल में व्यापक ग्रामीण क्षेत्र शामिल हैं, और हमारा प्राथमिक ध्यान ग्रामीण लोगों, विशेषकर संघर्षरत किसानों के जीवन को बेहतर बनाने पर होगा। वह कहती हैं, ''कृषि महाविद्यालयों के साथ सहयोग करते हुए, रो ई मंडल 3182 के क्लब किसानों को मृदा परीक्षण और उसके पोषक तत्वों को संतुलित करने में सहायता कर रहे हैं, किसानों को स्वस्थ और प्रचुर मात्रा में फसल पैदा करने में मदद करने के लिए।''

वह अपने मंडल में डीईआई प्रतिनिधित्व में सुधार के लिए प्रत्येक क्लब से कम से कम तीन महिलाओं को सदस्य के रूप में भर्ती करने का आह्वान कर रही है। सदस्यों को व्यस्त और शामिल रखने के लिए, वह क्लब अध्यक्षों से मौजूदा सदस्यों का सम्मान करने और उनके परिवारों को सराहना महसूस कराने का आग्रह करती है। सदस्यता वृद्धि के लिए, वह संभावित रोटरी सदस्यों को क्लब और जिला बैठकों/कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए निमंत्रण देती है।

वह टीआरएफ के लिए 300,000 डॉलर इकट्ठा करने की योजना बना रही है। अपने कार्यकाल के दौरान उनका प्राथमिक ध्यान मूल्य-आधारित शिक्षा और सड़क सुरक्षा से संबंधित परियोजनाओं को क्रियान्वित करने पर होगा। ई-कचरे को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने के लिए जिले ने चैन केमिस्ट्री के साथ साझेदारी की है। जबकि रोटरी क्लब ई-कचरा इकट्ठा करते हैं, कंसल्टेंसी फर्म इसका सुरक्षित निपटान सुनिश्चित करती है।

वी श्रीनिवास मूर्ति

बिजली और सौर

रोटरी क्लब बैंगलोर पीन्या, रो ई मंडल 3192

LGBTQIA का समर्थन

श्रीनिवास मूर्ति को सार्वजनिक स्थानों पर ट्रांसजेंडर-अनुकूल सुविधाओं की कमी पर एक बड़ी चिंता थी। जिला गवर्नर के रूप में, उन्होंने अब ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए विशेष शौचालय बनाने की एक परियोजना शुरू की है। वह परिवर्तन लाने की रोटरी की शक्ति में विश्वास करते हैं और एलजीबीटीक्यूआईए सदस्यों का सक्रिय रूप से स्वागत करते हैं ''जो रोटरी के आदर्शों, नैतिक मानकों और सेवा परियोजनाओं में योगदान करने की इच्छा के लिए प्रतिबद्ध हो सकते हैं।''

मूर्ति सीएसआर भागीदारों को इसकी परेशानी मुक्त प्रक्रियाओं और उच्च प्रबंधन का हवाला देते हुए टीआरएफ के माध्यम से योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। उनका जिला पहले ही सीएसआर फंडिंग के माध्यम से ₹3 करोड़ एकत्र कर चुका है। उन्होंने सीएसआर साझेदारी के माध्यम से भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर में ₹10 करोड़ की योग और पुनर्वास सुविधा स्थापित करने की योजना बनाई है।

वह रोटरी को व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास पर केंद्रित एक सहायक परिवार के रूप में प्रचारित करते हैं। इन का लक्ष्य टीआरएफ के लिए 1.5 मिलियन डॉलर एकत्र करना है। उनके का समर्थन ने 500 वंचित महिलाओं को दुधारू गायें उपलब्ध कराने के लिए कर्नाटक मिल्क फेडरेशन के साथ साझेदारी की है। उनका इरादा इस साल 200 हृदय सर्जरी पूरी करके रो ई मंडल 3190 (2023 तक 11,000 सर्जरी) की विरासत को जारी रखने का है।

से मिलिए

किरण ज़ेहरा

मंजू फड़के

कॉर्पोरेट सलाहकार

रोटरी क्लब पुणे डेक्कन जिमखाना, रो ई मंडल 3131

शहरी क्षेत्रों में रोटरी की रीब्रांडिंग

कॉर्पोरेट जगत में, जहां से मैं आती हूं, आप आदेश देते हैं और उनके क्रियान्वित होने की प्रतीक्षा करते हैं। लेकिन रोटरी में, यह टीम वर्क, सहानुभूति और दूसरों को सशक्त बनाने के बारे में है,'' मंजू फड़के कहती हैं। वह रोटरी के निर्बाध वार्षिक परिवर्तन से पूरी तरह प्रभावित हैं, जिसने उल्लेखनीय सटीकता और प्रभावकारिता के साथ 540 नए डीजी और 46,000 क्लब अध्यक्ष बनाए हैं।

सदस्यता को बढ़ावा देते हुए, वह क्लब अध्यक्षों से आग्रह करती है कि वे रोटेरियन होने का गौरव प्रदर्शित करें। ''मेरे द्वारा संबोधित प्रत्येक कार्यक्रम में मैं इस बात पर प्रकाश डालती हूं कि मेरे जिले ने 850 मिलियन डॉलर की परियोजनाएं कैसे पूरी की हैं।'' क्लब के जैविक विकास के लिए, मंजू क्लब अध्यक्षों को सदस्यों की संख्या से अधिक क्लब की गुणवत्ता को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करती है।

मंजू ने टीआरएफ के लिए 3 मिलियन डॉलर जुटाने का लक्ष्य रखा है। उनकी योजना 1,000 बाल चिकित्सा सर्जरी पूरी करने, खुशहाल आंगनबाड़ियों की स्थापना करने और बोरवेल को रिचार्ज करने की है। जबकि रोटरी की ग्रामीण क्षेत्रों में मजबूत उपस्थिति है, ''शहरी परिदृश्य में रीब्रांडिंग की आवश्यकता है। *रोटरी ग्रीन सोसाइटी* की पहल के माध्यम से प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन और पर्यावरणीय कल्याण जैसी शहरी समस्याओं का समाधान किया जाएगा,'' मंजू कहती हैं।

निर्मल जैन कुनावत

सीए कराधान

रोटरी क्लब उदयपुर, रो ई मंडल 3056

छात्रों पर ध्यान दें

निर्मल जैन कुनावत कहते हैं, अगर हम अपने मानसिक स्वास्थ्य और आत्महत्या रोकथाम परियोजनाओं के माध्यम से एक भी बच्चे को आत्महत्या करने से बचा सकते हैं, तो मैं इसे अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मानूंगा।'' कोटा में 25 छात्रों की आत्महत्या की दुखद घटना के बाद उनका जिला छात्रों के लिए मानसिक स्वास्थ्य पहल और आरवाईएलए को सख्ती से चला रहा है। क्लबों को मानसिक स्वास्थ्य पर काम करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, उन्होंने छात्रों के मनोबल को बढ़ाने वाली नवीन पहलों के लिए नकद पुरस्कार शुरू किए हैं।

मंडल ने सिनेमा ऑन व्हील्स परियोजना भी शुरू की है, जहां 52 सीटों वाली, शानदार बस गांवों और शहरों दोनों में छात्रों को अच्छे स्पर्श/बुरे स्पर्श जैसे विषयों पर यूनिसेफ द्वारा अनुमोदित फिल्में दिखाती है। इस वर्ष शुरू की गई अन्य परियोजनाएं हैं पिंक ऑटो, स्कूल गोद लेना और वंचित बच्चों वाले स्कूलों को ई-लर्निंग सॉफ्टवेयर प्रदान करना। जिले की मजबूत सोशल मीडिया उपस्थिति ने क्षेत्र में रोटरी के ब्रांड को काफी बढ़ावा दिया है।

वह ''आंतरिक मुद्दों को हल करके और सदस्यों की असुरक्षाओं पर काम करके मौजूदा क्लबों को मजबूत करने'' पर काम कर रहे हैं, जिसका लक्ष्य रोटरी परियोजनाओं में शामिल व्यक्तियों, जैसे स्कूल प्रिंसिपल या सीएसआर भागीदारों को आमंत्रित करके 10 प्रतिशत की वृद्धि करना है। उनका टीआरएफ लक्ष्य 150,000 डॉलर है।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

फिनलैंड और आइसलैंड...
जहां खुशियां राज करती हैं

मनोज दिसाई

विगत तीन वर्षों से दुनिया के सबसे खुशहाल राष्ट्रों की सूची में शीर्ष पर बना हुआ है।

उत्तरी यूरोप स्थित, फ़िनलैंड पृथ्वी के उत्तरी बिंदु के नज़दीक और भौगोलिक रूप से दूरस्थ देशों में से एक है और गंभीर जलवायु परिस्थितियों के अधीन है। फ़िनलैंड का लगभग दो-तिहाई भाग घने जंगलों से आच्छादित है, इस कारण ये यूरोप का सबसे सघन वन वाला देश है।

ग्लेशियरों के अत्यधिक भार के नीचे दबे, फ़िनलैंड का भूभाग हिमनदों के पलटने के कारण ऊपर उठ रहा है। इसका सर्वाधिक प्रभाव बोथोनिया की खाड़ी के आसपास देखा जा सकता है, जहां भूमि प्रति वर्ष लगभग 1 सेमी (0.4 इंच) ऊपर उठ रही है। परिणामस्वरूप, पूर्व में रहा समुद्र तल धीरे-धीरे शुष्क भूमि में परिवर्तित हो रहा है: देश का जमीन क्षेत्र सालाना लगभग 7 वर्ग किमी की दर से बढ़ रहा है। या यूँ कहें कि फ़िनलैंड समुद्र से ऊपर उठ रहा है।

यहाँ के परिदृश्य को अधिकतर शंकुधारी टैगा जंगलों और फेन से ढका पाएंगे, कृषि योग्य भूमि यहां बहुत कम है। देश के कुल क्षेत्रफल का 10 प्रतिशत जल...तालाब, झीलें, नदियाँ और 78 प्रतिशत भाग में जंगल व्याप्त

है। जंगल में पेड़ों की चीड़, स्प्रूस, बर्च और अन्य प्रजातियाँ उपलब्ध हैं। फ़िनलैंड यूरोप में लकड़ी का सबसे बड़ा उत्पादक है और जिस कागज़ पर यह पत्रिका - रोटरी न्यूज़ - छपती है, वह इस नॉर्डिक देश से ही आयात किया जाता है। यहाँ सबसे अधिक ग्रेनाइट की चट्टान पाई जाती हैं।

हेलसिंकी, जहां 1952 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक आयोजित हुए थे, 2012 में वर्ल्ड डिज़ाइन कैपिटल घोषित हुई थी। यह सम्मान शहरी जीवन शैली के विश्व के उच्चतम मानकों में से एक है। 2011 में, ब्रिटिश पत्रिका *मोनोकल* ने दुनिया में रहने लायक शहरों में हेलसिंकी को सर्वश्रेष्ठ शहर का दर्जा दिया था।

फिनलैंड में रहने वाले रो इ निदेशक विरपी होन्काला ने हमें भ्रमण करवाया और हम बेहद भाग्यशाली रहे कि हमें उनका सानिध्य मिला। उन्होंने हमें एस्पू, पोर्वू और हेलसिंकी दिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी और उत्तरी फ़िनलैंड में राहे स्थित अपने घर आने का खुला निमंत्रण दिया। विशिष्ट आतिथ्य और बेहतरीन फिनिश भोजन के लिए हम उनके और उनके भाई कारी के आभारी हैं।

सिबेलियस स्मारक एक फ़िनिश कलाकार ईला हिल्टुनेन द्वारा बनाई गई प्रतिमा है जिसका नाम है *पासियो म्यूज़िके।* सितंबर, 1967 में इसका अनावरण किया गया था। 1957 में संगीतकार की मृत्यु के बाद इस प्रतिमा ने सिबेलियस सोसाइटी द्वारा आयोजित एक प्रतियोगिता जीती थी। मूल रूप से इसने अमूर्त कला की खूबियों और खामियों के बारे में एक जीवंत बहस छेड़ दी थी और हालांकि डिजाइन स्टाइलिश ऑर्गन पाइप की तरह दिखता था, लेकिन यह ज्ञात था कि संगीतकार ने ऑर्गन के साथ बहुत कम संगीत रचा था। मुख्य शिल्प के बगल में सिबेलियस का चेहरा स्थापित कर हिल्टुनेन ने अपने आलोचकों को सम्बोधित किया है।

सिबेलियस के संगीत के प्रतीक में निर्मित शिल्प में 600 से अधिक खोखले स्टील पाइपों की एक श्रृंखला है जो एक लहर की तरह पैटर्न में एक साथ जोड़ी गई हैं। बड़े स्मारक का वजन 24 टन है और इसका माप 28 फीट×34 फीट×21 फीट है।

इसके बाद हम शहर के विशिष्ट पर्यटन स्थल हेलसिंकी कैथेड्रल गए, जिसका विशाल

जीवन प्रत्याशा

आइसलैंड

महिला: 84.5 वर्ष

पुरुष: 81.8 वर्ष

भारत

महिला: 68.9 वर्ष

पुरुष: 65.8 वर्ष

लैंडमैनलाउगर हाईकिंग ट्रेल्स पर एक झील।

हरा गुंबद चार छोटे गुंबदों से घिरा हुआ है। नियोक्लासिकल शैली में बनी इस राजसी इमारत को कार्ल लुडविग एंगेल ने अपने सीनेट स्कायर लेआउट के चरमोत्कर्ष पर डिजाइन किया था। यह उनके द्वारा डिज़ाइन की गई छोटी-छोटी इमारतों से घिरा हुआ है। चर्च का प्लान ग्रीक क्रॉस (एक वर्ग केंद्र और चार समबाहु भुजाएँ) के डिज़ाइन पर है जिस के बीच में एक वर्गाकार और इसकी भुजाऐं मुख्य दिशाओं में जाती हैं, से प्रत्येक भुजा समान है, भुजा के अग्रभाग में एक रास्ता बना हुआ है।

हमने आइसलैंड की यात्रा पर जाने का फैसला किया, जो दुनिया का तीसरा सबसे खुशहाल देश है, ये सोचते हुए कि ऐसे देश के लोग खुशहाल कैसे रह सकते हैं जो आए दिन भूकंप, ज्वालामुखी और ग्लेशियरों की अनिश्चितताओं से परेशान रहते हैं और इन प्राकृतिक आदाओं की वजह से ढेर सारी मुश्किलों का सामना कर रहे हैं।

वास्तव में हम उनकी जीवनशैली देख कर चकित रह गए थे! इतनी सारी बाधाओं के बावजूद, वे जिस स्वस्थ जीवन शैली का पालन करते हैं, वह उन्हें अन्य लोगों पर बढ़त दिलाती है और उनकी औसत जीवन प्रत्याशा बढ़ाती है... विश्वास करें या न करें... दुनिया में चौथी सबसे ऊंची! यहां महिला की औसत जीवन प्रत्याशा 84.5 वर्ष और पुरुष की 81.8 वर्ष है। भारत में महिलाओं की जीवन प्रत्याशा 68.9 वर्ष और पुरुषों की 65.8 वर्ष होने के कारण हम बहुत पीछे हैं।

आइसलैंड में आधी रात को भी सूरज की मौजूदगी और इसके प्रसिद्ध भूतापीय चमत्कारों ने हमें सबसे अधिक आकर्षित किया। देश भू-तापीय गतिविधि का एक पावरहाउस है और इससे उत्पादित बिजली के परिणामस्वरूप शानदार वातानुकूलित गर्म घर और कई गर्म आउटडोर स्विमिंग पूल बने हुए हैं। कटला में हमने बर्फ की गुफाओं और हिमनद चमत्कारों

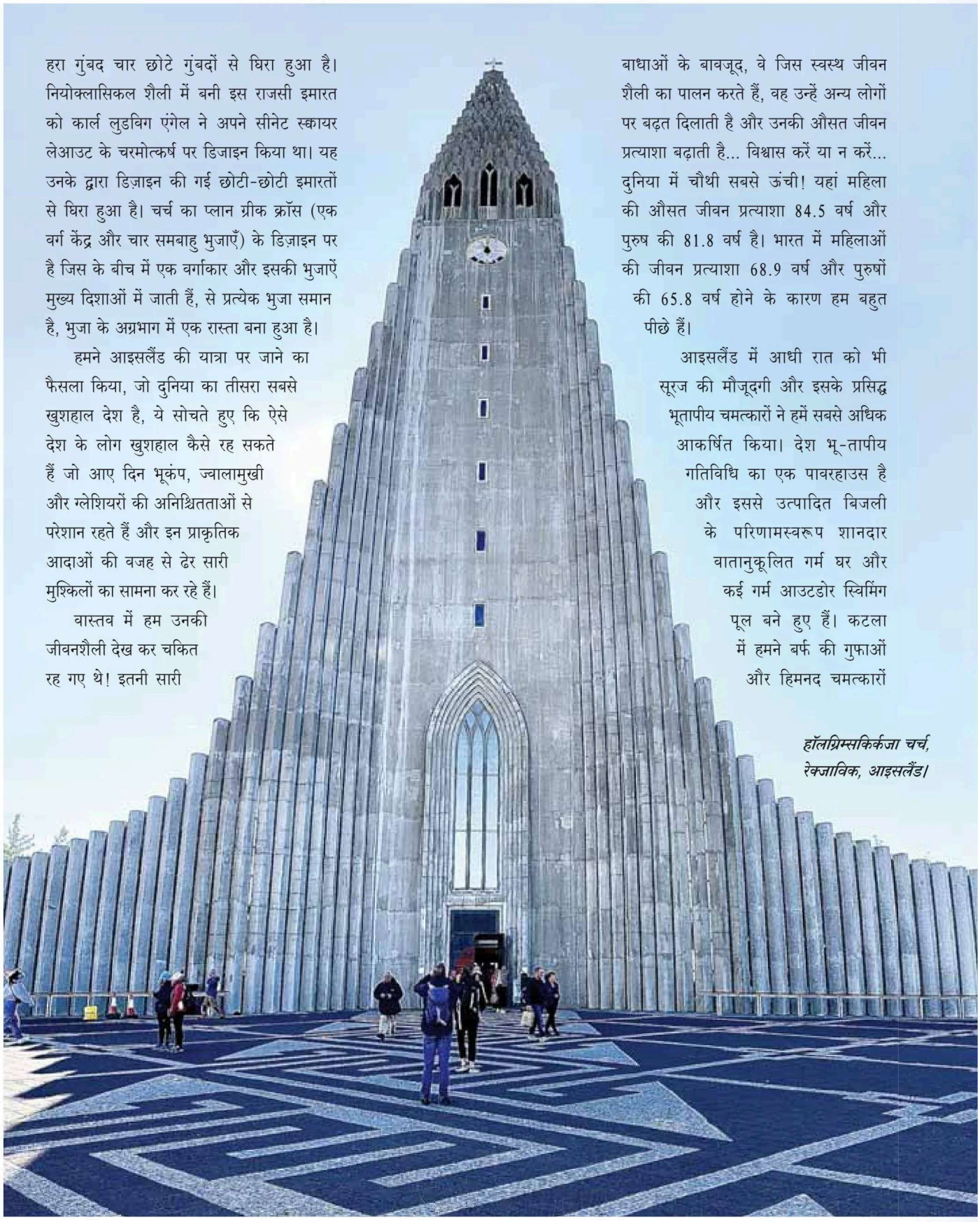

हॉलग्रिम्सकिर्कजा चर्च, रेक्जाविक, आइसलैंड।

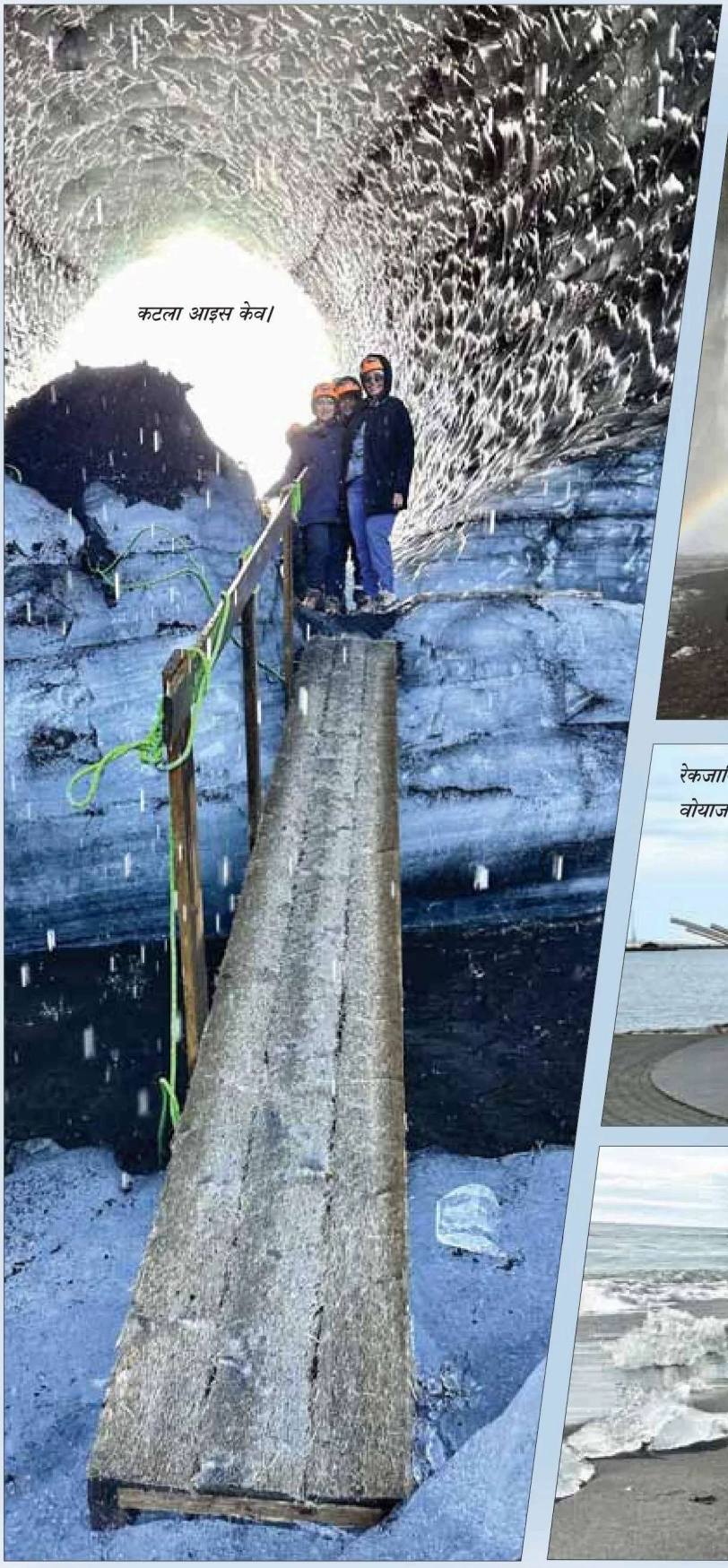

कटला आइस केव।

रेकजाविक में सन वोयाजर।

काली ज्वालामुखीय रेत वाला डायमंड समुद्र तट।

हेलसिंकी का राष्ट्रीय संग्रहालय, फ़िनलैंड।

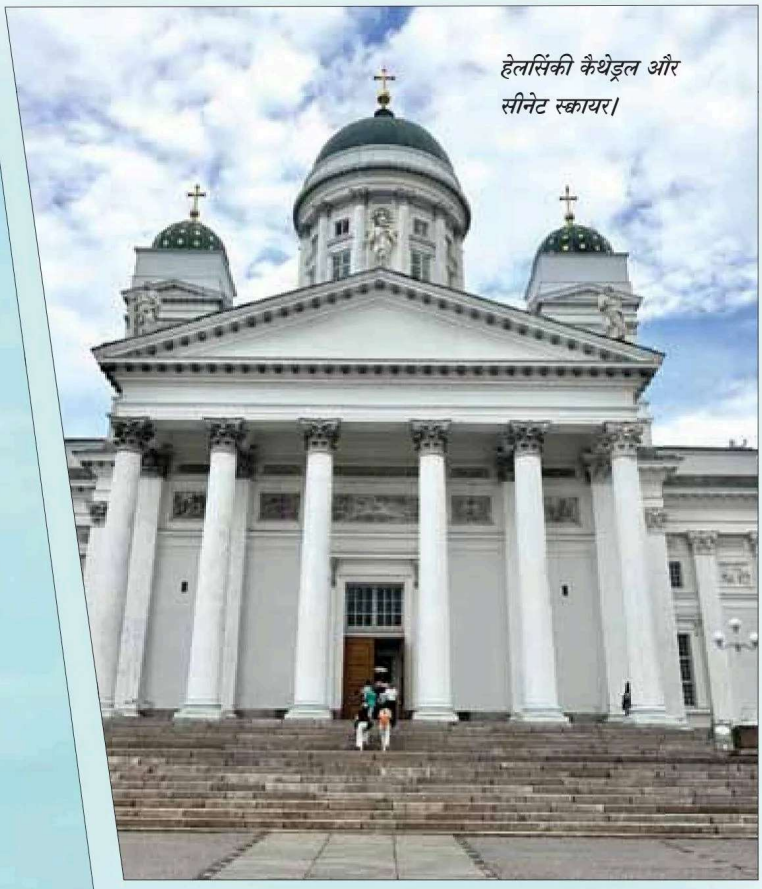

हेलसिंकी कैथेड्रल और सीनेट स्क्वायर।

सिबेलियस स्मारक, हेलसिंकी।

टेम्पपेलियाउकियो चर्च (रॉक चर्च), हेलसिंकी।

का भ्रमण किया जहाँ प्रकृति की अद्भुत और असीम शक्ति का खुलासा होता है । यह हमारी यात्रा का सबसे यादगार अनुभव था।

देश में वन्य जीवन भी अपने आप में अद्वितीय है - बारहसिंगा, घोड़े, भेड़ के बच्चे, समुद्री पक्षी, पफिन। आप जिधर भी जाएं हर ओर आपको ढेर सारे स्वस्थ और मजबूत घोड़ों के नयनाभिराम दृश्य नज़र आएँगे!

लेकिन इस देश के प्रतापी झरनों की तुलना किसी से नहीं हो सकती; हम जिस भी झरने पर गए, लगभग एक साथ हम सभी के मुंह से निकला महे भगवानफ। आइसलैंड में 10,000 से अधिक झरने हैं जिनके आकार अलग-अलग हैं और वास्तव में आश्चर्यजनक हैं, जो इनकी प्राकृतिक ताक़त, प्रकृति की ऊर्जा और शक्ति को दर्शाते हैं।

रेक्जाविक, आइसलैंड की राजधानी अपनी भरपूर ग्लैमरस नाइटलाइफ़ के साथ और कुछ

फ्रीहाइमर फ़ार्म में प्रति वर्ष 700 टन से अधिक टमाटर का उत्पादन होता है, जो आइसलैंड के कुल टमाटर उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत है

बेहतरीन संगीत समारोहों के आयोजन जैसे आइसलैंड एयरवेव्स आदि के लिए प्रसिद्ध है। यह अपनी अद्भुत वास्तुकला और इमारतों के आकर्षक मटियाले रंगों के लिए भी उतनी ही मशहूर है। इसके तीन विशिष्ट स्थल हैं, हार्पा हॉल, हॉल ग्रिम्सकिर्कजा चर्च और सोलफ़र सन वोयजर एक मूर्ति है जो सपनों की नाव का प्रतीक है और सूर्य को समर्पित एक स्तोत्र है। यह कई अज्ञात क्षेत्र के रोमांच सहित आशा, प्रगति और स्वतंत्रता के सपने का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह 1986 में रेक्जाविक की 200वीं वर्षगांठ मनाने के लिए जिले द्वारा वित्त पोषित एक प्रतियोगिता का परिणाम है।

रेक्जाविक की एक ऐतिहासिक इमारत है हार्पा सिम्फनी हॉल, जो शहर का एक कॉन्सर्ट हॉल है और एक सम्मेलन केंद्र भी है। इसके उद्घाटन पर, पहला संगीत कार्यक्रम मई, 2011 में आयोजित किया गया था। इमारत में आइसलैंड के बसॉल्ट के परिदृश्य से प्रेरित एक रंगीन कांच का विशिष्ट मुखौटा रखा गया है। हार्पा को डेनिश-आइसलैंडिक कलाकार ओलाफुर एलियासन के सहयोग से डेनिश फर्म हेनिंग लार्सन आर्किटेक्ट्स द्वारा निर्मित किया गया था। उस संरचना में विभिन्न रंगों के ज्यामितीय आकार के ग्लास पैनलों से ढका एक स्टील का ढांचा शामिल है।

भोजन में यहां आपको स्वादिष्ट मेमना, समुद्री भोजन, आर्टिक चार और मछली का

स्टू मिलेगा। गर्म झरनों में पकाई गई यहां की प्रसिद्ध राई की रोटी एक अलग ही अनुभव है। यह बताता है कि मनुष्य में जीवित रहने की प्रवृत्ति कितनी प्रबल है और प्रकृति द्वारा प्रदत्त अवसर भी अद्वितीय हैं।

फ्रीहाइमर फ़ार्म सबसे स्वादिष्ट टमाटरों का एक ग्रीनहाउस है इससे स्वादिष्ट टमाटर कभी नहीं चखे होंगे। इसे एक ऐसा अनुभव है जिसे आप भूल नहीं सकते। जैसे ही आप इस समृद्ध नखलिस्तान में कदम रखेंगे, आइसलैंड की भरपूर भू-तापीय ऊर्जा में लहलहाते हुए जीवंत टमाटर के पौधों की कतार दर कतार से आपका स्वागत किया जाएगा। ग्रीनहाउस को पास लगे बोर-होल से भू-तापीय पानी ले कर गर्म किया जाता है और रोशनी बिजली से संचालित होती है, वह भी भूतापीय ऊर्जा से।

इस टमाटर फार्म के मालिक एक उत्साही उद्यान विशेषज्ञ हेलेना हरमन डार्डोतिर और कृषि विज्ञानी नॉटुर रफ़न अरमान हैं। वे 1995 से अपने व्यवसाय को बढ़ाते आ रहे हैं। यह एक पारिवारिक व्यवसाय के रूप में संचालित होता है और यह एक विशाल साम्राज्य है, इसके मालिक आज भी इसमें शामिल हैं साथ ही उनके बच्चे भी। खेत में प्रति वर्ष 700 टन से अधिक टमाटर का उत्पादन होता है जो इस देश की टमाटर की कुल फसल का लगभग 40 प्रतिशत है!

फ्रिडहाइमर ग्रीनहाउस परिसर में नौ विशेष ग्रीनहाउस इमारतें है और 27,000 से अधिक टमाटर के पौधे हैं (कुछ ककड़ी और तुलसी के पौधे भी हैं) वहां किया गया अपना दोपहर का भोजन हम लंबे समय तक नहीं भूल पाएंगे। इसने उस कहावत को चरितार्थ कर दिया कि जहां चाह है, वहां राह है।

हमने स्काई लैगून और ब्लाम्सविक में दो भूतापीय झरनों का दौरा किया; यहां हमें शुद्ध परमानंद की अनुभूति हुई। आप गर्म झरनों में घंटों व्यतीत कर सकते हैं, अपने पेय लेते हुए प्रकृति के चमत्कारों का आनंद ले सकते हैं, यह निश्चित रूप से आपको प्रकृति के साथ एकाकार होना सिखाता है और शायद आपके जीवन काल में वृद्धि करता है।

जिस क्षण आप केफ्लाविक हवाई अड्डे पर उतर कर रेक्जाविक के लिए नीचे की यात्रा करते हैं, दूर मीलों तक फैले आपको ज्वालामुखीय परिदृश्य नज़र आ जाएंगे। लेकिन जब आप नज़दीक जाते हैं तो आप प्रकृति के रोमांच का आनंद उठाते हैं क्योंकि वहां काले रेत वाले समुद्र तटों और रंगारिंजित्रा (दक्षिणी आइसलैंड में एक नगर पालिका) जैसे अद्भुत स्थानो के दृश्य प्रकट होते हैं, जहां दूर जाते हुए पैदल यात्रा के लम्बे रास्ते और चमकीले रंग के पहाड़ नज़र आते हैं।

हमारी आठ दिवसीय आइसलैंड की यात्रा प्रकृति की ताकत जानने और सीखने का एक शानदार अनुभव था, आग और बर्फ के बीच अद्भुत सह-अस्तित्व और न केवल जीवित रहने बल्कि फलने-फूलने के मानव के प्रयास! इसने हमें जीवनशैली में बदलाव और प्रकृति के सम्मान का महत्व भी सिखाया।

लेखक पूर्व रो ई निदेशक हैं
चित्र : मनोज देसाई

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

फ़िनलैंड का **10** प्रतिशत हिस्सा पानी है...तालाब, झीलें, नदियाँ। वन क्षेत्र: **78** प्रतिशत

राष्ट्रपति महल, हेलसिंकी।

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

रो ई मंडल 3020 ने 40 नए इंटरेक्ट क्लब स्थापित किए

इंस्टॉलेशन इवेंट में आरआईडी राजू सुब्रमण्यन (दाएं से तीसरे), और डीजी सुब्बाराव रावुरी (बाएं) इंटरेक्टर्स के साथ।

रो ई निदेशक राजू सुब्रमण्यन ने रो ई मंडल 3020 में 40 नए इंटरेक्ट क्लब स्थापित किए। रोटरी क्लब विशाखापत्तनम ने मंडल इंटरेक्ट प्रतिनिधि और 140 इंटरेक्ट क्लबों के अध्यक्षों को स्थापित करने के लिए एक कार्यक्रम की मेजबानी की। रो ई निदेशक ने इंटरेक्टर्स को संबोधित किया और इंटरेक्ट और इसकी गतिविधियों के महत्व को बताया।■

सदस्यता बढ़ाने के लिए सुझाव

पीआरआईडी एएस वेंकटेश को डी जी बीसी गीता की उपस्थिति में सेमिनार में सम्मानित किया गया।

पीआरआईडी एए स वेंकटेश ने बेंगलुरु के पास हसन में रो ई मंडल 3182 द्वारा सदस्यता बढ़ाने और सार्वजनिक छवि बढ़ाने पर आयोजित एक सेमिनार का उद्घाटन किया। पिछले सहायक गवर्नर सेसप्पा राय ने कहा कि इस रोटरी वर्ष में जुलाई से सितंबर के दौरान 178 से अधिक नए रोटेरियन शामिल किए गए हैं।■

चेन्नई में नेत्रदान जागरूकता रैली

आरआरईबी के संस्थापक डॉ सुजाता और डॉ मोहन राजन, टीएनओए के अध्यक्ष डॉ निर्मल फ्रेड्रिक और पीडीजी जे श्रीधर के साथ अभिनेता जयराम सुब्रमण्यम।

रोटरी राजन आई बैंक (आरआरईबी) ने 1,500 इलियट्स बीच, बेसेंट नगर में अपनी वार्षिक नेत्रदान जागरूकता रैली का आयोजन किया, जिसमें 1,500 से अधिक छात्रों ने भाग लिया। दक्षिण भारतीय अभिनेता जयराम सुब्रमण्यम ने इस रैली में अपनी आंखें दान करने का संकल्प लिया।■

रोटरी ने लगाई चाट की दुकान

रोटरी क्लब पटना सिटी सम्राट, रो ई मंडल 3250 की रोटेरियन मंजू रंजन और उनकी टीम ने एक वंचित व्यक्ति को बटाटापुरी और भेलपुरी बनाना सिखाया। और फिर क्लब ने उन्हें यह बेचने के लिए ₹30,000 की एक ट्रॉली उपहार में दी।■

Go Green

अपने पालतू जानवर के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करें

प्रीति मेहरा

स्थिरता और आपका प्यारा दोस्त साथ-साथ चल सकते हैं।

पालतू जानवर शहरी जीवन का अभिन्न अंग बन गए हैं। कई पशु-प्रेमी परिवार घर में कुत्ते और बिल्लियाँ रखते हैं। ये प्यारे जानवर न केवल पारिवारिक जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं, बल्कि बच्चों को अन्य प्रजातियों के प्रति अधिक संवेदनशील भी बनाते हैं। पालतू जानवर गर्मजोशी, साथ, खुशी, मौज-मस्ती और उल्लास प्रदान करते हैं और उनकी उपस्थिति पूरे परिवार के लिए उपचारात्मक होती है।

यदि आप पहले से ही स्थिरता के लिए प्रतिबद्ध हैं, तो आप अपने पालतू जानवरों के पर्यावरणीय प्रभाव को भी कम कर सकते हैं, या जैसा कि हम इसे मजाक में कह सकते हैं, उनका पौप्रिंट। शुरुआत उनके भोजन से करें. पश्चिमी देशों में, बिल्लियाँ और कुत्ते अक्सर सुपरमार्केट से व्यावसायिक पालतू भोजन खाते हैं। दुर्भाग्य से, विज्ञापन और प्रचार के कारण यह चलन भारत में भी बढ़ रहा है, जिससे लोग अपने पालतू जानवरों के लिए घर का बना खाना तैयार करने के बजाय बड़े बैग में पैक किया गया तत्काल भोजन खरीदने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

मैंने मुंबई में एक पशु कार्यकर्ता से बात की जो घर पर कई बिल्लियाँ रखते हैं और आवारा जानवरों की देखभाल करते हैं। जब मैंने उनसे पालतू जानवरों के लिए सबसे अच्छे और सबसे टिकाऊ भोजन के बारे में पूछा, तो उनका जवाब स्पष्ट था। उन्होंने कहा, अगर हम हर समय अपने लिए प्रसंस्कृत, परिरक्षक-पैक भोजन पर निर्भर नहीं रहते हैं, तो हम इसे अपने पालतू जानवरों को क्यों खिलाएंगे? उनके अनुसार, पैकेज्ड पालतू भोजन कभी-कभार खाने के लिए उपयुक्त होता है, लेकिन रोजमर्रा के भोजन के लिए, जैविक, घर के बने भोजन से बढ़कर कुछ नहीं है, जो हमारे पालतू जानवरों के लिए भी उतना ही अच्छा है जितना कि हमारे लिए। यह सबसे पर्यावरण अनुकूल विकल्प भी है।

घर का बना खाना भी कुत्तों के लिए बेहतर विकल्प है, क्योंकि यह अत्यधिक पैकेजिंग और कृत्रिम योजकों से मुक्त होता है। उदाहरण के लिए, मेरी पड़ोसी हर चार दिन में अपने प्यारे लैब्राडोर के लिए घर का बना खाना बनाती है। वह चावल, विभिन्न दालें, गाजर और लौकी, सोया चंक्स, चिकन लेग्स और पानी सहित विभिन्न कटी हुई सब्जियों को मिलाती है, जिसे वह प्रेशर कुकर में पकाती है। फिर वह इसे फ्रिज में रखती है और अपने कुत्ते को दिन में दो बार दही, दूध और कभी-कभी ब्रेड या चपाती के साथ परोसती है। उसका कुत्ता इसे पसंद करता है, जबकि वह इस तथ्य से प्यार करती है कि उसके पास स्वस्थ और पौष्टिक आहार है। यह पालतू जानवरों के कार्बन प्रिंट में भी मदद करता है जैसा कि मेरे सामने आए शोध से पता चला है। महामारी से पहले के एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में अनुमान लगाया गया है कि पालतू भोजन की खपत हर साल 64 मिलियन टन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान करती है।

भोजन के अलावा, अपने पालतू जानवर को पालते समय पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण अपनाने के कई अन्य तरीके हैं, जिनमें उनके खिलौने भी शामिल हैं। सिंथेटिक या प्लास्टिक के खिलौनों का चयन करने के बजाय, जिन्हें लैंडफिल में नष्ट होने में सदियों लग जाते हैं, घर पर बचे हुए सामग्रियों से खिलौने बनाने पर विचार करें। यहां एक सरल उधव विचार है: एक पुराने सूती मोजे को बेकार कपड़े से भरें और अंत में एक सुरक्षित गाँठ बांधें। पिल्लों को इन्हें चबाना अच्छा लगता है और वे इनके साथ खेलना भी पसंद करते हैं। दांत निकलते समय ये घरेलू खिलौने प्राकृतिक राहत देते हैं। आप बेकार कागज को सुरक्षित कपड़े की थैलियों या बांस में लपेटकर पर्यावरण-अनुकूल गेंदें भी बना सकते हैं, जिससे वे हानिरहित और प्लास्टिक से मुक्त हो जाएंगी।

उसी तरह पालतू जानवर के मालिक घर में बेकार पड़े सामान से अपने पालतू जानवरों के लिए बिस्तर बना सकते हैं। घर पर बच्चों के साथ, यह एक शिक्षाप्रद और आनंददायक गतिविधि हो सकती है। यह बच्चों को सिखाता है कि प्रतिकूल माहौल में खरीदारी करने के भी विकल्प हैं।

अपने कुत्ते के बाद सफ़ाई करना एक महत्वपूर्ण कार्य है जो आपके पालतू जानवर के पर्यावरणीय प्रभाव को कम कर सकता है। कागज या बायोडिग्रेडेबल सामग्री से बने डिस्पोजेबल पूप बैग का उपयोग करें जिन्हें आपके चलने के बाद सुरक्षित रूप से फ्लश किया जा सकता है। कुछ स्थानों पर, पशुओं के अपशिष्ट से खाद भी बनाई जाती है, जैसे गांवों में गाय के गोबर से खाद बनाने की प्रथा है।

पालतू जानवर रखना एक अधिक दयालु दुनिया को अपनाने का प्रतीक है जहां सभी प्रजातियों के लिए सम्मान को महत्व दिया जाता है, और मनुष्यों द्वारा ग्रह को अन्य प्राणियों के साथ साझा करने की मान्यता स्पष्ट है।

पालतू जानवर रखना एक अधिक दयालु दुनिया को अपनाने का प्रतीक है जहां सभी प्रजातियों के लिए सम्मान को महत्व दिया जाता है, और मनुष्यों द्वारा ग्रह को अन्य प्राणियों के साथ साझा करने की मान्यता स्पष्ट है।

विचार करें कि बत्तख, गिनी पिग, कछुए, खरगोश और मुर्गियाँ जैसे कई अन्य जानवर हैं, जो अद्भुत पालतू जानवर बन सकते हैं यदि आपके पास उनके लिए जगह और स्नेह है। हालाँकि, गैर-लुप्तप्राय प्रजातियों को चुनना और जानवरों को उनके प्राकृतिक आवासों से पकड़ने से बचना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह टिकाऊ नहीं है। इसके अतिरिक्त, जानवरों या पक्षियों को पिंजरों में कैद करने से बचना जरूरी है, क्योंकि इसे अमानवीय माना जाता है।

महाराष्ट्र के दहानू में मेरे दोस्त, ज़मीन की उपज पर भरोसा करते हुए, अपने खेत पर आत्मनिर्भर जीवन जीते हैं। उनके पास बत्तखें, मुर्गियों का एक दड़बा, तीन बिल्लियाँ और एक कुत्ता है, सभी खुशी-खुशी एक साथ रहते हैं। हालाँकि उनकी जीवनशैली वास्तव में पर्यावरण-अनुकूल और देहाती है, लेकिन शहरों में यह संभव नहीं हो सकता है। फिर भी, थोड़े से प्रयास से, हम शहरी परिवेश में भी अपने घरों को अधिक टिकाऊ और पालतू जानवरों के अनुकूल बना सकते हैं।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

शब्दों की दुनिया

दिमाग पर दस्तक

संध्या राव

जब कोई किताब सचमुच चाहती है कि उसे पढ़ा जाए, तो कोई उसका प्रतिरोध कैसे कर सकता है?

उस दिन मैं अपने डेस्क पर बैठी सामान्य काम कर रही थी, थोड़ा पढ़ रही थी, कुछ सपने देख रही थी, थोड़ा बहुत अपने पसंदीदा शो देख रही थी कि थक्क ! सामने रखी बुकशेल्फ़ से एक किताब बाहर निकली और तैरते हुए मेरे सिर पर आ गिरी। मैं हतप्रभ रह गई, उस के मुखपृष्ठ को देखा: *हाफ ए मैन* इसमें समुद्र में पानी की सतह से उठती हुई ऊंची लपटें दिखाई दे रही थी। विख्यात लेखक और कवि माइकल मोरपुरगो द्वारा लिखित, जिनकी किताबें समोसे की तरह गपागप साफ़ कर दी जाती हैं और जेम्मा ओफ्फैलाहन द्वारा चित्रित हैं, इसमें भीतर एक खूबसूरत नारंगी रंग का चमकदार पृष्ठ है जिस पर उड़ते हुए काले और सफेद पक्षियों की शानदार परछाइयाँ चित्रित हैं।

किताब खोल कर मैं पन्ने पलटने लगी - करीब 60 पन्ने - जिनमें ढेर सारे रंगीन चित्र बने हुए थे। मैंने पढ़ना शुरू किया: 'जब मैं बहुत छोटा था, अब से आधी सदी से भी पहले, मुझे बुरे-बुरे सपने आते थे। बुरे सपने आप कभी नहीं भूलते। हमेशा एक जैसा आता था। इसकी शुरुआत एक चेहरे से होती, एक टेढ़ा, प्रताड़ित चेहरा जो खामोशी में चिल्लाता था, बिना बालों या भौंहों वाला चेहरा, चेहरे से अधिक वो एक खोपड़ी लगता था, एक खोपड़ी जो गालों की हड्डियों पर फैली झुलसी हुई त्वचा से ढकी हुई थी।' मैं अंत तक इसे पढ़ती चली गई। किताब का अंत; इसका सरल, स्पष्ट गद्य गहराई लिए था और मार्मिक था, और इसके कई मायने निकलते थे।

कहानी का कथावाचक एक लड़का है माइकल - नहीं, यह माइकल मोरपुरगो के बारे में नहीं है, हालांकि यह सच्ची घटनाओं से प्रेरित है। माइकल पाठकों के साथ अपने दादाजी के बारे में टिप्पणियों, और भावनाओं को साझा करता है वो जब भी आते, उसके माता-पिता हमेशा बहुत तनाव में आ जाते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दादाजी बुरी तरह घायल हो गये; झुलसने और चोटों के कारण उनका चेहरा केवल आधा बचा था और बमुश्किल कुछ उंगलियाँ बची थीं। उनका इलाज कठिन और लंबा चला था और अंततः उनका पुनर्वास किया गया, लेकिन जब भी वे अपने परिवार के पास घर आते थे तो परिवार को ज़रा भी अच्छा नहीं लगता था यूँ कहें कि जैसे वह दिखते थे, उसकी वजह से वो उनके साथ सामंजस्य बिठाने में असमर्थ थे। एक तरह से वे उनके शारीरिक परिवर्तन से हैरान थे। बेशक, उन्होंने उनकी देखभाल ज़रूर की, लेकिन वे उनका मुंह देखने से हमेशा बचते रहे, वो उनसे बात नहीं करते थे। इसलिए, इन वर्षों में, माइकल के दादाजी अपनों से और दूर होते चले गए और अपनेआप में सिमट कर रह गए थे।

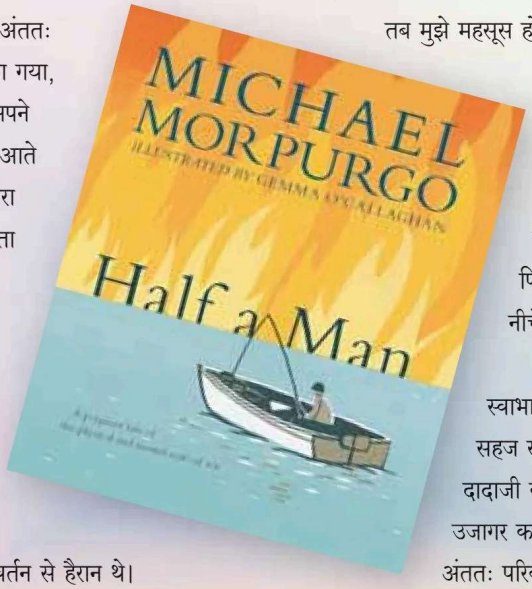

> सबसे प्राथमिक स्तर पर, *हाफ ए मैन* युद्ध से उपजे और उसके बाद पैदा हुए शारीरिक और मानसिक घावों के सम्बन्ध में है; हालाँकि, अन्य विचार भी जेहन में गूंजते हैं, जैसे दुश्मनी के परिणाम; वह कोना जहां डर और जागरूकता की कमी के कारण दिव्यांगों को धकेल दिया जाता है।

सिर्फ माइकल अलग था। 'मैं उनकी तरफ चोरी छुपे देखता और जल्द ही वो देखना घूरने में बदल जाता,' वह कहते हैं। 'मैंने जो कुछ भी देखा उससे मुझे कभी घृणा नहीं हुई। अगर होती, तो मैं आराम से नज़र फेर सकता था। मुझे लगता है कि मैं किसी भी अन्य चीज़ की बजाय इससे अधिक रोमांचित था, और शायद भयभीत भी, क्योंकि मुझे कुछ कुछ पता था कि युद्ध में उनके साथ क्या हुआ था। मैंने उनकी गहरी नीली आँखों में वह पीड़ा देखी जिससे वह गुजरे थे - वो आँखें जो शायद ही कभी झपकती थीं, मैंने गौर किया। तब मुझे महसूस होता था कि मेरी माँ की आँखें मुझे चीर रही हैं जो मुझे घूरना बंद करने के लिए कह रही थीं या फिर मेरे पिता मुझे मेज़ के नीचे धकेल देते थे।' बच्चे की स्वाभाविक जिज्ञासा और सहज सहानुभूति धीरे-धीरे दादाजी की कहानी को उजागर करती जाती है और अंततः परिवार को समझाने में सहायक होती है। उदाहरण के लिए, वह मुस्कुराता क्यों नहीं है - वह मुस्कुरा नहीं पाता क्योंकि उसके मुँह के आसपास और चेहरे की त्वचा कड़ी है; वह इतना चुप क्यों है - क्योंकि वह अकेला और तिरस्कृत महसूस करता

है। अंत में, माइकल को धन्यवाद, उसके परिवार के सदस्यों में रिश्तों की गर्माहट वापस लौट आती है। उत्तरी अटलांटिक के सबसे बड़े समुद्री पक्षियों में से एक गैनेट की कहानी भी इसमें शामिल है, केवल अंतिम पृष्ठ पर ही नहीं! दादाजी कहते हैं कि गैनेट सौभाग्य ले कर आते हैं।

यह छोटे से कथा साहित्य की कृति का सार है। हालाँकि, अन्य 'छोटी' किताबों की तरह, जैसे एंटोनी डी सेंट एक्सुपरी की *द लिटिल प्रिंस,* रिचर्ड बाख की *जोनाथन लिविंगस्टोन सीगल,* या पॉल गैलिको की *द स्नो गूज़,* यह किताब भी जीवन और अनुभवों की उपमा के स्तर पर काम करती है, और विशेषकर युद्ध। यहां उल्लिखित शीर्षकों की तरह, यह पुस्तक आत्मा के लिए भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी इसके गद्य के आरोह अवरोह और कहानी कहने की कला की जबरदस्त ताकत के लिए।

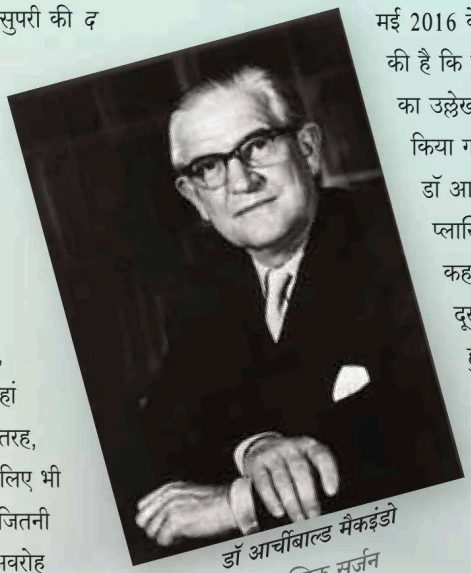

डॉ आर्चीबाल्ड मैकइंडो
प्लास्टिक सर्जन

सबसे प्राथमिक स्तर पर, *हाफ ए मैन* युद्ध से उपजे और उसके बाद पैदा हुए शारीरिक और मानसिक घावों के सम्बन्ध में है; हालाँकि, अन्य विचार भी जेहन में गूंजते हैं, जैसे दुश्मनी के परिणाम; वह कोना जहां डर और जागरूकता की कमी के कारण दिव्यांगों को धकेल दिया जाता है। यह वैसी पुस्तक है जिसे पढ़ने के बाद पाठक को नई अंतर्दृष्टि मिलेगी। हां, यह काल्पनिक कृति है, लेकिन जिस दुनिया का सृजन ये करती है वह स्पर्शनीय, मूर्त है और वास्तविक है। और माइकल के दादाजी की देखभाल करने वाला व्यक्ति वास्तविक है: 'यह वही है जिसने यह सब किया, हमें वापस एक साथ मिलाया और मैं ऑपरेशन के बारे में बात नहीं कर रहा हूं। ऑपरेटिंग रूम में तो वो एक जादूगर था, ठीक है। लेकिन उसके बाद उन्होंने हमारे लिए यह सब किया,' दादाजी माइकल से कहते हैं। 'उन्होंने हमें फिर से भीतर से अच्छा महसूस कराया, जैसे हमारा भी अस्तित्व था, जैसे हम राक्षस नहीं आदमी थे।' जबकि उनकी अपनी बेटी 'मुझसे वैसा व्यवहार नहीं करती, उस तरह से नहीं देखती थी,' मुझसे कभी सामान्य व्यक्ति की तरह बात नहीं की... मुझे लगता है, वह मुझसे आज भी प्यार करती है, लेकिन उसने जो देखा वह व्यक्ति एक राक्षस था।'

ब्लॉग साइट *लाइब्रिसनोट्स* में मई 2016 के एक लेख में टिप्पणी की है कि पुस्तक में जिस डॉक्टर का उल्लेख डॉ मैकइंडो के रूप में किया गया है, वास्तव में वह, डॉ आर्चीबाल्ड मैकइंडो, एक प्लास्टिक सर्जन थे। इसमें कहा गया है कि उन्होंने दूसरे विश्व युद्ध में हताहत हुए पायलटों की झुलसी हुई त्वचा का अधिक प्रभावी ढंग से इलाज करने के तरीकों का आविष्कार किया और उन्हें समाज में फिर से शामिल होने में मदद की। वास्तव में, डॉ मैकइंडो ने ऐसे लोगों को समाज मेंअपना सही स्थान खोजने की आवश्यकता पर बहुत जोर दिया। युद्ध के दौरान, उन्होंने ठीक इसी उद्देश्य के साथ गिनी पिग क्लब की स्थापना की, ताकि मरीजों को न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी ठीक होने में मदद मिल सके। यदि आप कॉपीराइट पृष्ठ की जांच करते हैं, तो आप पाएंगे कि यह एरिक पियर्स को समर्पित है, जो मैकइंडो द्वारा सबसे अंत में लिखी गई पुस्तकों में से एक ''गिनी पिग्स।''

> **मैं अंत तक इसे पढ़ती चली गई। किताब का अंत; इसका सरल, स्पष्ट गद्य गहराइ लिए था और मार्मिक था, और इसके कई मायने निकलते थे।**

इस जानकारी से मुझे अमर सेवा संगम के संस्थापक एस रामकृष्णन की याद आ गई। जब वे इंजीनियरिंग के चौथे वर्ष में थे, वह नौसेना में जाना होना चाहते थे; उन्होंने प्रवेश पत्र भरा। नौसेना अधिकारियों के चयन परीक्षण के आखिरी चक्र में, उन्हें चोट लगी जिससे गर्दन के नीचे का हिस्सा लकवाग्रस्त हो गया। इलाज के लिए उन्हें तुरंत रक्षा अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें न केवल शारीरिक पीड़ा से जूझना पड़ा, बल्कि यह भी पता चला कि गर्दन से नीचे उनका पूरा शरीर पक्षाघात से ग्रस्त हो गया है। महीनों के उपचार और स्वास्थ्य लाभ के बाद, वह तिरुनेलवेली जिले के अयिकुडी में अपने घर लौट आए। वहां उन्होंने शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों के इलाज और पुनर्वास के लिए अमर सेवा संगम की स्थापना की। रामकृष्णन ने अपने संस्थान का नाम एयर मार्शल डॉ। अमरजीत सिंह चहल के नाम पर रखा, जिन्होंने न केवल रक्षा अस्पताल में उनका इलाज किया था, बल्कि उस कठिन समय में उन्हें नैतिक, मानसिक सहयोग दिया और मनोबल बढ़ाने के साथ प्रोत्साहन दिया था। 1981 में स्थापित, अमर सेवा संगम शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग लोगों को सशक्त और सक्षम बनाने के लिए कार्यरत है, जैसा कि उनके विज़न स्टेटमेंट में लिखा है, 'एक सक्रिय समाज में जहां शारीरिक, मानसिक या अन्य चुनौतियों के बावजूद शेष समाज के साथ समानता बरकरार रहती है।'

याद हैं आपको दशरथ मांझी? गया के निकट रहने वाला वो ग्रामीण। जो 22 वर्षों तक वह एक पहाड़ को काटता रहा जब तक कि वह एक रास्ता बनाने में कामयाब नहीं हो गया, जिससे निकटतम अस्पताल की यात्रा का समय काफी कम हो गया। सत्य कल्पना से अधिक आश्चर्यजनक होता है; *हाफ ए मैन* इसे अपने ही अंदाज़ में बयां करता है।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

स्थूलता से सावधान रहें

भरत और शालन सवुर

WHO और ICRIER (इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशंस) के एक हालिया संयुक्त अध्ययन ने भारत में मोटापा महामारी के बारे में चिंता जताई है। यह चिंता देश में अत्यधिक प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की बिक्री की एक दशक लंबी जांच पर आधारित है।

COVID-19 महामारी लॉकडाउन के दौरान, इन प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की बिक्री में गिरावट आई, लेकिन तब से उनमें तेजी से सुधार देखा गया है।

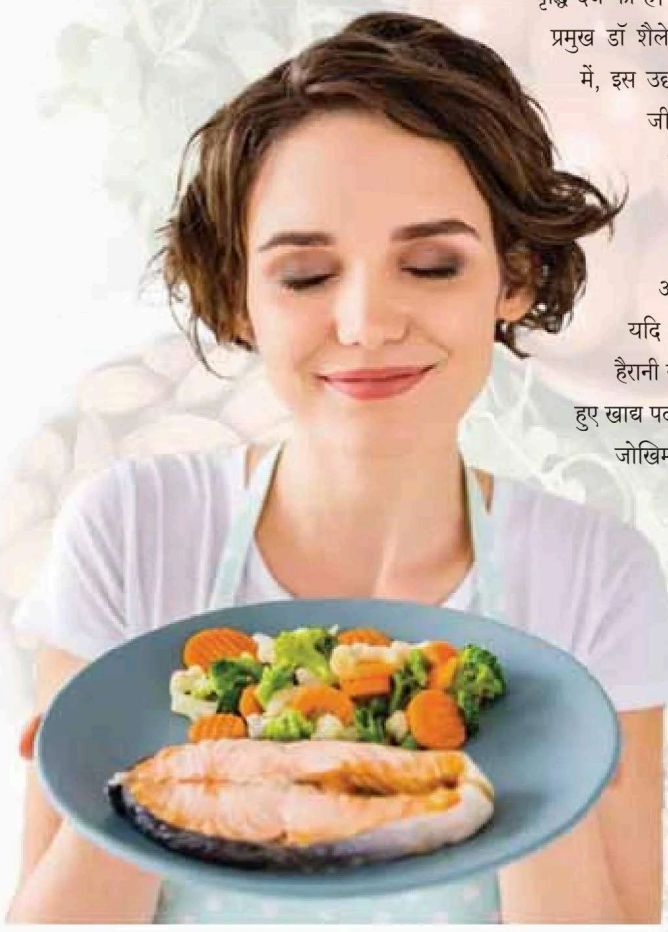

भले ही इन प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों की खपत घर के बने भोजन की तुलना में अपेक्षाकृत कम है, फिर भी इस बढ़ती प्रवृत्ति को उलटने के लिए कार्रवाई करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए नीतिगत हस्तक्षेप और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि व्यक्तिगत आत्म-नियंत्रण की आवश्यकता है। फैटी लीवर और आंतों की बीमारियों के मामलों में पहले से ही चिंताजनक वृद्धि हुई है।

WHO-ICRIER अध्ययन के निष्कर्षों का समर्थन करते हुए, मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल ने 2010 और 2022 के बीच गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल कैंसर वाले व्यक्तियों के प्रवेश में 300 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। कैंसर सर्जरी के उप निदेशक और प्रमुख डॉ शैलेश श्रीखंडे के अनुसार अस्पताल में, इस उछाल को शहरीकरण और बदलती जीवनशैली के प्रभावों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है।

विवादास्पद मुद्दा

अपनी खरीदारी सूची जांचें, खासकर यदि आप मधुमेह के बारे में चिंतित हैं। हैरानी की बात यह है कि चिप्स जैसे तले हुए खाद्य पदार्थ मिठाइयों की तुलना में अधिक जोखिम भरे होते हैं। मिठाइयों और तले हुए खाद्य पदार्थों के प्रति प्रेम के कारण गुजरात मधुमेह का हॉटस्पॉट है, जबकि लाहौर लाल मांस के व्यंजनों के कारण उच्च रक्तचाप और हृदय संबंधी समस्याओं के मामले में शीर्ष पर है। मधुमेह को रोकने या शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने के लिए, रात के खाने में हल्का सब्जी का सूप लें। इंग्लैंड में डॉक्टर प्री-डायबिटीज व्यक्तियों को इसकी सलाह देते हैं।

केवल दो घड़ी

आधुनिक समाज में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए हैं, जिनमें संयुक्त परिवारों का टूटना और दोनों साझेदारों के कामकाजी या एकल-माता-पिता वाले घरों का प्रचलन शामिल है। इन बदलावों के कारण अधिक आय और खाना पकाने के लिए कम समय और जगह के कारण बाहर खाने, ऑर्डर करने या डिब्बाबंद और पैकेज्ड खाद्य पदार्थों के सेवन पर निर्भरता बढ़ गई है।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थ सुविधाजनक होते हुए भी स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ लेकर आते हैं। इनमें अत्यधिक मात्रा में नमक, चीनी, वसा, तेल, संरक्षक, स्वाद बढ़ाने वाले, कृत्रिम रंग, स्वाद और मिठास होते हैं।

शानदार फ्रांसिन

आइए एक और प्रकार के सिर्फ दो मिनट का पता लगाएं जो बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है। उदाहरण के लिए, फ्रांसिन की प्रेरक कहानी पर विचार करें। वह एक ऐसे परिवार से थी, जिसमें पार्किंसंस जैसी न्यूरोलॉजिकल अपक्षयी बीमारियों का इतिहास था, और वह खुद मस्कुलर डिस्ट्रॉफी से पीड़ित थी। उसकी हालत के कारण उसके हाथ ऊपर की ओर उठाने की क्षमता केवल तीन बार ही सीमित थी, और उसे 50 फीट से अधिक चलने में कठिनाई होती थी। भावनात्मक रूप से, वह आशावाद और सुस्ती और त्यागपत्र की भावना के बीच झूलती रही।

फ्रांसिन के जीवन में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन आया जब वह एक मनोचिकित्सक और समग्र उपचारकर्ता डॉ रूडोल्फ बैलेंटाइन से मिलीं और उनके आवासीय उपचार कार्यक्रम में नामांकित हुईं। यहां दो मुख्य बातें हैं:

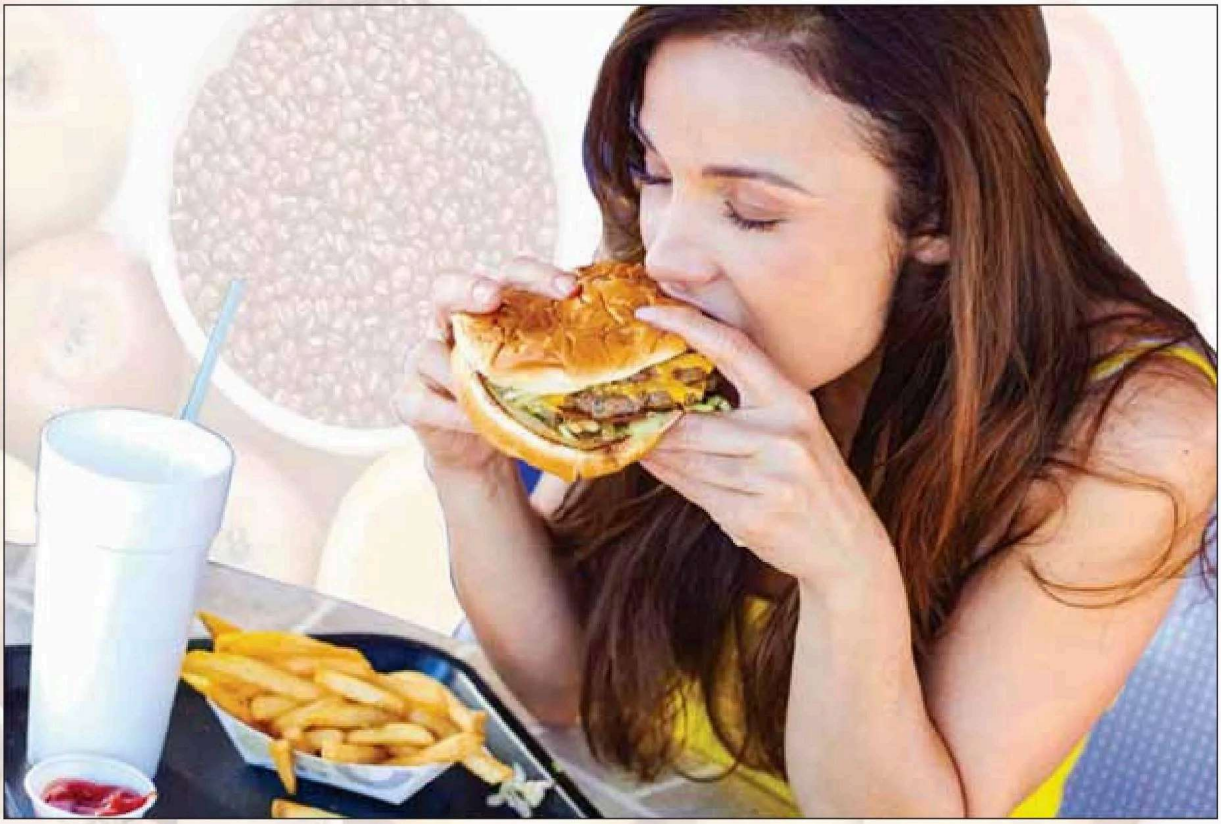

जब आप आशावादी महसूस करें, तो उपचार की दिशा में तुरंत कार्रवाई करें। इन क्षणों का उपयोग फिटनेस विशेषज्ञों या फिजियोथेरेपिस्ट तक पहुंचने के लिए करें, उचित आहार के लिए अपने डॉक्टर से परामर्श लें और एक व्यक्तिगत स्वास्थ्य आहार स्थापित करें। यह आपको बीमारी पर फिटनेस को प्राथमिकता देने का अधिकार देता है।

फ्रांसिन को कार्यक्रम में एक चुनौती का सामना करना पड़ा, जिसके लिए उन्हें बेहतर स्वास्थ्य के लिए पोषण, सफाई और व्यायाम के बारे में ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से दैनिक व्याख्यान में भाग लेना पड़ा। हालाँकि, उसे यह नीरस और सीमित लगा, और उसने डॉ बैलेंटाइन को अपनी बेचैनी व्यक्त की। उनका अनुभव हमें एक महत्वपूर्ण सबक सिखाता है: सक्रिय होने की अपनी इच्छा को कभी न दबाएँ। ये आवेग आपके मस्तिष्क और मांसपेशियों के बीच संबंध को पाटते हैं, विचार और क्रिया के बीच संबंध को प्रज्वलित करते हैं। इन आवेगों को लगातार अपनाने से, आप असहायता और अवसाद की भावनाओं से बच सकते हैं।

डॉ. बैलेंटाइन आश्चर्यचकित थे। फ्रांसिन, जो मुश्किल से कुछ कदम चल सकती थी, ने दौड़ने की इच्छा व्यक्त की। डॉक्टर उसके कमजोर अंगों के बावजूद गति के लिए इस ऊर्जा का उपयोग करने की क्षमता से चकित थे। उन्होंने उसे इसके लिए जाने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका त्वरित निदान और सलाह सही थी। जब वे दोबारा मिले, तो फ्रांसिन ने अपनी उल्लेखनीय प्रगति को साझा करते हुए कहा कि वह न केवल कक्षा से बाहर भागी थी, बल्कि पहाड़ी की चोटी पर आधा मील तक चढ़ गई थी, और वह थकी भी नहीं थी।

व्यायाम, व्यायाम, व्यायाम!

व्यायाम बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें स्वतंत्र और सहज आत्म-अभिव्यक्ति के लिए अपनी प्राकृतिक क्षमता और कौशल को पुनः प्राप्त करने में मदद करता है। ऐसा शरीर होना एक बहुत बड़ा आशीर्वाद है जो किसी के इरादे पर आसानी से और तुरंत प्रतिक्रिया देता है। जब आपका मन कहता है, 'चलो यहाँ से निकलें,' उठें, बाहर निकलें और अपने शरीर और उत्साही स्वंय को तेज चाल या दौड़ या ब्लॉक के चारों ओर बाइकिंग अभियान के लिए ले जाएं। यदि आपको चलने वाली छड़ी की आवश्यकता है, तो इसे उठाएँ और आगे बढ़ें। कार्यालय में, चलने के लिए स्लिप-ऑन जूते अपने पास रखें। घर पर, ट्रैकसूट या आरामदायक आउटडोर कपड़े पहनें ताकि आपको बाहर जाने के लिए कपड़े बदलने में एक मिनट भी खर्च न करना पड़े।

एक नई शुरुआत

जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी द्वारा किए गए एक प्रयोग से पता चलता है कि आप धीरे-धीरे अधिक सक्रिय जीवन की ओर बढ़ सकते हैं। प्रतिदिन मात्र 2,300 कदम चलना हृदय और रक्त वाहिकाओं के लिए अच्छा है; सिर्फ 4,000 कदम चलने से समय से पहले मौत का खतरा कम हो जाता है।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और* फिटनेस फॉर लाइफ *कार्यक्रम के शिक्षक है।*

मुझे फिर से लिखने दो!

कॉलिन मैकमोहन

एक पत्रकार अपनी नौकरी छोड़ देता है किंतु पिता के रूप में प्रगति करता है।

मैंने 2021 की गर्मियों में अपनी नौकरी को तिलांजलि दे दी थी। वजह बहुत सारी थी, लेकिन उन में से एक वजह, मेरे पत्रकार होने का या समाचार पत्र के खोखले होते उद्योग से उसका कोई सरोकार नहीं था। बस, मैं शिकागो पब्लिक हाई स्कूल में पढ़ रहे अपने सबसे छोटे बेटे, माटेओ की पढ़ाई और उसके जीवन के 16वें वर्ष में सहायता करना चाहता था।

जल्द ही मुझे एहसास हो गया कि मैं पिता की अपेक्षा एक पत्रकार बेहतर था। और क्यों ना हो? लालन - पालन की तुलना में मैंने पत्रकारिता में अधिक परिश्रम किया था। मुझे इसमें अधिक आनंद आता था और यह निर्णय मैंने लिया था, शायद जानबूझकर नहीं, कि मैं पहले मैं एक पत्रकार बनूँगा और उसके बाद में पिता बनूँगा। लेकिन अब इससे बचना संभव नहीं था।

आजकल पत्रकारिता में, यदि किसी छपी हुई कहानी में कोई त्रुटि रह जाती हैं, तो हम ऑनलाइन संस्करण को संपादित करते हैं और संपादक की टिपण्णी में बताते हैं कि हमने उस त्रुटि को ठीक कर दिया। यदा कदा, हम माफ़ी शब्द भी जोड़ देते हैं। लेकिन जिंदगी तो किसी डिजिटल वेबसाइट की अपेक्षा एक छपे अखबार की तरह अधिक है। हमारे जीवन का ऐसा कोई संस्करण नहीं है जहाँ जा कर हम अपनी गलतियों को सहजता से ठीक कर सकें।

लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि हम उन गलतियों को ठीक नहीं कर सकते। परन्तु इसके लिए बहुत अधिक काम करना पड़ता है - और हां, कभी कभार माफ़ी भी। यह विचार अक्सर मेरे मन में आता था जब मैंने माटेओ के साथ एक साल बिताया, क्योंकि उसे किशोरावस्था में आ रही कठिनाइयों और व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना पड़ा था।

माटेओ सीखने की गंभीर अक्षमताओं से जूझ रहा है जो शिक्षा को अत्यधिक चुनौतीपूर्ण बना देता है। वह धाराप्रवाह बात तो कर सकता है लेकिन बुनियादी अंकगणित पर अटक जाता है। उसके विकास सम्बन्धी अन्य कई मुद्दे हाई स्कूल के सामाजिक पक्ष को एक असंभव पहेली बना देते हैं।

इन चुनौतियों में टॉरेट सिंड्रोम भी शामिल है, टॉरेट सिंड्रोम तंत्रिकाओं से जुड़ा रोग है, जिसमें मांसपेशियों में समय-समय पर टिक्स होते हैं। टिक्स का अर्थ है अचानक संकुचन या सिकुड़न होना, इस बीमारी में शरीर की तंत्र-तंत्रिकाएं ठीक से काम नहीं करती, इस कारण पीड़ित व्यक्ति अजीब हरकते करने लगता है. जैसे अचानक आवाजें निकालना, हिचकी लेना, शब्दों को दोहराना, बार-बार सूंघना, पलके झपकाना और होंठों को हिलाना आदि।

माटेओ को टॉरेट का दौरा आता जाता रहता है। वह उन दिनों खुश रहता था जब कुछ छोटी मोटी ऐसी घटनाएं होती हैं जिन पर ध्यान नहीं जाता था हालांकि पूर्ण शान्ति तो कभी भी नहीं होती थी, लेकिन थोड़ी देर के लिए ही सही, उन दिनों अपेक्षाकृत जो शांति अवतरित होती वह नीरव जंगल में टहलने के समकक्ष होती है।

हर माँ बाप जो इन तकलीफों से जूझ रहे बच्चे की देखभाल करते हैं, वो जानते हैं कि वो अच्छे दिन मिले जुले विचार लेकर आते हैं: राहत, निश्चित रूप से और एक उम्मीद, जो करीब करीब भ्रामक ही होती है, कि सबसे बुरा वक्त बीत चुका है। अधिकतर समय आपको आश्चर्य होता है कि आपने

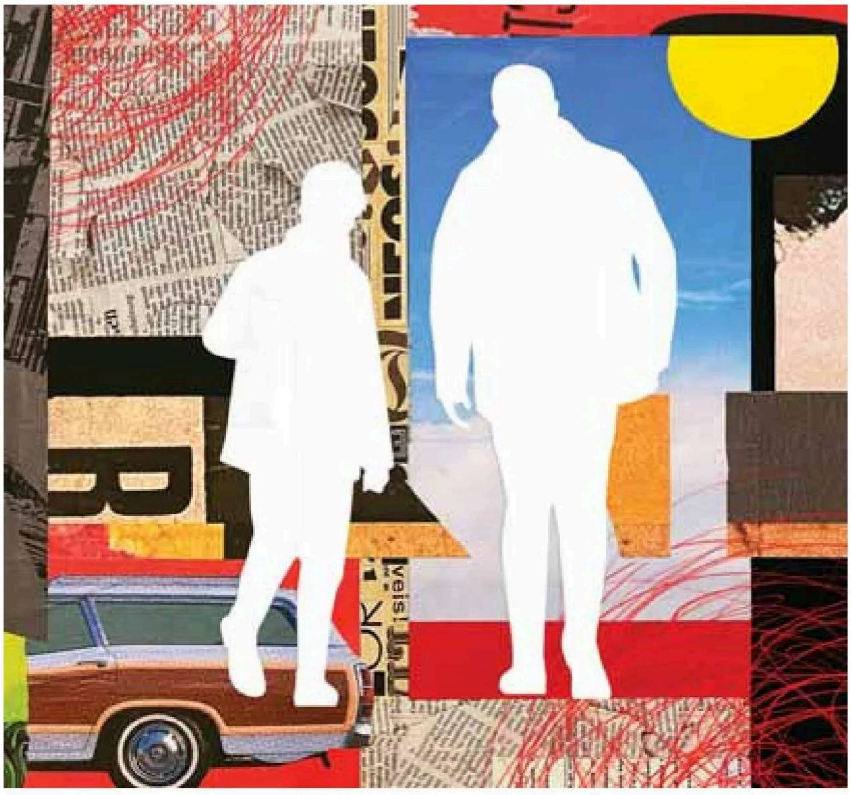

चित्रण: टेलर कैलेरी

सही क्या किया - और अच्छा समय कितने दिन और टिकेगा।

बुरे वक्त में, जब माटेओ का टॉरेंट लगातार बना रहता है, एक तनावपूर्ण फिल्म की तरह जो आपके दिमाग में घर कर लेती है और आपका रक्तचाप बढ़ाती है। सबसे खराब स्थिति में - और हमारे प्रिय माटेओ के लिए सबसे निराशाजनक और थका देने वाला - वह गालियां बड़बड़ाता रहता है, अभद्र शब्द और यहां तक कि नस्लीय और जातीय गालियां देता रहता है। आपका दिल टूट जाता है।

फिर भी माटेओ की सभी कमज़ोरियों के बावजूद, हर व्यक्ति उसकी तारीफ़ करता है। लोग अक्सर मुझसे कहते हैं कि आज तक जितने भी बच्चों से वो मिले हैं माटेओ उन सबसे प्यारे बच्चों में से एक है। मैं अपने मित्रों से कहता हूं कि शायद दो या तीन बार ही माटेओ कभी चिड़चिड़ाते हुए सो के उठा हो या ''गुड मॉर्निंग'' कहे बिना उठा हो (और वह एक किशोर है!)। वह उत्साही, जिज्ञासु और ध्यान रखने वाला है - और, साहसी है, हार मानने वालों में नहीं हैं -अभी तक तो।

एक रात की बात है, एक लम्बे, थकाऊ दिन के बाद, एक तो हाई स्कूल के छात्र होने के नाते और दुसरे अपने टॉरेंट लक्षणों से जूझने के बाद माटेओ अपने कमरे में अकेले बैठा, उस रिकॉर्ड संग्रह को देख रहा था जो उसे मुझसे विरासत में मिला था। उसके भीतर तूफ़ान उमड़ रहा था और उसकी तेज़ घरघराहट हमारे ऊंची छत वाले कॉन्डोमिनियम में आराम से सुनाई पड़ रही थी । यह पूछने पर कि क्या वह अपने टॉरेंट को नियंत्रित करने के लिए बनाई गई सांस लेने की तकनीक का प्रयोग कर रहा है, माटेओ ने जवाब दिया, ''कम से कम मैं अपशब्द तो नहीं बोल रहा।''

ठीक है बेटा, आओ इस नई लड़ाई को भी जीतते हैं।

क्या बुरे सितारे भी आपस में मिल सकते हैं? मिल सकते हैं, है ना?

क्योंकि उधर एक पत्रकार के रूप में मेरी नौकरी ख़त्म हो रही थी, इधर माटेओ की तकलीफ बढ़ती जा रही थी। महामारी के दौरान कई बच्चों के साथ ऐसा हुआ था, विशेष रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों और बाहरी मानसिक स्वास्थ्य सहायता पर निर्भर बच्चों के लिए, माटेओ के लिए दूरस्थ शिक्षा का कोई मतलब नहीं था। उसका मन पढ़ाई से हट चुका था, लेकिन उससे भी ज्यादा चिंता की बात थी कि वह और अधिक बेचैन और अपरिहार्य हो गया था। उसके इलाज में रुकावट आ गई थी और उसके टॉरेंट ने गति पकड़ ली थी। मेरे लिए उसके पालन-पोषण का बस एक ही उद्देश्य रह गया था : चीजों पर पर्दा डालो, उन्हें ढके रखो।

कुछ करना ज़रूरी हो गया था। मैंने निश्चय किया कि, कम से कम, मैं 2021-22 के स्कूली वर्ष की पहली तिमाही का हर दिन माटेओ के साथ बिताऊंगा और उसे ठीक करने की कोशिश करूंगा। हमने उसका दाखिला *शिकागो बिल्ड्स* नामक एक शानदार व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में करा दिया और ये उसे काफी पसंद आया। लेकिन माटेओ की ज़रूरतों और परिस्थिति के अनुसार, उसे कार्यक्रम में पहुँचने के लिए रोज वाहन की ज़रुरत पड़ती थी।

माटेओ सीखने की गंभीर अक्षमताओं से जूझ रहा है जो शिक्षा को अत्यधिक चुनौतीपूर्ण बना देता है। वह धाराप्रवाह बात तो कर सकता है लेकिन बुनियादी अंकगणित पर अटक जाता है। उसके विकास सम्बन्धी अन्य कई मुद्दे हाई स्कूल के सामाजिक पक्ष को एक असंभव पहेली बना देते हैं।

ख़ुशी ख़ुशी मैंने ड्राइवर की भूमिका निभाई और माटेओ के साथ की गई वो ड्राइव तो एक तरह से वरदान सिद्ध हुई। अपने काम और उसके पालन-पोषण, दोनों को संयोजित करने की पूर्व की गई कोशिशों के विपरीत - कार के स्पीकर पर व्याकुल कांफ्रेंस कॉल, रेड लाइट पर खड़े हुए संदेशों पर फटाफट नज़र डालना, क्लिनिक की लॉबी, पार्किंग स्थल और शोर भरे कैफे से भेजे गए ईमेल - यह नई दिनचर्या अधिक केंद्रित थी। दैनिक आवागमन ने हमारे रिश्ते पर एक नई व्यवस्था थोप दी थी ; हम दोनों की उम्मीदें स्पष्ट हो गईं। होमवर्क पर गौर करने, परेशान करने वाले मुद्दों पर चर्चा करने के बजाये हमारे हंसी मजाक, सप्ताहांत की योजना बनाने के मौके सामने आए। माटेओ के लिए, यह पूरी तरह से पिता के साथ रहने का, उसकी मनगढ़ंत काल्पनिक बातों में शामिल होने का, उसके भय को दूर करने का एक बेहतरीन अवसर था।

या हम केवल उन कारों की तरफ इशारा करते जिन्हें हम खरीदना चाहते थे और - माटओ का पसंदीदा शगल - जो कुछ भी हमारे दिमाग में आए उसके बारे में चर्चा करें। हम एक-दूसरे के मूक दर्शक थे।

हाल ही में मेरे एक दोस्त ने मुझे अपने किशोर बेटे के साथ हुई अनबन के बारे में बताया था। ''हमने उसे खो दिया था,'' मेरे दोस्त ने मुझसे कहा। ''वह एक तरह से घर छोड़ चुका था।'' तभी मेरे मित्र और उसकी पत्नी को एक रास्ता मिल गया। वे लंबी ड्राइव पर जाने लगे और कार में बंद, टायरों से उपजे सन्नाटे और लम्बी दूरी की वजह से (शायद) लड़के ने खुल कर बताया कि उसकी परेशानी क्या थी।

जब मैं माटेओ के साथ आता जाता था तो मैंने उस कहानी के बारे में काफी सोचा। हमारी सफलताएं फिल्मों की तरह ज़रा भी नहीं थीं : कोई गर्मजोशी भरा आलिंगन नहीं, नाही खुशी के कोई आंसू। लेकिन मेरा इनाम तो इससे कहीं बड़ा था: माटेओ के दिल और दिमाग में रह - रह कर प्रकट होने वाली वाली अंतर्दृष्टि, वो अंतर्दृष्टि जिसने मुझे एक अच्छा पिता बनने में मदद की है।

मुझे पूरा विश्वास है कि अगर मैं कार में सचेत रहते हुए वहां पूरी तरह मौजूद नहीं रहता तो मुझे ये अंतर्ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता था। हममें से अधिकाँश लोगों की तरह, मैंने भी पिछले कुछ वर्षों में एक साथ कई काम करना सीख लिया है। लेकिन मैं मल्टीथिंक नहीं कर सकता यानि कई बातें एक साथ नहीं सोच सकता - और, इसका एहसास मुझे अब हुआ है, कभी भी नहीं कर सकता था। माटेओ के सानिध्य ने इस बार मुझे सिखाया कि मैं जो भी सोचता हूँ हूं वास्तव में उस सोच का महत्व क्या है।

और भी अंतर्ज्ञान मिला था। मैंने सीखा कि लालन -पालन का कार्य धैर्य की परीक्षा होती है। हाँ, आपको अपने बच्चों के साथ धैर्य से रहना सीखना चाहिए, लेकिन इसके साथ साथ अन्य बच्चों के माता-पिता और दादा-दादी के साथ भी धैर्य रखना चाहिए; इन बच्चों की देखभाल करने वालों और शिक्षकों के साथ भी धैर्य से पेश आना ; और, विशेष रूप से वो माता-पिता जिनके बच्चों की ज़रूरतें शारीरिक,

मानसिक या भावनात्मक स्तर की हैं, स्वास्थ्य देखभाल करने वालों के साथ विशेष धैर्य रखें।

और हाँ, स्वयं के साथ शांत रहना सीखें।

अपनी नौकरी छोड़ने के बाद, मुझे ये अनुभव हुआ कि मैं अपना लगभग सारा धैर्य काम पर ही खर्च कर देता हूँ। मैं अपने सहकर्मियों और अपने कर्मचारियों के साथ-साथ पत्रकारिता के संस्थान और मिशन को वह ऊर्जा और धैर्य दे रहा था जबकि घर पर बहुत कम खर्च कर रहा था। हममें से किसी के पास भी असीमित धैर्य की आपूर्ति नहीं है। और मैं अपना धैर्य ग़लत जगह ख़र्च कर रहा था।

जब मैंने माटेओ के साथ अधिक समय बिताया तो मुझे एहसास हुआ कि माता-पिता बनने के तरीके के बारे में बहुत सारे पाठ जिनके बारे में मैंने पहले पढ़ा था या अध्ययन किया था या जिनमें प्रशिक्षण भी लिया था, वे दृष्टिकोण जो कुल मिलाकर मेरे लिए काम नहीं करते थे, वो सिर्फ ठोस सलाह से भरे हुए थे। मैं उन्हें अमल करने के लिए अपेक्षित धैर्य जुटाने में असफल रहा था।

फिर, उस सारे ज्ञानवर्धन के बावजूद, मैं यहां किसी चमत्कार की या किसी हृदयस्पर्शी फिल्म के सुखद अंत जैसी रिपोर्ट नहीं लिख सकता। लेकिन मुझे पालन-पोषण के कुछ नए तरीके आजमाने के फायदे का ज़रूर पता चला था।अब माटेओ के साथ मेरा रिश्ता हम दोनों की तरफ से अधिक स्वस्थ, अधिक सकारात्मक, अधिक सहयोगी है। एक वरदान।

माटेओ ने और मैंने अपने करियर में इस बदलाव का पूरा लाभ उठाया है। उसने और मैंने एक साथ हमेशा कई प्रोजेक्ट किए हैं। मेरे अंदर औजारों से काम करने की क्षमता कम है, लेकिन मैं जिद कर उसे पूरा कर के रहता हूं। काम के बाद मिलने वाले समय में और *शिकागो बिल्ड्स* के माध्यम से माटेओ जो कौशल सीख रहा है, उस की मदद से हम अपनी 2000 होंडा को ठीक करने और हमारे विला के कुछ काम हैसे मरम्मत, पुन: पेंटिंग, पुनर्नवीनीकरण नवीनीकरण जैसे काम कर लेते हैं। मेरे परिश्रम को माटेओ के उत्साह के साथ जोड़ दें, और हम अधिकांश कार्य केवल DIY की मामूली सहायता से आसानी से कर लेते हैं।

इस बीच, मेरी मानसिक स्थिति ने मुझे इन कार्यों को एक यात्राओं के रूप में देखना सिखाया है, उसका

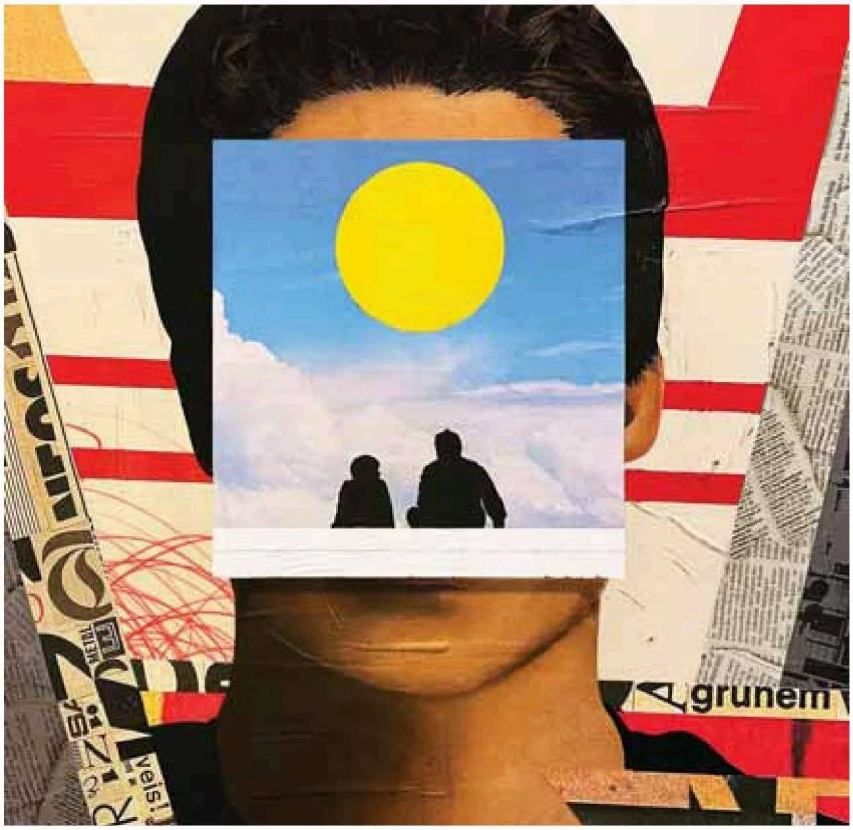

परिणाम यात्रा का केवल एक भाग है। माटेओ ने संयत होना और अधिक व्यवस्थित होना सीख लिया है। वह अब कम तोड़ फोड़ करता है, जोकि गंभीर एडीएचडी बीमारी वाले बच्चों के लिए एक आम समस्या है। वह परियोजनाओं के आरंभ से अंत तक संपूर्ण भागों की जिम्मेदारी उठाने में सक्षम हो गया है।

इन परियोजनाओं में वर्णित सूची को सिर्फ एक सरसरी तौर पर देखने के बजाय अब मैं इन्हें सीखने के अवसरों के रूप में लेता हूँ, इस ने अपने कार्यस्थल पर मुझे परिणाम-उन्मुख नेतृत्व शैली का पुनर्मूल्यांकन करने पर विवश कर दिया है। अब मुझे एहसास हो गया है कि उत्कृष्टता पर जोर देना, मेरी ताकत नहीं, कमजोरी जैसी है। परिणामों को प्राथमिकता देने में, अब मुझे एहसास हो गया है कि मैंने अपने और दूसरों के लिए सीखने, रचनात्मकता और पेशेवर विकास के मार्ग बंद कर दिए हैं।

मेरा ये मतलब यह नहीं हैं कि व्यक्ति को अपनी नौकरी छोड़ देनी चाहिए (या छोड़ी जा सकती है) ताकि वे आदर्श माता-पिता बन सकें। इससे अधिक क्या कहूँ कि एक अच्छा पिता बनने के लिए मुझे अपनी नौकरी छोड़ने की आवश्यकता नहीं थी। मुझे अफ़सोस है कि ये सब जानने के लिए मुझे इतनी अधिक मेहनत करनी पड़ी। जैसा कि मैंने पहले कहा था, लोग पहले भी ये चीजें बताते थे पर मैं सुनता ही नहीं था।

लेकिन अब जब मैं पूरी तरह से काम पर लौट आया हूं, तो मैंने यहाँ सीखे सबक सबको बताने का संकल्प लिया है कि मैं घर और नौकरी, दोनों काम कैसे संभालता हूँ। हो सकता है कि आख़िरकार यहाँ एक नीरस हो: मैंने अपने बेटे की ज़िंदगी बेहतर करने के लिए अपने काम से एक साल की छुट्टी ले ली। लेकिन वास्तव में देखा जाए तो अपनेआप को समझने में उसने मेरी मदद की है। या कुछ ऐसा ही। मैं अभी भी इस पर काम कर रहा हूं - और मैंने इसकी पुनरावृति के लिए समय निकाल लिया है।

कॉलिन मैकमोहन शिकागो ट्रिब्यून के पूर्व प्रधान संपादक और ट्रिब्यून पब्लिशिंग के मुख्य सामग्री अधिकारी, नेशन मीडिया ग्रुप स्टार्टअप में मुख्य परिचालन अधिकारी हैं - और उतने ही हर्षित और संतुष्ट पिता।

©Rotary

आर्च क्लुम्फ सोसायटी 2022-23 सम्मान

आर्च क्लुम्फ सोसाइटी में 50 से अधिक देशों के समर्थक शामिल हैं। भारत से यहां सूचीबद्ध सदस्यों को पिछले रोटरी वर्ष में एक औपचारिक प्रेरण समारोह के माध्यम से मान्यता दी गई थी।

प्लैटिनम ट्रस्टीज़ सर्कल
($2,500,000-4,999,999)

रविशंकर और पाओला डकोजू,
रोटरी क्लब बैंगलोर

फाउंडेशन सर्कल
($1,000,000-2,499,999)

मनोज इसरानी, रोटरी क्लब बॉम्बे

चेयर सर्कल
($500,000-999,999)

राजेंद्र और शुभलक्ष्मी छापवाले,
रोटरी क्लब मुंबई नॉर्थ आइलैंड

ताइज़ून और एडिथ खोराकीवाला,
रोटरी क्लब बॉम्बे वर्ली

सैफ और रौज़त कुरैशी,
रोटरी क्लब बॉम्बे पियर

दिलीप और भाविनी शाह,
रोटरी क्लब बॉम्बे हैंगिंग गार्डन

ट्रस्टी सर्कल
($250,000-499,999)

ललित और रिचा चड्ढा,
रोटरी क्लब मुंबई सायन

संजीवनी और गिरीश गुणे,
रोटरी क्लब पनवेल सेंट्रल

दीपक और रीना गुप्ता,
रोटरी क्लब गाजियाबाद, रोटरी क्लब गाजियाबाद सफायर

अशोक और सुशीला महनसरिया

संजय और मनीषा मालवीय,
रोटरी क्लब जोधपुर इन्फिनिटी,
रोटरी क्लब जोधपुर शिवांगी

अनिल और अमिता मोहिन्द्रू,
रोटरी क्लब दिल्ली सिटी

संजीव और किरण मोहिन्द्रू,
रोटरी क्लब दिल्ली अशोका

मनोज और स्वप्ना मुरारका,
रोटरी क्लब बॉम्बे

दिलीप और शालिनी पीरामल,
रोटरी क्लब बॉम्बे

शोभना और रवि रमन,
रोटरी क्लब मद्रास कोरोमंडल

विजया भारती और एस रंगराजन,
रोटरी क्लब मद्रास

नीरव और देविना शाह,
रोटरी क्लब बॉम्बे, रोटरी क्लब कीन्स नेकलेस

राजशेखर श्रीनिवासन और शांति,
रोटरी क्लब कोयंबटूर मिड-टाउन

राजू और विद्या सुब्रमण्यम,
रोटरी क्लब देवनार

सितंबर 2023 तक मंडल टीआरएफ योगदान

(अमेरिकी डॉलर में)

मंडल संख्या	एनुअल फण्ड	पोलियो प्लस फंड	एंडोमेंट फण्ड	अन्य निधि	कुल योगदान
India					
2981	12,204	405	1,000	0	13,609
2982	18,204	0	7,085	4,488	29,778
3000	42,686	100	0	1,918	44,704
3011	71,216	5,745	25,989	113,773	216,724
3012	7,105	0	0	1,720	8,824
3020	37,974	2,801	0	20,500	61,275
3030	16,763	98	0	138,163	155,024
3040	1,065	73	0	0	1,137
3053	8,495	0	0	12,439	20,934
3055	14,491	33	30	0	14,554
3056	13,302	100	0	0	13,402
3060	43,511	9,300	100	79,077	131,988
3070	135	0	0	0	135
3080	19,770	6,563	0	1,500	27,833
3090	27,186	713	0	5,121	33,020
3100	33,918	0	0	0	33,918
3110	24	0	0	4,000	4,024
3120	4,729	34	0	0	4,763
3131	154,390	559	12,098	20,387	187,433
3132	46,580	2,383	0	8,168	57,131
3141	164,645	3,444	34,012	281,968	484,068
3142	214,589	4,433	6,500	0	225,521
3150	14,646	30,416	40,170	72,365	157,598
3160	6,389	0	0	0	6,389
3170	24,440	19,691	1,000	49,217	94,349
3181	16,535	270	0	24	16,829
3182	2,345	12	0	0	2,357
3191	22,894	3,816	60,976	73,464	161,149
3192	19,894	1,478	0	2,100	23,472
3201	31,085	23,498	3,940	879,225	937,748
3203	6,135	605	1,220	8,725	16,685
3204	5,215	1,486	0	2,962	9,663
3211	2,211	1,000	0	40,648	43,859
3212	27,784	4,938	0	12,703	45,425
3231	1,417	675	0	0	2,092
3232	19,713	2,444	8,300	495,484	525,942
3240	24,341	4,531	0	1,771	30,643
3250	9,407	1,148	26	2,992	13,573
3261	9,037	0	0	0	9,037
3262	4,118	525	0	0	4,642
3291	41,380	0	24,390	1,050	66,820
India Total	**1,241,968**	**133,315**	**226,836**	**2,335,952**	**3,938,072**
3220 **Sri Lanka**	22,679	1,135	0	573	24,388
3271 **Pakistan**	4,688	31,000	0	7,245	42,933
3272 **Pakistan**	1,342	385	0	25	1,752
3281 **Bangladesh**	5,600	1,728	2,000	21,588	30,916
3282 **Bangladesh**	15,313	100	0	25	15,438
3292 **Nepal**	21,658	2,230	0	35,858	59,746

वार्षिक कोष (AF) में SHARE, फोकस के क्षेत्र, विश्व कोष और आपदा प्रतिक्रिया शामिल हैं।
स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब कट्टुमन्नारकोइल - रो ई मंडल 2981

कुंजामेडु मिडिल स्कूल में मिड डे मील तैयार करने के लिए एक रसोई तैयार की गई और मुट्टम ग्राम में 1.5 एकड़ से अधिक जमीन पर एक माइक्रोफॉरेस्ट परियोजना शुरू की गई।

रोटरी क्लब जयपुर गुरुकुल - रो ई मंडल 3056

क्लब जयपुर में अपना घर आश्रम की विभिन्न शाखाओं में स्वास्थ्यवर्धक भोजन प्रायोजित कर रहा है। प्रति एक आश्रम में 50 निराश्रितों और अनाथ रेहते हैं।

रोटरी क्लब पुदुकोट्टई सिटी - रो ई मंडल 3000

रानियार गवर्नमेंट गर्ल्स हायर सेकंडरी स्कूल में आयोजित एक व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम में 100 से अधिक विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भाग लिया।

रोटरी क्लब सूरत ईस्ट - रो ई मंडल 3060

35 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं के लिए आयोजित एक कैंसर जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत एक मैमोग्राफी बस ने स्तन और सर्विकल कैंसर के लिए 100 महिलाओं की जांच की।

रोटरी क्लब दिल्ली अनंता - रो ई मंडल 3012

रोटरी अनंता चैरिटेबल अस्पताल और एल्कॉन इंटरनेशनल स्कूल में विद्यार्थियों को 120 से अधिक ई-लर्निंग टैबलेट वितरित किए गए।

रो ई मंडल 3090

डीजी घनश्याम कांसल और डीजीई संदीप चौहान ने रो ई मंडल 3011 टीम की मदद से एक अंगदान अभियान की शुरुआत की।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब मेरठ उमंग - रो ई मंडल 3100

सर्विकल कैंसर से बचने हेतु टीकाकरण के तीसरे चरण में 75 लड़कियों को पहली खुराक दी गई और इसका लक्ष्य अगले तीन वर्षों में 1,000 लड़कियों को टीका लगाने का है।

रोटरी क्लब पातालगंगा - रो ई मंडल 3131

एटॉस के CSR निधि के साथ-साथ रोटरी क्लब न्यू कल्याण के समर्थन से संयुक्त रूप से आयोजित एक कृत्रिम अंग शिविर में 70 लाभार्थियों को कृत्रिम अंग और एलएन-4 हाथ (₹7 लाख) दिए गए।

रोटरी क्लब आगरा नियो - रो ई मंडल 3110

रोटरी क्लब आगरा ग्रेटर, रोटरी क्लब विशाल, रोटरी क्लब सफायर और रोटरी क्लब नॉर्थईस्ट ने दो चिकित्सा शिविरों में सह-भागीदारी की। इसमें 700 से अधिक मरीजों की जांच की गई।

रोटरी क्लब मीरा रोड - रो ई मंडल 3141

डीजी संदीप अग्रवाल की मौजूदगी में एक बास्केटबॉल खिलाड़ी, पैरा एथलीट गीता चौहान को एक विशेष व्हीलचेयर (₹3 लाख) भेंट की गई।

रोटरी क्लब कुशीनगर - मंडल 3120

गुरुग्राम के मेदांता अस्पताल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक विशाल स्वास्थ्य शिविर में 980 से अधिक रोगियों की जांच की गई।

रोटरी क्लब खम्मम - रो ई मंडल 3150

खम्मम के महापौर पुनुकोल्लू नीरजा की उपस्थिति में क्लब हॉल के परिसर में लगभग 140 पौधे लगाए गए।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब हम्पी पर्ल्स - रो ई मंडल 3160

होसपेट के गवर्नमेंट गर्ल्स हाई स्कूल में 250 विद्यार्थियों को स्कूल बैग वितरित किए गए।

रोटरी क्लब मुदिगेरे - रो ई मंडल 3182

राजकीय उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए एम जी एम अस्पताल में मानसिक स्वास्थ्य परामर्श शिविर का आयोजन किया गया।

रोटरी क्लब बर्देज़ कोस्टल - रो ई मंडल 3170

पोरवोरिम के संत गाडगेबाबा हॉल में आयोजित एक इंटरस्कूल चित्रकला प्रतियोगिता में 650 विद्यार्थियों ने अपने कौशल का प्रदर्शन किया।

रोटरी क्लब रामनगरा - रो ई मंडल 3191

घोसिया कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के सामने 30 साल पुराने एक रोटरी बस शेल्टर को रोटरेक्टरों की मदद से ₹25,000 की लागत के साथ पुनर्निर्मित किया गया।

रोटरी क्लब पुत्तूर - रो ई मंडल 3181

शिक्षकों के वार्षिक वेतन के लिए DKGP उच्च प्राथमिक विद्यालय, ओजला को ₹1.5 लाख का एक चेक प्रदान किया गया।

रोटरी क्लब कोयम्बटूर वडावल्ली - रो ई मंडल 3201

रोटरी कम्युनिटी वीक के उपलक्ष्य में MSSDHS स्कूल में लायंस क्लब और इंटरेक्टरों के साथ एक वृक्षारोपण अभियान आयोजित किया गया।

मंडल गतिविधियाँ

रोटरी क्लब मंजेरी - रो ई मंडल 3204

डीजी सेतु शिव शंकर ने साल की पहली बड़ी परियोजना के रूप में कोरमबयिल अस्पताल को एक डायलिसिस मशीन (₹8 लाख) दान की।

रोटरी क्लब चेन्नई मेट्रोज़ोन - रो ई मंडल 3232

एक नेत्र शिविर में 130 से अधिक सामुदायिक सहायकों की जांच की गई। उमा आई क्लिनिक सर्जरी साझेदार है। जो लाभार्थियों को छूट के साथ चश्मे प्रदान किए गए।

रोटरी क्लब कळ्ळाकुट्टम - रो ई मंडल 3211

एक कार्यक्रम में स्थानीय विधायक कडकमपल्ली सुरेंद्रन की उपस्थिति में शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को ₹1 लाख की पांच तिपहिया साइकिलें वितरित की गईं।

रोटरी क्लब कराला वेली जलपाईगुड़ी - रो ई मंडल 3240

एक श्रवण यंत्र वितरण शिविर ने वंचित परिवारों के बुजुर्गों को लाभान्वित किया।

रोटरी क्लब वनियाम्बडी - रो ई मंडल 3231

सूक्ष्म और लघु उद्योग संघ, तिरुपत्तूर के साथ संयुक्त रूप से आयोजित एक कार्यशाला में चार सिलाई मशीनें (₹18,640) दान की गईं।

रोटरी क्लब केंदुझर ग्रीन - रो ई मंडल 3262

सरस्वती शिशु विद्या मंदिर में 1,870 से अधिक विद्यार्थियों और 62 कर्मचारियों को लिम्फैटिक फाइलेरिया रोग के लिए दवाएं दी गईं।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

टीसीए श्रीनिवासा
राघवन

हवाई अड्डों पर व्हीलचेयर का चलन

हम भारत के लोग भी कितने विचित्र हैं और ज़्यादातर समय हमें यह मालूम ही नहीं चलता कि हम कितने विचित्र हैं। उदाहरण के लिए, आपने देखा होगा कि भारतीय हवाई अड्डों पर पूरी तरह से तंदरुस्त, कितने व्यक्ति व्हीलचेयर की मांग करते हैं? मेरी एक चचेरी बहन है, उम्र साठ के आसपास है और रोज़ पांच किलोमीटर पैदल चलती है, चाहे बारिश हो या धूप। लेकिन जब उसे फ्लाइट पकड़नी होती है, तो वह अचानक हांफने लगती है ,लंगड़ाते हुए, उसकी सांस फूलने लगती है और बेहोश होती लगती है। उसका टिकट बेटा बुक कराता है लेकिन व्हीलचेयर बुक करने से मना कर देता है। लेकिन वह बहुत चतुर है और हमेशा एक चेयर कबाड़ ही लेती है।

एक दिन मैंने उससे पूछ ही लिया कि वो ऐसा क्यों करती है? ''क्या तुम जानती नहीं कि ऐसा करके किसी ऐसे व्यक्ति को वंचित कर रही हो हैं जिसे वास्तव में इसकी ज़रुरत हो सकती है?'' मैंने कहा। उसका जवाब, साफ़ था : यह उसकी समस्या नहीं थी, यह समस्या तो हवाई अड्डे की थी। लेकिन मैं भी अड़ा रहा. मैंने उससे पूछा कि वो क्यों चाहती थी कि कोई ऐसा युवक उसके पीछे पड़े और टिप मांगे। उसके जवाब ने मुझे भौंचक्का कर दिया। बोली कि वह कभी किसी को टिप्स देतीं ही नहीं। उसका कहना था कि वो दुबारा तो मिलेगा नहीं इसलिए क्या फर्क पड़ता है। वो रेस्त्रां में भी यही करती है। तर्क के हिसाब से वो बिकुल सही है।

''लेकिन तुम गेट तक पैदल चल कर क्यों नहीं जाती,'' मैंने उससे पूछा जबकि आराम से चल सकती हो। उसका जवाब था कि अपनेआप को हवाईजहाज तक ले जाना ''बोरिंग'' काम था पर व्हीलचेयर के साथ यह ज़िम्मेदारी किसी और कीहो जाती है। ''मैं तो बस बैठ जाती हूं और मजे लेती हूं,'' उसने कहा और इसके आलावा, उतरने के बाद, उसे अपना बैग नहीं उठाना पड़ता। व्हीलचेयर वाला लड़का इसका ध्यान रखता है, बेचारा वो नहीं जानता था कि उसे टिप नहीं मिलेगी। और वह अक्सर ऐसा करती है, साल में करीब 8-10 बार।

यकीनन, ऐसी वो अकेली नहीं है। मैं देख रहा हूं कि कुछ साल पहले व्हीलचेयर ब्रिगेड कैसे प्रति उड़ान एक या दो से बढ़कर अब पांच या छह हो गई है और कभी-कभी इससे भी अधिक हो जाती है। मुझे इस बात पर गुस्सा आता है कि वैसे इन लोगों को आप आराम से शौचालय की ओर जाते हुए देख सकते हैं क्योंकि वहां अंदर वे परिचारक नहीं चाहते। वास्तव में, मैंने उनमें से कइयों को तो बोर्डिंग गेट पर परिचारकों को छुट्टी देते हुए और विमान में अपनी सीटों तक सामान्य रूप से चल कर जाते हुए भी देखा है। बल्कि, मैंने एक बार ऐसे दो लोगों को देखा है, जाहिर है दोनों दोस्त थे, दुनिया की परवाह किए बिना, एक रेस्तरां में चलते हुए, खाना खाया, और वापस अपनी व्हीलचेयर पर लौट आये जबकि परिचारक और व्हीलचेयर दोनों लगभग आधे घंटे इंतजार करते रहे।

मैं देख रहा हूं कि कुछ साल पहले व्हीलचेयर ब्रिगेड कैसे प्रति उड़ान एक या दो से बढ़कर अब पांच या छह हो गई है और कभी-कभी इससे भी अधिक हो जाती है।

इसके ठीक विपरीत, विदेशी हवाई अड्डों पर आपको व्हीलचेयर शायद ही नज़र आये। मैं अपने अपने पोते-पोतियों से मिलने के लिए साल में एक बार ज़रूर विदेश यात्रा करता हूं और दुबई के अलावा कहीं भी व्हीलचेयर नहीं देखी, जहां उनकी मांग की गई थी... अंदाजा लगाइए किन्होंने मांग की होगी? हाँ, वे भारतीय जो भारत से बाहर की यात्रा कर रहे हैं। वापसी उड़ानों में ऐसी कोई सुविधा नहीं हैं। अब इन्हें कौन समझाए?

विदेशों की बात करें तो, वहां 90 साल के पुरुष और महिलाएं भी, यदि संभव हो तो, पैदल चलकर ही यह दूरी तय करते हैं। हालाँकि, भारतीयों को भारत से बाहर जाने पर कोई परवाह नहीं होती। इसके पीछे तर्क यह है कि यदि कोई चीज इस्तेमाल के लिए राखी है, तो इस्तेमाल चाहिए। एक तरह से यह वही तर्क है जो भारतीय लोग रेस्तरां के लिए भी कहते हैं। यदि मुफ़्त मिल रहा है, तो दबा कर खायें। मैंने एक बार एक आदमी को केचप की पूरी बोतल ख़त्म करते हुए देखा था। मेरी नज़र में, फ्रीबूटिंग के प्रति उनका समर्पण देखना खासा दिलचस्प था क्योंकि उन्होंने सभी व्यंजनों, यहां तक कि तली हुई मछली में भी सॉस मिलाया था। यही बात सिरके वाले वाले प्याज और माउथ फ्रेशनर के लिए भी लागू होती है, जिसे लोग भोजन के दौरान और बाद में मुट्ठी भर के खाते हैं।

तो यहां एक सुझाव हवाई अड्डों के लिए: व्हीलचेयर के लिए शुल्क लेना शुरू करें - ₹500 ठीक रहेगा। साथ ही ₹200 की अनिवार्य टिप भी। इससे व्हीलचेयर की मांग में भारी गिरावट आना तय है। ■

ADVT.

Rotary

CREATE HOPE in the WORLD

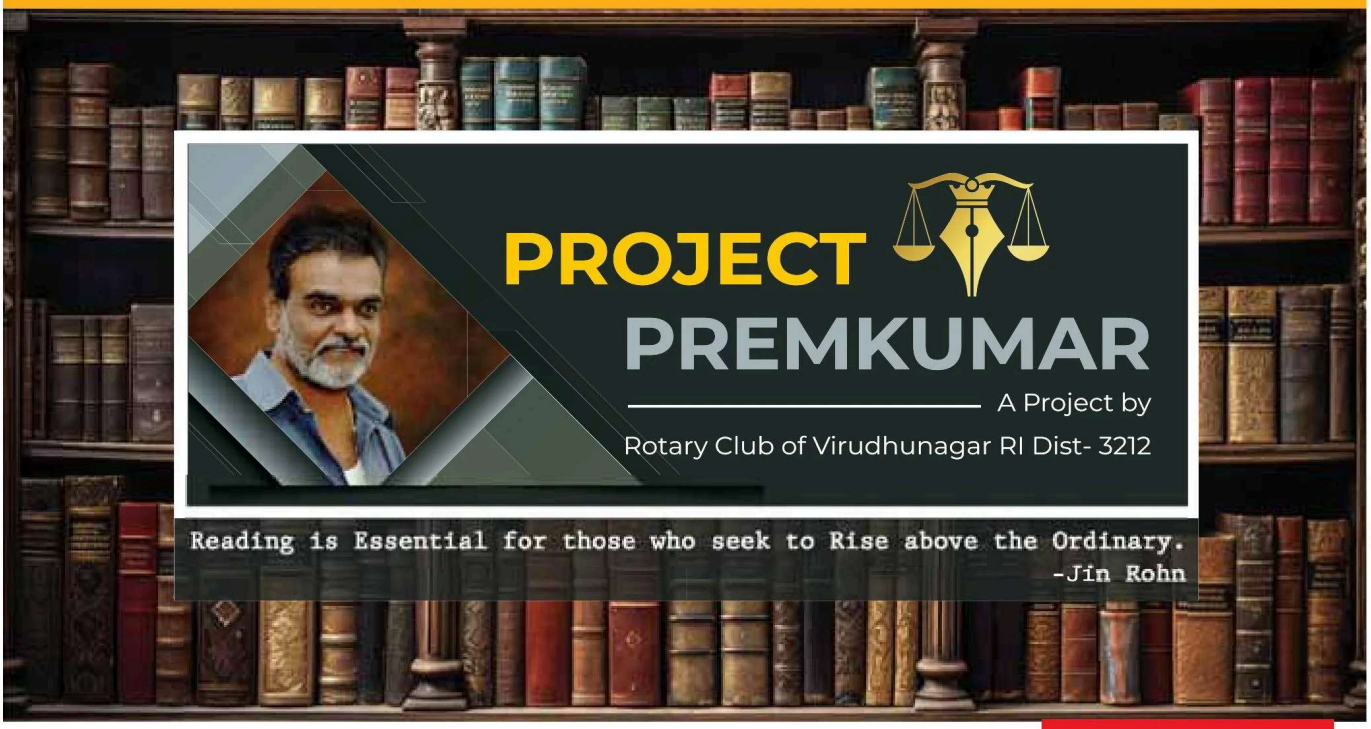

TODAY A READER TOMORROW A LEADER

– Margaret Fuller

Project Premkumar is a remarkable project of RID 3212 which focuses on encouraging the students and enhancing their reading skills while also guiding them with career options. Every single book you read offers you endless opportunities to explore and learn new ideas. **Rtn. S.Nagalingam, IRS (Rtd.),** Founder and Head Coach of Nikhil Foundation, is the key speaker of the programme.

As on
Sep, 2023
No. of Occurrences
33
No. of Beneficiaries
6998

Do you wish to organize "PROJECT PREMKUMAR" in your School / College? We are waiting to partner with you.

CONTACT
Project Chairman
Rtn. S. NAGALINGAM IRS(Rtd.)
90036 59270

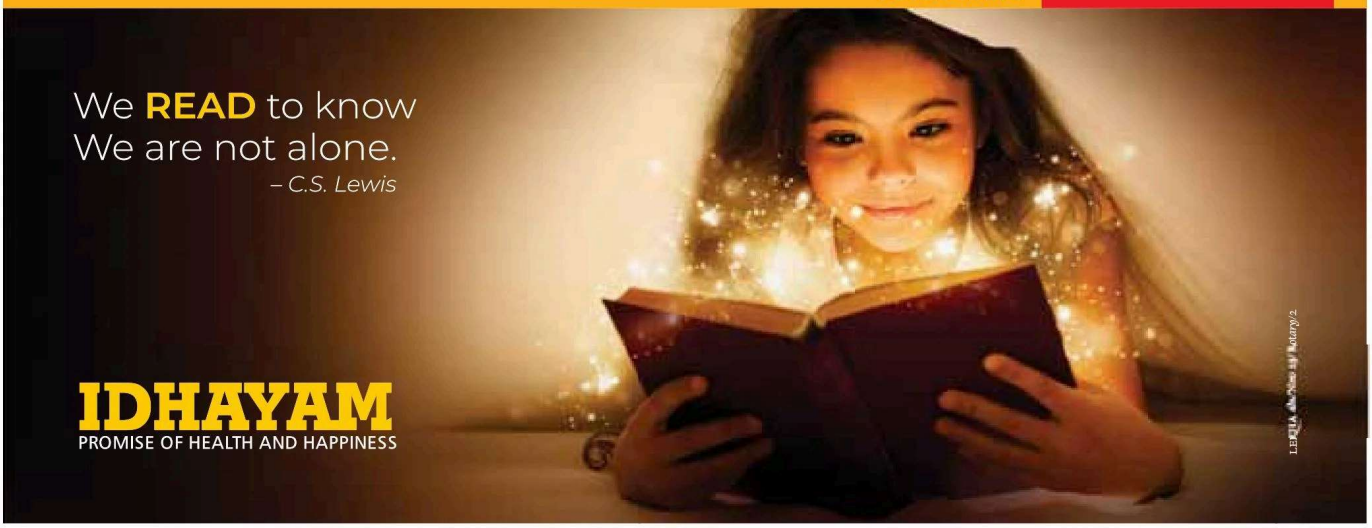

Registered No. TN/CCN/359/2021-2023 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹40
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/21-23
Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month. Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month.

ADVT.